প্রমথতরঙ্গিণী 🗼

शित्यभवंति स्ट्यामानाम

अभी ७

, जीगप्रमान अके निया कर्न्स

সংখাঘিত



ক্লিকাতা

किर श्रेनाबाष्ट्र विख्या २८% न१ छद्दन

विमात्रिक्ष यदम

जिलातन्त्रीमग्र स्थात स्थात्र श्रकालिङ ७ मृजिङ।

ווף אף בין אוף אירי

ভূমিকা।

ততদেশে অনেকেই বছবিধ পূত্রন গল্প সকল বাজালা ভাষার বিচনা করিয়া প্রকাশ করিতেছেন আনিও ভাঁহাদের দৃষ্টান্ডোড়্যায়িক হইয়া এই সামানা ক্ষুদ্র পুস্তক থানি আমার সল্ল বুজান্ড্রায়িক হইয়া এই সামানা ক্ষুদ্র পুস্তক থানি আমার সল্ল বুজান্ড্রায়েক বিচনা করিলাম, ইহা কোন প্রস্তুর কিয়া জন্ম কোন প্রভাব আমার মনোগত সামানা প্রস্তাবটী অতি যাল সহকারে সকলন করিয়া পাঠকবর্গ নহাশ্যদিগের সমীপে প্রকাশ করিতেছি, পাঠক মহাশয়েরা অন্তগ্রহ পূর্বেক এই ক্ষুদ্রে পুষ্তক থানী পাঠ করিলে আমার পরিশ্রেম সফল হইবে যেহেতু আমার প্রস্তুক রচনা বিষয়ে এই প্রথম উদাম, অত্রুব ক্ষুদ্রিয়া পাঠক নহাশ্যদিগের নিকট ক্রিডিভাবে নিবেদন করিতেছি যে ভাঁহালী পরিশ্রম স্বীকার পূর্বেক এই সামানা পুস্তক গানির আন্য অন্যান্থ করিয়া যদি কোন দোশ দেখেন অন্থগ্রহ পূর্বাক ক্ষমাকরিবেন।

প্রতিমটাদ মুখোগাধায়।

বিজ্ঞাপন।

এই প্রমণতর জিণী পুঞ্ক বাহা আমি প্রস্তুত পূর্বক মুদ্ধিত করাইরা রেজিউরা করিলান এই পুস্তক আদি ব্যতীত আন কেহ মুদ্রিত করেন তবে ভিন্তি আমার দাবী অনুবায়ী সরকারে দগুনীর হইবেন।

ब्रिट्थं पि सूर्या भाषात्र ।

भूगी भव।

गदशम वन्सना	14460	* ** **		****	5
न्यी रत्यमा	• • • •	* ****	****	****	, 0
সরস্বতী ধনদনা	****	*****	*****		8
ক্রাম পরিচয়	*****	****	,	*****	. b
উদান্ত রাজার স্থি	ইত .চক্ৰপ	ণি গোস্বামি	র কংখ্যেপর	धन	b
গ্ৰন্থ স্থানা		*****	» (10	***.*	20 %
গ্ৰহারত্ত		*****	*****	*******	
নিৰ্ব্বাহনগৰ্ম বিৰ্ণনা					ે કહ
वांगी हलकेलात स				in such	٠٠২٥
तानी उखक लात अ		बाजा बानीदर	হঁ কথে!পৰ	થન	২৩
কালিকা পুজারম্ভ	1	****		****	र ह
कालिका छव .			***		۵5
রাণী চন্দ্রকলার গং	•		••• 3.4		૭૯
রর ঙ্গিণীর জন্ম				****4	g a
নহারাজা নির্মাহে			*****	*****	85 -
তরজিণীর যন্ত্রীপুজা			••••		88
ভরঙ্গিণীয় আট্কো	ছে •••	*****	44484 .	*******	86
ভরজিণীর অগ্নপ্রাশ	w	*****	** * * #	****	89 (
রাজার প্রতি মহার	াণীর তর্গি	দণীর বিবাহে	র কথা প্রস্ত	াৰ	85
নহারাজ নির্মাহের	রাণীর প্র	ভি উজি	****		Œ
নহারাজের ভরঞ্ি	ার বিবাহে	র পত্র লিখনে	ন অমুম্ভি		¢4
তর্মশণীর বিবাহের	প্রতিজ্ঞাপ	5		F-114	ca 🏅
তর াজ ণীর বিবাহের	পত্ৰ লট্য়	া ভাটের দে	न विद्रमण श	मन .	à M
उत्रमिनीय मत्मह उ	কেঠা ও স	খীগণের জম	# [] +		કર

No. of Street, Assessment	
कंदिन वीत्र शेटली कार्यन बाजा	৬৯
्रष्ट्रति भी ह विश्वास विश्वास । । । । । । । । ।	7.3
क्मम (मन् किर्देश श्रेक श्रेतिकार कार्यमन ···· ···	าษ
दर्भामानीह सन वर्गमा	P8
ংগালাপীর নিকট স্থণলভার গমন	సెకి
গোলাপীর সহিত কর্মলনীর কথোপকথন · · · ·	128
ক্ষালিনী সম্ভিৰ্যাহাবে প্ৰমুখেব নিক্ট গোলাগীৰ গুনুন	500
'প্রামধ্যের সহিদে কা নিনীন কথোপকপন	4
ुर्घरिक नी व क्रिया वर्गा	>> >
্রিশ্রাণ কর্ত্ত্বক পঞ্জিকা 🕠 🕠 🕠	200
প্রমথের পত্র লয়ে তবসি-"ব নিকটে কম্লিনীব গমন	Ř
ভবঙ্গির স্বপ্ন উপাধানে	> b
প্রমথের প্র তর্জিদীর প্রাপ্তি	202
তর্মির কর্ত্তক পত্র	558
छ दक्षि गीव शंत लग्या कथलिमी द्र तमस्य विकास कर है ।	ur
প্রমধ্যে নিকট চগতে কগলিনাব প্রত গ্রেন	: 6
প্রমধিকে নিকট সংগতে কগলিনাৰ প্রতিগণ্যক কমলিনী ও নম্মতাৰাৰ প্রমণেৰ নিকিতে গ ংখাৰ	540 549
কমলিনী ও নংন এবাব প্রমাণের নিকতে গম্পু	340
ক্মলিনী ও নং ন এবি তামাথের নিকতে গ ম্পু ক্মলিনাৰ স্বাহ্বাহাৰ চর্জি ব নিক্ট প্রম্থেব গান্ত্রিজ্বার নাজাবে প্রন্থের উপস্থিত	25.0
ক্ষালিনী ও ন্যুন্তাব্য প্রেম্থের নিক্তে গ ংকা ক্ষালিনার স্থান্বাহার সর্জিশের নিক্ ট প্রম্থে র গান্	500 500 500
কমলিনী ও নান এবাব প্রমাণের নিকতে গ ম্প্রা কমলিনাব সনান বাছিব চর্জিল ব নিকট প্রমথের গান্ত্র তর্জিনার নাল্যবে প্রন্থের উপস্থিত	200 200 200 200
কমলিনী ও নং ন গ্ৰাব প্ৰনাথেব নিকতে গ ছঞ্জ কমলিনাৰ স্বাংকাৰ চাকাৰ চৰ্কাল ব নিকট প্ৰমুখেৰ গান্ত্ৰ ভাৰত ক্ৰিলাৰ নাজাৰে প্ৰনাথেৰ উপস্থিত	54° 50° 50° 50° 54° 54° 54°
কমলিনী ও নং ন গ্ৰাব প্ৰনাথেব নিকতে গছাৰ কমলিনাৰ সনাদ বাছিব চরজিং ব নিকট প্ৰমথেব গান তার্জিগার নাজাবে প্রনাথের উপস্থিত	549 540 505 505 544 545 545
কমলিনী ও নং ন গ্ৰাব প্ৰনাথেব নিকতে গছাৰ কমলিনাৰ সনাদ বাছিব উৱলিং ব নিকট প্ৰমথেব গান তার্ক্তিব উন্ধান ব নিকট প্ৰমথেব গান তার্ক্তিব নাজাবে প্ৰনাথেব উন্ধান কৈ জালিনাৰ মন্দিৰ হুইতে প্ৰমথেৱ গোলাপী ভবনে প্ৰভাগিমন বিপত্নীত স্থাতি প্ৰমথ প্ৰভাগি লগীব বিপ্ৰান	540 500 500 502 592 593 595 585
কমলিনী ও নং ন গ্ৰাব প্ৰনাথেব নিকতে গছাৰ কমলিনাৰ সনাং বাছাৰ চর্জি' ব নিকট প্ৰমথেব গান তর্কিনার নান্দৰে প্ৰনথের উপস্থিত তর্কিনার নান্দৰে প্রনথের উপস্থিত তর্কিনীৰ মন্দিৰ হইতে প্রমথের গোলাপী ভবংন প্রভাগন্ন বিপরীত স্থতি প্রাক্তির গার্ডি অমুঠান তর্কিনীর গার্ডি অমুঠান কম্মিনা ভয়ান্বিত হইখা গোলাপীর নিকটে গানা বাদ্বী চন্দ্রকলা ত্রাল্যীং বিবাহের হথা ভুপভিন্তে কহেন	> 4 ° > 5 ° 0 > 0 7 > 0 7 0 7 0 7
কমলিনী ও নং ন গ্রাব প্রমাণের নিকতে গছাল . কমলিনার সনান বাছোর উর্জিশ ব নিকট প্রমথের গান তর্কিনার নাজারে প্রনথের উপস্থিত ভর্কিনার মালার হইতে প্রমথের গোলাপী ভবনে প্রভাগমন বিপরীত ক্বতি প্রাক্তির গর্ভা ক্রি বিপ্রান ভর্কিনীর গর্ভা অনুষ্ঠান কম্পিনী ভয়াবিত ইইয়া গোলাপীর নিকটে গ্রান ব্রাণী চন্দ্রকলা ভর্কিনা বিবাহের হয়। ভুপতিক্লে কহেন মন্থারাধীর ভ্রকিনীর মন্ধিরে গ্রান	540 500 500 502 592 593 595 585
কমলিনী ও নং ন গ্ৰাব প্ৰনাথেব নিকতে গছাৰ কমলিনাৰ সনাং বাছাৰ চর্জি' ব নিকট প্ৰমথেব গান তর্কিনার নান্দৰে প্ৰনথের উপস্থিত তর্কিনার নান্দৰে প্রনথের উপস্থিত তর্কিনীৰ মন্দিৰ হইতে প্রমথের গোলাপী ভবংন প্রভাগন্ন বিপরীত স্থতি প্রাক্তির গার্ডি অমুঠান তর্কিনীর গার্ডি অমুঠান কম্মিনা ভয়ান্বিত হইখা গোলাপীর নিকটে গানা বাদ্বী চন্দ্রকলা ত্রাল্যীং বিবাহের হথা ভুপভিন্তে কহেন	540 540 542 542 548 548 540 540 540 540 540 540 540 540 540 540

স্কৃতীপত্র'।

সহচরীগণ প্রত্যাপমন করিয়া রাজকনারে গোচর কর	PAGE!	<u>'</u>
व्राक्तिनहीद् व्यास्त्रभ	M	369
তর जिली द मन्दिद अगत्थे द शगन	; ****	১৬৯
প্রবর্থ তরক্ষিণীর আক্ষেপ	4 * ***	>90
क्षम्ब ७ जनमिनीत नेमां गरहत दिना धरिया अवस्ति और	का शमन	590
মহণ্রীক নির্বাহের বিশ্বস্থরের সহিত কর্ণোপুরুথন	****	25-8
अभव जरकिनीत भगग्र। योजरसत करवीलकथरी	****	779
প্রমণ্ড ব্লিণীর মূগ্যা গমন	*****	השל
জনক स्था सञ्जीक ও তর্মঞ্চনী সংহতি নীলাচলৈ গম	म `	124
क्रमक यवि कर्जुक अर्गनात्यत छव	**,**	799
श्चमस्थत नीजोडरन गमन	•••	२००
নির্কাহ রাজার পাত্রের প্রতি রাজ্য সমর্পণ	*****	२०२
मराद्राका निर्दार द्वांगी हलाकला समिलवाशाद मीन	i ben	· 6"
भम्म •••••	*****	200
মহারাজা বিক্রনকেশ্রী পাত্রের প্রতি রাজ্য সমর্পণ	****	२०४
মুনিপত্নীর সহিত রাণী চন্দ্রকর্ণার ও প্রমথের কথোপা	কথন	२०५
প্রমথ তর্কিণীর মিলন		₹\$8.
প্রমণ ভরদিণীর কথোপকথ্ম	*****	₹ 58
भराब्रोका निर्दाष्ट्र नर्साद्रस्य स्वतात्वा भन्न		333
নিৰ্দাহ রাজার প্রয়াজ্যে প্রত্যাগমন		255
त्रोक्षा विकन्तरुगत्री सत्राक्षा शमन	****	२२७
गराताका निर्वाह गरातानी मह भराताक निक्रमत्वण	बी ब्रांटका	7 1
可能的 seesa greener seesa see		२२¢
গ্রমথ তরক্ষিণীর স্বর্মাতা	*	२२¢
वेष्ट् (भूष	196 g	224

প্রমথ তর্জিণী

भटनमा वस्तुना ।

मीर्घ जिल्ली।

নমে৷ ব্ৰহ্ম গণপতি, সৰ্ব অত্যে তব নভি, ভূমি জ্যোতির্ময় নিরাকার। ভূমি বিধি পুরক্রে, ভূমি হরি ভূমি হরু, সকলের ভূমি মূলাধার।। অগতির তুমি গভি, প্রলম্বের অধিপতি, ভূমি হুটি স্থিতি নিরঞ্জন। ভূমি হুক্ম ভূমি হুল, ভূমি বকলের ভূল, অগ্রভাগে তোমার পুজন।। ভুমি সত্ত্রকা ওম, কেচ নাই ভাই সকা, क्षि ফিভি তেৰ জলাকাশ। ना कार्नि ट्वांसाह उद्, व्यक्तिकाटक वाद्र श्रीका, किष्टकी शाह में किसीय है

भाग्यत निवसन, जिन्हि जन। तरकारभान, मथरत राज्जिल भूगंगनी। ইক্স চন্দ্র দিবাকর, স্তুতি করে নিরম্ভর, भागक रहेश बाटन विग ॥ থৰ্ক সূত্ৰ দন্ত এক, ভোমা ভিন্ন নাহি এক মূষিক উপর স্থগৈ।ভিত। শৃষ্ঠ চক্র চারি করে, গদা গছা শোভা করে, গলৈ গৰমতি বিৱাজিত।। राक्षक राज्यानन, विक्रमूर्ड जिन्हान, নন্তকেতে মুকুট শোভন 😥 निन्म त्रवि भागभटत, मगामिक् औटना कदत, অকারণ কি কাম 💓 ।। कतरपाटण श्रुष्ठि कति, भग मन मंखकती, निवर्त्त ना इस कमाइन। मिलिया यामामा बटम, जैले ना औमात वटम, नाहि गारन वांत्र वांत्र ।। জানাজুশ করি করে, ফিরাও সে করিবরে, ভবে ভবে পাইব নিস্তার। .ভাৰি⁵ যদি মনে এক, বড়রিপু হরে এক, একেরে করিয়া কেলে আর।। বিশ্বা পাদপথহায়া, বুচাও অনিত্যমায়া, ु मीनशित्म ध्कलका विशेरक ।

কুপাদৃষ্টি কর দীনে, কে তারিনে, কোমা বিনে,

लच्छी वस्त्रा।

প্রার :

প্রণমামি ভৃগুস্তা ব্রহ্মার জননী। रेनकुर्छ कमला जूमि विकृत युव्गी,।। পাদপন্ম করপন্ম স্থিতি প্রমোপরে। নাভিপুম মুগ্পম পাম ছই করে।। मन्भम विख्य गत जन महा हटन । भीहकां जिलामना नक्यीवान वटन ॥ বর্ণিতে কে পারে মাগো বর্ণনা তে। মার। ক্লপাদৃষ্টি হলে কৰে তথনি উদ্ধার ॥ 🎺 দয়। তাজি যার প্রতি তুমি হও বাম। রুষ্ট তারে এসংসারে লক্ষ্মীছাড়া নাম।। তৃণকে পর্বত কর দিয়া পদছার।। চরাচর অবেণাচর কম্বার মায়।।। क्षेतिक क्तिरल मृधि २व्र बत्रवत्। তোমারে ধরিয়া গর্ত্তে নামু রুত্রাকর।। আপনি বিষুখ হলে নাহিক নিস্তার। भीवतां पदलका जात महन समाह ॥

দয়। কর দর্মানী দয়। করি দীনে। কৈ করিবে ছংগ্রে ত্রাণ ছঃপ্র্যা বিনে। নাহি তানি স্তুতি নতি অভাজন অতি নদয় হইয়া মাতা ঘুচাও ছগতি।।

मेंबचडी वक्तमा !

প্রার।

থন্দি মাতা সরস্বতী ভূমি গো শারদ। । শ্বেতপত্তে আবিভাব শ্বেতাফী বন্ধা। भम्छल नवत्रति (मिश्टिक स्मात । দশনধ্যে প্রকাশিত দশ শশধ্র।। ় পদাধ্যক মধুকর ভ্রমিডেছে কত্। স্থ সপুর গান করে মরুপানে রত।। রাসরভা তর উরু শোভা করে অভি। ं कंडिंटनम कीन दक्त किनि मुन्नशिष्ठ ॥ হৃদিস্থিত বিকশিত **প্রমা** বিরাঞ্চিত। পীনোরত পরোধর অভি স্লুশেভিত। षक्षि (रिविद्य हम्भोकनी उदान रहा। श्रीत निक्षिष्टशाम (क्ति क्रूबवम् ॥ विभू किनि विभूग्ध छाडि महनाहत । भक्तिम जिनि स्मि (इन अके शहर ।।

ल्लिक्न जिनि नामा शक्काल काग्र। জিনিরা কুন্দের পাঁতি দন্ত শোভা পার।। जूकक्य विरुक्षम खरस शनाहेसा। বাণীর বেণীর ছলে আছে বুকাইয়া।। শুভ্রবন্ত পরিধানা বিষ্ণুর ভাবিনী। वाकतानी वीनाभानि वि**ष्यत वन्मिनी** ॥ যে ভাবে যে ভাবে তোমা হয়ে এক মন সে ভাব তাহার লাভ হয় ততক্ষণ।। তব দয়: বিনা বাক্যফুর্ত্তি নাহি হয়। षातु कुला इटल दिश्वा करन कथा करा।। ন্থমতি কুমতি তুমি দয়াশীলা অতি। প্রবর্তনাকালে হর ছুফ সরস্বর্তী।। রুণা কর রূপাময়ি রুতার্গ করিয়া। কাতরে করুণা কর কটাকে হেরিয়া।। করিরাছি মনে বাহা করিতে বাসনা। নিক্ষ কর মনস্থাম পুরায়ে কামনা।।

পরার ৷

সর্ব্ব অত্যে করিলাম প্রিগুরু অরণ। পারাবারতরী ভবে যার জিইরণ।। অন্টাঙ্গে প্রণতি স্তৃতি সর্ব্বদেব পায়। স্থর্গ মত্যা রসাভলে স্থিতি যে মধার।। श्रामिछामि सुत्रथह मण किक्लांग । वितिष्ठि धुक्कं ि जात जीनम् द्रश्राणा ।। विभागा जामा। मुक्ति मञ्जूत तिन्छ। । श्राष्ट्रजाविनी गुडी श्राप्ति छ्रिडा । श्रिष्ठश्राप कित्रणाभ हत्व वन्त्रन । छित्रभाष्ट्रज नम्कार युड् श्राप्तिल । श्रीक्रम मित्रशाम श्री निर्वश्रम ।

-

অকি পরিনা <u>।</u>

প্রাব।

ইতিপূর্কে বলুহাটি প্রামে বাসন্থান।
সে স্থান সামান্য নর বৈবৃষ্ঠ সমান।
পাশবর্তি সরস্থতী আছেন আপনি।
সভা ভবা ভদলোক বিখ্যাত অবনী।।
পরেতে সেখান হতে ভাজিরা আবাস।
এই কণ করি প্রাম সরিসায় বাস।।
পুণাশীল বাঞ্জীরাম রায় মহাশয়।
পিতার মাতুল তিনি এই পারিচয়।।
রায়বংশ নিজব্জা ভেদ্ধ প্রোত্তি হন।
স্কাঞ্জেণ সামনীয় বিখ্যাত ভ্রন।।

क्लीनराजीक कमा नटह मख्यमान। ভরণ পোরণজন্য সঙ্গে ভূমিদান।। স্ত্রধার্দ্দিক সকলেতে অভি বিচক্ষণ। रनव चिटक जिल्ल मन नटह कताहन !! নির্কিনে বসভি তথা সকলেতে মানে। जारता ब्रिक्त इस शाम छोड़ारमँत भारम ॥ तमायो विश्वनाथ कालि ग्रहीपता। সর্বাকণ থাকা মম তাঁহার জালয় এ क्लिक्डा भवाव्हिल नाट्यंत वालाम । সকলের সুবিদিত তার বার্শপুন।। বিশ্বনাথ গুণ যত অসাধা কথন। ত্তে যদি বিশ্বাধ আপনি তা কন।। মশাং কীর্ছি যে প্রকার হইয়াছে তার। এখন তেমন আর খুঁজে প্রেয়া ভার।। সমভাবে সর্বকর্ম করি সমাপন। छुरे भूख वाशि चर्ला करतन भमन।। ভগবাৰচক্ৰ যিনি জ্যেষ্ঠ মহাশয়। कनिष्ठे भाविकार क्रम गर्वे अगमः।। ভগবান ভগবানে অবিরভ রাজ। निजाकर्त्या चीय धर्मा (एव श्रीव मज !! এখন এমন আর দেখিলে তুল্জা न्त्र कान रमिश्राहि रम्भरमभावत ॥ 🔠

ক্রিষ্ঠ গৌরিশ্বচন্দ্র দয়াশীল জতি।

তীর দয়া সমভাব সকলের প্রতি।।

সরল স্থভাব দলা সহাক্ত বদন।

অপরাধ শত হলে তথাপি মার্চ্চন।।

অতিশয় বিচকণ সাপু বিবেচক।

দুটিমাত্র অনুভব যে যেনন লোক।।

অতঃপর ক্রমে ক্রমে এই নিবেদন।

মহারাজ চক্রপাণি ক্রথোপকথন।।

m41446

উদ্বন্ত হাজার মহিত চক্রপাণি গোসাদির কথোপক্ষণ।

পথার।
এক দিন মহারাজ উবন্ত রাজন।
তাববিরাজ্যের পতি ব্যক্ত ত্রিভুবন।।
বার দিরা বসেছেন সিংহাসনোপরে।
হেনকালে উপনীত এক ছিলবরে।।
তেলঃপুঞ্জ কলেবর নাম চক্রপার্নি।
উপাধি গোলামি ছিলবর মহাজানী।।
তাহারে হেরিয়া হয়ে হর্ষিত মন।
প্রধান করিয়া বিজে কহেন রাজন।।
সন্তান করিয়া বিজে কহেন রাজন।।
বিভাব বিশ্বি বোন ক্রিয়া করি আর্ম্বণ।।

পুরাণেতে শুনিয়াছি মুনির বচন। यञ्च करत नृश्वदा (शरप्रद्र्य नन्त्र ॥ অতএব **মুদ্ধ ক**রি একান্ত মনন। ठका পानि कन यरछ नाहि श्रामन।। পুরাণেতে মুনিবাক্য শুনিয়াছ সার। কত মুনি মহারাজ রাজ্যেতে তোমার 🛭 আপনার রাজা মধ্যে ষেই তপোরন। জনক নামেতে তথা আছে তপোধন। এমত সাধনা জার আসাধ্য কথন। यशेन या यादत कम वाका अन्त्र्यम ॥ নিৰ্বাহ দেশাধিপতি ছিল নিঃস্থান। জনক ক্লপায় তিনি হন পুত্রবান । তাহা ক্রনি কন ভবে উদ্বন্ত রাজন। তপোবনে নিঝাহের কবে আগমন ॥ গোসামি কহেন তিনি আপুনিত ন্যা তাঁহার ছহিতা এদেছিল তপোৰন।। নহারাজ কন ভিজ কহ বিবর্ণ। রাজকন্যা তপোবনে এলো কি কার্ণ।। দিজবর কন সে যে অপূর্বে কৃথন 🛚 अनिट्ड रहेल वाक्षा मराताज कन।। काकासत विकास कटरम उधन। जिन्द भकान हिटल करतन धारन ।।

াস্থ সূচনা।

গরার।

चिक्रीर एक्शोरिकारि निकी ह दोष्ट्रन । कुर्छेत्र प्रयमकावी, भिर्त्छेत श्रांलम ॥ भरवभाव अक आशी साम हस्तकना । গুণের মাহিক সীমা ৰূপেতে চপলা।। कना शुक्र विश्वतंत्र कृत्य पट भन। ं प्रकार अञ्ची दोष्ठः वानी पूरे कन ॥ ्कालत (मिथा परा छेशांकल गरन। मञ् कति मञ्जामशी कदश्य खरादम । **অনুমতি** রাণী প্রতি হয় অভয়ার। একান্ড চিত্তেতে পূজা কর কালিকার 🛭 छ्हेटत दामना निश्चि करियाम गात । क्ना दक छम्द्रिट अभिद्र एक। भारत ।। वृद्ध मित्रः सङ्ग्रमाशा ख्रुष्टारम श्रमम । ভক্তিভাবে করে রাণী কালিকা অর্চন্যা ৰপ্ৰতী ৱাণী অতি নাম চক্ৰকুলা। अनिविधा कना दिस्स शुर्व द्यान कना।।

কন্যা প্রতি নরপতি করি দৃষ্টিপাত। যুগল নয়নে ধারা বহে তাকমাই।। কন কালী কাত্যায়নী কাল বিনারিণী। কন্যারে **কুশ**লে রাথ কুলকু**গুলি**নী । আমার প্রতিজ্ঞ। মাতা ভোমার মদনে। विवाह मा पिव केशा भागाना विकट्न ॥ धरन शहर बारण छात्। सहैदन निर्धे छ । সনোমত সা ধরীবে যদি পাকে খুঁত।। সদাধার স্থব্যভার মরা ২০৩ প্রতি। ভবেভ্রারণে কন্য হলে ধরাপতি 🗵 **তর্কিণী নাম ভা**র রাখেন ভূপতি । দেখিকে রূপধা যেন অভি ফ্রন্ডী।। मिरन मिरन बाहा कुना! कुना निर्विधाश । বিবাদ না হয় তায় প্রতিক্ষার দায় ।। (साइन नयमी नाला मनाई डेग्रनः। পিতৃ সভ্য রক্ষা ছেতু যৌবনে যাত্র।।। এইনত দিন গত প্রতিজ্ঞান দায় ৷ কত শত রাজ্মত আসি ফিরে যায়।। স্থান্ধ রাজের রাজা বিক্রমকেশরী। সকভেণে গুণান্থিত বিক্রমে কেশর।।। ভাঁহার তন্য হ্য নামেতে প্রমণ। ষ্ঠাছার ভুলনা দিতে অবোধা মলথ।।

गटकाशदन कांत्र गटन इस मञ्चरिन । मक्शत हहेरल श्रेंड अम दिवस्य ।। তথা হতে উভয়েতে ধরি ছম বেশ। ভাবন্তী রাজার রাজ্যে করেন প্রবেশ। অৱণ্য ভিতর যান মুগয়৷ কাবণ ! **म्हें थारन छुड़े अरन इश्र अनर्भन !!** ভর্মিনী রহিলেন ঋণির আলয় ! **उत्भावत्व ठोत्र अक इड्डेल उनग** । নীলাচলে কিছু দিন অতে আগমন। त्म है होटन छूड़े खरन ट्**डेल मिलन** ध নিকাহের পতি স্ততি খাবিবরে করে : भन्तान हरून दें। द अविदेश नुद्रत ।। ভূপতি কহেন প্রভু করি নিবেদন। विविविद्या युक्त (किथी मन विवेद्ध ।। গোস্বামি কহেন রাজা এই ইভিদাস ৷ আবৃত্যে গুলের রুদ্ধি পাপের বিনাশ্র।।

অস্থ্য।

পরার (

শাত্রর বংশের পতি নির্বাহ রাজন। रमध्ये एवं ४३१७३ केंद्रक जि**ञ्च**न ।: सुरक्षत्तं निश्चन हा का गगरत भागन । वाद अदल १व जाउ धार के भवता. AFTAM PALECIA WATER PROCESS रक्षकारह अर्जनाहिकाता वर्षे कर्य । স্থাণিক পদাভিত সম্প্র আনুষ্ঠাত : ३थ तथी भाषा शक्ति लटन माधु।कृतः। জ্ঞান হয় করুচেয় হ বৈনেরে আদিক : প্ৰাঠান মোৰাল কত পঞ্চাৰিয়া শীক।। ट्राञ्चेन नगरश्चम सरक विष्व (त**ष्ट्रि**यक श्रमंत्र इष्ट्रंत थाएं नाएं धर्टमले ॥ স্থানে স্থানে গোলাগুলি প্রতি সমান রয়েছে মেগ্লিন্ শত সহজ্ঞ কামান !! রাজবাটা অট্টালিক। ঢারি মাত্র ছার। চারি হারে খোলা মাত্র চৌঘটি হাজার 🕸

পৰন স্থারে করু প্রবেশে না ভরে। দেবরাজ পান লাজ বজাকরি করে ॥ অস্থ কত নানাবৰ্ণ বৰ্ণন কটিন ৷ ভামল ধবল লাগ আইবল গ্রীন।। নাত**ঞ্ক**বিয়া রঞ্জ মাঠেতে বেডায়। মদে মন্ত্ৰ মদ মণ্ড নিবন্ধৰ ধাৰে।। কি কৰ ল'ছার কং বিচক্ষণ অতি। • দালে বলি সম লাভা দুলো রুহুস্পতি ।। (मन्द्रिक श्रांक जेविक अवस्थित गरा। श्रीता (यस ज्वारक्षीय इस अध्यक्षेत्र) हेमें निर्ण जीवशाका गांख जालिया। देशतनदल रेलव इश्च क्रांग्व मा🏜 🖼 🔾 সৈত্যবাদী ভিন্তে ক্রিয় সভো সদা রভ ; সক্ষাই হাধু সঞ্চ শাস্ত্রে অনুগত।। বোলেতে যোগির নায় যোগ অয়েষণ। '(बार्ट्सिश्चर्रिक इंग्लेस्ट्रिक चड्ड म्ह्रम्स ॥ সমাই শান্তের কণা অশাস্থ হাজিত। পরাস্থিতে নাহি পারে যিচারে পণ্ডিত । নশ্মিত্র ন্যায় শাস্ত্র পুরাণ নটেক। অদুষ্টি কিছুতে নাই না হয় আটক !! ধনের তুলনা তার আছে কি বিশেষ। ্তুলনার তুলা প্রায় দিতীয় ধনেশ।।

श्चिम उत्तरिका

কুলাচার্যা ভট্টাচার্যা নাছে যভ কৰি।

যথন নিঃসরে মুখে দকলিত কৰি।

বেদান্ত সিন্ধান্ত অন্ত কেন কেন্ করে।

কাব্যরশ আদিরস কার মুখে সরে।

অট্টাদশ পুরাণ্যদি সকলের মুখে ।

কাতিদিন পাঠ হয় জুপাত সমূধে।

মিহিব নদুশগণে গ্রাহবিপ্রগণে।

ব্যর্হাচ প্রাভ্য তাদের গণনে।

সভাপর ভিষ্টাটের নধ্র ব্যাহ

~~)}{@\$~

भिनो है राज रर्भ :

নগরের চতুর্দিকে, নানাবিধ অউলিকে, বসতি হালর পরিপাটা। ক্রন্ময় পুরী সব, দেখিবারে অসমর, কাহার প্রস্তুর ঘর বাটা।। বল্গর আছে যারা, শঠতা জানে না ভারা, পর্বে দ্বা, সকলের মরে। কেই ধারে করে ক্রেয়, কেই মেতি বাদে লয়, কেই কেই সিপ্রেণ্ট করে। হার চুনি মতি পানা সম্বা করা ভার। স্থানে স্থানে রহিয়াছে প্রত আকার।। স্বৰ্মুদ্ৰ। রৌপামুদ্ৰ। আনি সূই আনি। র্নশীকৃত পড়ে আছে কিসের বাখানি॥ জামেয়ার ক্রমালাদি শাল গাটি গাটি। পোচে বোমে গেল কভ গয়ে শীং মাটি। কত শত দেবালয় আছে রাজ্যানী। খানে ভানে হত শক কত প্লগ্ণি। দেবার্চনা শোম পূজা হয় অনিবার। यांत्र यक्त हन्त्रेशांके शुक्तत टाहात ॥ সদাবত নানাস্থানে আছুট্যে রাজার ৷ हरा हुम। बाध (शत यांक केन्द्र) यात ॥ যে যাহা বাদনা করে দেন ভাছা ভারে। সাধা কার করিবদরে বৈশ্ববীকাহারে।। নুতা করে নৃত্যকীরা কেই শার গান। নিজ্ণীক রাজা বেন ই**ন্তের** সমানী। क्विति नमानाश रशे जनुकान। निकार कारात अंडिन। (मिशे क्येन।। সভা অতি পরিপাটি কি কহিব আর। পণ্ডিতে পণ্ডিডে কথা অশেষ প্রকার।। নায় শাত্রে নিপুণতা তক শিরোমণি नाश्चरक विमायक कवि हुसमिति॥ সদাগরি ভাগ্যে হয়, বার ভাগ্যে ভার্গ্যেন্য, ভাগ্যবস্ত সবে বলৈ ভায়।

কহি সকলের আগো, কদাচ না যেও ভাগে, ভাগের মা গঙ্গা নাহি পায়।।

পরার।

রাজপণে দুই ভিতে বেশ্যা অগণন। नकी क्षर्य महत्र काल कत्रहा माध्यत ।। सहरक खावला क्रांडि भवत वालावा गतन गरन जारव अन करश शरक आता।। भाती कांकि गम्बनि शृह महबा बादक । শত দেবে দেখি হলে ভার দেবে চাকে। ফুলটার ব্বেহার অতি স্ত্কটিন। कुरतांश रगाटा ना कज़् हहरत श्रवीन ।। সূহে থাকি যে নারী কুপ্রভাসি হয়। ভাহার রুক্তান্ত কিছু শুন পরিচয়।। निक्त क्विह मेटन क्यू मिथा। नय । পাপকর্ম কটাদিত ছাপা নাহি রয়।। অবশ্বই ক্লত পাপ ভোগাবে ভাহাবে। কার সাধ্য পাপ করে ফাকি দিতে পারে। श्रिकाद्व श्रिक्शात्न त्थरण क्रिकार्ष्ट्रति । थश्च ब्रम किছू मिन तम मन छाजूती ॥

ক্ষে ছবে কল খাওয়া ছাপা কভু থাকে। বিলা বন্ধে বন্দী হয় বিধিৰ বিপাকে।। टम क्लीरैन लाभिस्त कर्म (करू नाहि स्तर्थ। লোভে পাপ পাপে মৃত্যু পুরাণেতে লেখে !! ्रमानी शिनी श्रामि मिल दिनन कथा करा। ষ্পধোমুখে কালামুখী মৌনা হয়ে রয়।। ঘনে পরে শবে ভারে বুঝায় বভ্তমে : खारत्य कार्य मृद्धि नाहि योदिक गृद्ध ॥ চোলের চায়ত্র মত ছওয়া ৰড় দায়। कुष्धंत्व क्षर्भावक श्राद्य किर्णाष्ट्रीय ।। अगरा म। इह मधा द्वा**रेटन त्री**छ। কথন ভুলিতে নারে ভাপ**নিচরিত**।। কদরে দংশেছে যার পিরিতি **ভূতি** । স্থীয় বন মহে ভার আপনার शक ।। श्रुक्ष क्षक्रिक इस फेक्टर गर्मान। পিরিতে নিম্ম হল্রে নাহি থাকে জান।। ज्ञान गुना इतन जांत कि त्नांय धंकत । নভূব। কে গ্রহণেতে করিছ গ্রহণ।। ুঅসভী হইয়া তিনি সতীত্ব লানান। क्यांत्र क्थांत्र काल माग कियान।। कर्न अहे निकल्दक कनक (य निदेव। जन्धत पार्टिन जात विकास कतिरन ॥

পরিবারে নিভ্য ভাবে করে ভিন্নকরি क्रांट्रिक क्रिक्टिक मध्य इस क्रमारक्षत्र खात्र ॥ कनहरूष्य करम कतिता गातन। नोक कुटन वटन (हिन क्योरिन नियन)।। अटकरादित नक्ला छत्र छान्नि मभूनत् । उथन निष्ठय करत गृह्ह श्रीका सर्वे ॥ धोवरनत चम्वारभ इस्त्र छेनभछ। মনে ভাবে ভিন্ন ব্যক্তিৰ বোমভান পর্বভিক্তে তুর্ণ পেথে যৌষদের ভরে। ভাবেনাকো মন্ত ইয়ে কি চ্ইবে পরে 🙃 कारन का रपीयन धन इडेरल विश्वय । योष्ठक रहेटम (क्ष्म् नोहि (पाच मुखा: **ऋ एथे एड अस्थि । इ**स शृह् सरका (थरक) ल्मारम् मदत् लाग्नं भरत् वांचु एकदक एक्टक ॥ আভিরণ অট্রালিকা হয় ভাগা গুণে 🕆 **क्टिमदा शावाखंदा भीम चरम खरन** । এইমত শত শত কত কুলবতী। কুলটা হইয়া তারা ক্রিছে বসভি।। ধরাপতি মুখা অভি নাহি ছুত্র লেব। **जूश**ित मत्न किछ नक्तिमाई क्रिना। कना। भूख विहरनरा नन। भरन छ्थ । अठ स्टब ताजा तानी नाहि लात स्था।

মালেতে ভাবেন রাজা দৈবে বিভয়ন। विना टेफ्व नाहि क्य फु:श निवावण।। ধরাপরে কত নরে ছিল নিঃসন্তান। যাগ যজ্ঞ করি তাঁর। হন পুত্রবান ॥ ভাবিতে ভাবিতে রাজা অন্তঃপুরে যান। ভূপে হৈরি রাজে। খরী হন আগুয়ান॥ রাজা কন মহারাণী শুন সমাচার। পুজ হেতু যজ্ঞ করি বাসনা আমার।। वानी क्र गश्ताक केवि निद्यमन। याश युक्त कतः विधि व्यटमत व्हन ॥ तक्रमीए यादा जामि (मर्थाष्ट्र अथम। टम मत बृद्धां छ छूप कवि चिद्वम् ॥ পশ্লাৎ করিছ যত শুনহ তার্টোতে। ्रवरक्षभन्नी रमथा मिरत कि कांच गरकरंड।। खक्ष कथा श्रमिदादत ताकात मनन। মহারাণী কন তবে স্বপ্ন উপাধ্যান।।

रानी एत्सकलात रूप्रमर्भन रूपना

जिलमी।

চন্দ্রকলা কন, করি নিবেদন, হেরিয়াছি র**লনী**তে।

কহিতে স্থান, না সরে বচন, কলেবর লোমাঞ্চিতে।। একই রমণী. তিমির বরণী, छेखीन हरेना घरत । কর কি ভাহার, ারপ চমৎকার मन मिक चारमा करत ॥ পদাস্থক তল, রক্ত শতদল, मन वस्त मन गारा र्ह्यत रा तत्र न छित न दह सन. **"कवा नाहि धरत हरकः।** চরণ যুগল, অতি নিরম্ল. कुला नाहि यात मीमा। त्रा कांत्र मर्चा. विधित व्यक्षणा. কে বুঝিবে সে মহিমা।। রাসরস্থা ভরু, 🌎 জিনি যেন উরু, 🖖 নিতম অভ্যন্ত ভারি। অসাধ্য আমার, সে ৰূপ ভাহার, বর্ণিবারে নাছি পারি।। किं की गं टहन, किंति श्रति दिन, े করজোণী তাহে সাজে। একি অপ্ৰাপ, নাভি যেন কুপ, বিবলী তাহার নাবে।।

व्यक्ति कटबालदब, वताखन्न करत्न, তীক্ষ সাস সুপ্ত ধরে : হৃদয় উপরে, শোভে পয়োধরে, ় বিকশিত শতদলে। व्यम्ब समग्र, 🐇 विश्रमा कि हम्, नत भित्र ८५१८व शस्त्र ॥ বিস্তার বদৰা, বিকট দশনা, अप्रेशिक छ्लानरन व्हित तोमानिनी, क्यम कानिनी, क्षिक्या जिन्द्रास्त ॥ कश्चित अञ्चा । शीगुरव मनना, ्राष्ठा एवं महि 💏। ' अकि हमस्यात, कर्ल्ट जातात. স্থতি করে শিশুসর।। व्यक्ति छेश्रद्धः, व्यस्त्र न। धरहः, রক্তধার। বুহে গায়। श्रवा व्यव्य जानि, यभि वत्र श्रीम. পশ্চতে যোগিনী যায় ॥ पूर्कणिक रहन, क्रांमध्य रमन পাৰ্শনী প্ৰায় খেশ। कारन भागिकना, करताह उक्काना, AND MEDICAL CALL II একি অসম্ভব, বাজ দিব। দাব, দেখিবারে ভয়ক্ষর।
কব কিবা আর, পদতলে তার,
শব ছলে দিগমর।।

वाणी इत्सकलात अध्यक्षेत्र अवाजा त्रांगीत कर्यालकथनः

শর্পর ।

কুপ। করি কুপাম্যী কুডার্গ করিয়া। কহিলেন ভিয়ভাবে শিয়রে বসিয়া।। কন্যা পুঞা বিদা ভোৱ মদে নাদি সুখ। সে ছঃথে ছঃকিড **হয়ে পাই**লাম ছথ :) শুন রাণা চন্দ্রকলা আমার বচন। वारिं इहेरन नाष्ट्र' छु:श विद्याहन ।। এক মনে কালিকার করহ পুজন : পাদা অহা আচমন কান ক্ষণ " নানাজাতি পুষ্পা আর নান উপহার : युश मीश देनदर्यका मि (चक्या बाजात।। এই মত কালীপুলা সপ্তাচ করিবে। **হইলে পূজার জন্ম এয়োজাত** দিবে॥ 🕟 पकास किरकार कथी कवित्व मान्य। यथागाँक कड़ांश्टर धाचान एकाकन ।

उर जारका क्या अक श्रुट्व क्रमी। अभिक्ष २८व क्षेत्र भत्र मनी।। এ**প্রকার** পূজা আর যে করিবে যবে। কাক্ৰিয়া। বন্ধান্য পুতৰতী হবে ॥ সেই কণ নিজাভজ হইল অমনি। অন্তরে অন্তর হলে। অস্তিবর্ণী।। तक्षनीरं जिक्क्ष्रियार्थ (नर्थ हि अलन তদর্ধি চিন্ত ম্ম আছে উঢ়াটন।। শুনিয়া অপনকথা দুড়ত। রাজার। লোমাঞ্ শরীর চক্ষে ধারা **অনিবার**।। চিত্রের পুতলীসম স্পন্দনরহিত। ্ ভূপতি কহেন বুলিী রাণীর সহিজ।। यान यदछ श्रदस्तक्त नाहिक जामात । স্থমতে পূজা রাণী কর কালিকার।। দেব দিজ প্রতি ভক্তি তোমার অচলা। (भड़े भूगाकाल अगद्भागी हस्तकला।। আদ্যাশক্তি মহাকাল জায়া অম্বালিকা। ে অসীতা অনাদি প্রিয়া অভয়া অস্বিকা।। अञ्च कुला हत्य गांडा निम्ना मतमान । चश्चरवारा अक्टर् किला बहन।। প্ৰিব্ৰতা সতী ভূমি সাধ্য। স্কলোচন। शहरूरथ इरी नाहि जान क्षजात्व।।।

সাধ্যা সভী প ডিব্ৰতা যে রম্বা হয়। थोकूक मं सूचा जात्त्र यटम कदतं अत्।! সাবিত্রী কথার আছে তাহার প্রমাণ। ণতিব্ৰতা রাধী ভুমি নানিত্রী সমান ।৷ प्रशामीमा अर्थानीमा कृषि गर्व **७**८॥। तीवा यापि छव श्रद्ध थाहि सि श्रे श्रद्ध। আম পর ভিন্ন লাই সকলি সুমান চ भक्तमार्य (भाषी हरण ज्यू अभि भाग ॥ প্রনাপ্র গুলা আছে স্ত্রীর ভাগে ধন। शुक्रस्यव वसभास्या त्रमणीत्रकम । ममाहात अवाखात माती यमि इतः। नामाना धरनरक (कन रूर्व अर्ग्राभन।। অচলা কমলা হন নারীর আচারে। অলক্ষীর আগমন স্বীর অন্যচারে ॥ রাজার বছন শুনি রাজ্রাণী কন। गशताक मानी किছू करत निरवष्त ॥. সাবিত্রীর দাসীযোগ্য অধিনী নয় । अम्बद्ध हस्माट छेश्रभा कि इश् ॥ সামি প্রতি শাবিজীর দুট্টজি ছিল। तिहे भूगाकरन (भद्दे नक्षरणे कृतिन।। পতি বিনা রমণীর নাহিক উপায় । রমণী সেবিলে পতি চতুর্বার্গ পায়।

সুখ ছংখ দাতা পতি রমণীর পক। विषय इंट्रेल পতি मक्टल विशक।। সকলি অনিত্য নিত্য পতি রত্ত্বন। লে ধন নিধন হলে রুথাই বাঁচন।। শুনিয়াছি পডিব্রতা সতীর লক্ষণ। পতি ভিন্ন আর ভার নাই অন্য মন 🛚 পতি মান পতি প্রাণ পতি গুরুজন। পতির প্রাণান্তে নারী জীবিত মরণ।। नालिका समझ नत ऋहिनतं छैन्छ। সিবপুরা করে ভাল পতির আশয়।: পুরু। পরে করুযোজে চারে এই বর। भरनामल शिख (यन शाई निशंश्व !! धोवान युवकी जान (वर्ग शांदक वारम) মনে মনে বাঞ্জা যেন পতি ভালবাদে।। বেশ ভূষা আভরণ করিয়া ধারণ। मिवा अपनारम करत कवती दक्षम ।। चात किছू नरह अहे डाहात कात्र। কেবল পতির মন করিতে রঞ্জন ।। इक इटन शाकाहरम वाहात व्याशात । অক্লচি বুচাতে ক্লচি বেলফুল তায়।। পড़िल करमत मह अकाश मा करत । হাসিতে মুখেতে কর আছাদন করে।।

মরে ছু জি পাক। বুজি কবে খাবে ঘাট। ভুলাতে পভির মন করে কড ঠাট ।। সকলে প্রশংদে পতি সোহানিনী হলে : ঔশধি বাটিতে নয় বিবাহের ছলে।। गत्न गत्न छेले जय भारतत अभाग । সহস্রমণা নথে বাড়ে তার মান।। খরিলে রাখিয়ে পতি ভরু লোকে ভাষে। मध्य बदल अख्वानी शिल सर्गवादम् ॥ स्रुयम स्कृतिहम इस महनट छिल्लान । श्कित रागर्भ (यन इस नकानान ।। প্রিনিদা মতী নারী করিলে তাবণ । তথান ত্যাজিবে বগু এইত লক্ষণ।। প্রভাক্ষ প্রমাণ দেখা আছে দীপ্রময়। শ্রীয় ভাজিলা সভী পিতার আলয় () भित्मिका स्थाम कर्ष भिवटेश्विनो । প্রাণান্ত করেন ভঃথে দকের নিদনা। কালে কালে কিন্তু কলি হইল প্রবল । अघाउँ रहेल घाउँ युठिल नकता: পতিব্রতা আপনার পতিনিন্দা করে। কোধান্বিত সতী হলে আগে ঘাড়ে ধরে 🕡 পতি প্রতি স্বণত্নীর নাহি হয় মন। সতী ছাড়ি পতি যান অসতী ভবন 🔢

कामजर्षे धर्मानके अहे रमकात्रव অমৃত ভাজিয়া বিষ করেন ভক্ষণ।। নে ফল তৎপর ফলে নাহিক সংশ্র। निमा धर्मा एकाथा अमा इत्सट्ड मध्यस् ॥ • অধ্যোতে কোন কৰ্ম কথন না হয় ৷ যুখা ধুকা ভুৱা **জন ভারতে** নিশ্চয় 🖰 প্ৰিয় দোধেতে মতী হয় প্রাধীন। न्याभक तमनी इस श्वक्र**रवरङ** ऋषि ।। প্রনিন্দ: গ্রেপেনী প্রথনে ভাশে । ্বেম্পর প্রাম্ম এই অভিনাধ দ প্রদার হরপেতে বত অভিশয় : প্রথম প্রতিপর গাপী 💏 দে শুনে হয .. আঅভিড ন' কানিয়া প্রভিত্ন ভাবে। ক্রানে না ক্রন্থান আছে বিষয়ের পার্যে ০ जाने था हि 'श्रास्तित इसन समन। कारन को अस गत (शतन इस बस ।) माभाना परंतरण किंदा करत প্রয়োজন। সভার সর্বাধ্যম পাতর চরণ।। नाती यकि ङक्षिडारव পতि मिवा करते। हेह काटल इस सूर्य भवकाटल उद्ध ॥ ত্রত জপ দানে যদি কম্পত্র হুলু গ পতি দেবা ভুনা স্ত্রীর কিছুমাত নয়।।

. L.

স্থ্য স্থাংখ স্থাপনার কর্ম্ম কলাকল।

বর্মের স্কুচনা কন্তু না হয় বিফল।।

ভবানী ভাবনা বাণী করে সর্বক্ষণ।
ভবের যাতনা বার নামে বিমোচন।।

कालिका शृक्षावछ।

পরার :

ানবাহ দেশাবিপতি বলেন গৃছিলা ৷ বিজন্তে কি কাষ পুঞ্চ হবের মোহিনী 🕧 ত্রপানেতে সেই কপ হয় দর্শন। भूषमधी भिन्ने भूखि कदतन राठेन।। অন্তরেতে বিচারিয়া করি যুক্তি তার। অবগত হইলেন দেখি ভন্নগার।। পুরোহিত করে কবি ধরেন গুন্ধক। রাজগুরু হইলেন আপনি পুঞ্ক।। পরিচার্য্য রহিলেন সহস্র আক্ষণ। পুঞ্জেন একান্ত চিত্তে অভয়াচুরণ।। তান্ত্রিকেতে তন্ত্রমতে আছে বেই ক্রম। শতদল স্বৰ্টাপা স্বয়স্ত কুসুন।। রক্তমবা রক্তোৎপল পোহিতচন্দ্র। রক্তবক্ত শোভা করে রত্ন আভর বা

शेकाकत विज्ञासन अरगीत हमान । अंत्रेगीत भारभट्य करवर्न अर्थन।। পূ**জা**র সকল ক্রব্য আহরণ করি। দেবীর সম্মুখে আদি রাথে পাত্র ধরি।। ভূতশুন্ধি অক্সশুদ্ধি নাাস আব্দি যত। করেন শকল কথ্য যাগে বিধিমত।। ভক্তিভাবে হেমঘট ক্রিয়া স্থাপন : শুক্ষাটারে ক্রিলেন পুজা অরিখণ ন যথাবিধি বৈধানেতে বিধিমত বলি। विविध श्रकात साहा मिटल हम वर्णि ॥ হোন আদি নকা কথা সমাপন কৰে: চিন্তাময়ী পাদপজে চিন্তিত অপরে 🕕 রাজা রাণী ছই জনে করি কুতার্কাল। काली नरल काली भरम फिरलन अक्षांत ।। रगरे गठ कदिरनम शृकः अवरमय। रम अकात (भरताहन यक्ष छेभरनम ।। ক্রমাণত দিবা সন্ত পুজার ব্যভা**র**। পূজা অত্তে এক চিত্তে স্ত্রতি কালিকার 🛭

कामिका खर।

প্যার ৷

করালবদ্দা কালী মহাকালজায়া। বলল: বৰদা উমাধুনা যো**গমায়া**।। कमलाकी कुछालरी काली कालामनी। कुःशय्दा प्रसामीका मानवमन्त्री ।: विकारी बद्धना वाना विकास निनी । विभाजाको विश्व अशे विक्थनिको ॥ নিশুর ঘাতিনী শ্রামা সরস্ভাবিনী। मार्विजी भारतमा मछी भिनदेशविन्नी !! শতক্ষরে বিনাশিল। অসীতা হইয়।। **मनक्षक भारत (ङाभ) इतिहा दा** देश ।। কটাক্ষেত্ৰে বিধি নিফু হৃষ্টি স্থিতি হয়। क्छोटक क्ववन वाहि म्यूप्स नम् ।। উৎপত্তি কৰিয়া তিন জনে ছিন গুণে : করিয়াছ ভারার্গণ আপনার গুণে।। চ**ুশ্ব রজোগু**ণে করেন সন্ধন। পালন করেন সক্তেণে নারায়।।। उद्याख्टल महाकाल विनाम कात्र । তোমার অগম্য মর্মা জানে কোন জন ।।

অকুল অথচ ভূমি **অকুলের কুল**। **अङ्ग्रिक्य जामा जनामात पुन ।।** অচিন্তা অপার মায়। অমন্তর্কাপিনী। औयत्य इनित्न स्ट्यं क्यत्न कायिनी !! देकनारं मध्यक्षित्री जुमि देवकुटके कमना । ষারকায় মহামায়। উৎকলে বিমলা।। विश्वभाजा विश्वकशौ वित्यत विक्रिमी। नक (भाषश्रुक) कृषि यामानानानिकनी ॥ নিরকি**র সাকার মা ভূমি** গোজাপুনি। ব্ৰহ্মার আরাধা আদা; পতিত্রপাবনী !! मन सदाविसा जुमि नन अवज्ञात । तिमागरम नाहि कारम महिमा एटामातः। काली वर्ल अनकारन रहेंदन आंशंख। বৈকুণ্ট চলিয়ী যায় কি করে কুভাস্ত ॥ 🚆 हेल हरू मियाकत नक्न भवन। विधि विकु विश्वनार्थ (क्षीमात हर्ने ॥ দিবা রাত্রি অবির্ভাষাটন নাহি পায়। কেন মন করে ভাই পাবার আশায়।। उत्रा (करल काली कशालमानिटक। **अकृत्व कृतान कृत कुनकुछनित्क** ॥ ষট্চকে চক্রী ভূমি পর্ম প্রকৃতি। প্রকারকে শহস্তারে যক্ত মধ্যে হিভি।।

जगरधा जानिन रेड विमरनरड मन। ৰে গতিকে গভায়াত গমন তেমন।। कर्त्थंट यांड्न मर्ट ड्रियरना ज्ञेगांनी। व्याविकार मर्ककीटन इस्स शैनानानि ॥ कृषि गटवा उर्क्रम्टक द्रमाश्रीम्थ पटन । विताक या मगमरम केलू नाजिन्देश ।। निवस्तानम्बिकोजी विक्अनिशिमी। বড়দলে অগ্নিবর্ণ রাথহ রক্ষিণী।।। চতুর্দল সর্রাসজ ভুঞ্ করি সার : ভাহাতে বিয়াল সান্ধ ত্রিবলী আকার দ উড়াদি পিঞ্লা তিম হইয়া হুড়ি©। মূণাল তথুমুদারে গমন ভড়িৎ, া गर्या मध्यः मिन्द्रहरू रश जोनमन। ভবের ভাবিনী ভববমান মোর্চন।। স্তব করে উচ্চৈংখনে রাজ্ঞক কয়। রাণী প্রতি ভাদ্য। শক্তি হও মা সদয়।। धनमा रहता कानी नराकानतानी। त्रानी थिए एसः कति कन रेम्ववानी ॥ হবে তব বাঞ্চাপুণ কহিলাম সার i क्या धक अधारेत उपत्र त्यामात्र ॥ देमदराना अपि जानी जाना कहें जन। रतिष्ठ इत्स शृटह कटवन श्रमम् 🖟 🚕

'सम्ब क्राक्ताः

েদেব দিল প্রতি মন্তি মাতান্ত রাজার। হদুবীর রূপার রাজো সকল স্থসার।। श्रृहिक नकत इक नदर महासूथी। শিকপূর্ণা বস্থকারা কেন্ ন**েছবী**।। 😘 প্রাণের অধিক রাজা রাণী ভাল বাংস (যে কর্ম করিনে তাহা অগ্রেতে জিজাসে।। মবোনীত সাধ্যা পত্নী ভারো, যদি হয়। অরণ্যে বসতি হ**লে ভরু** স্থাদয়।। তুঃখে তৃঃখ নাহি হয় খেকে অনশন। टम मुथ दर्ग जिल्ल कु: थ जेशेनि दम्हिन।। বনিত। হইলে খল নাহিক নিস্তার। পদনত রয় তবু নহে পরিবার ।। কথায় কথায় সদা উঠে উর্দ্ধে নাক। मुश्रशीन पृश्र (यन जीमज़ल ठाक ।। 🖔 তিলার্চ্চ নাহিক হয় সূথ সভাবন।। . फिर्नानिम श्रीत फ्रांटर अग्रदेत गाउना ॥ भटनेटक केरा क्यी भटन निवादन । मर्खन अष्ट्रशी मन्द्र करत्र आत्मानन ॥ উভারে সরলু খনি পরস্পর হয়। পরেশ পাইলে ততে। নহে স্বথোদয়।। রাজা রাণী ছুজনার সরল স্বভাব। चारवत व्यवधि माचे करम इकि छाव।।

পুরবাসী কত দাসী ক্ররিরে সেরন। অন্তঃপুরে রাজা রাণী রন ছই জন।। উল্লাসিত হয়ে দেঁহে যামিনী পোহান। এইমত কত দিন স্তথেতে কাটান।।

- 一

রাণী চন্দ্রকলার পর্ত্ত অহস্তাদ।

71131

ছলনার মনোমত হরেছে জলন। कुल्टन कुक्टन दक्षम विद्काल वक्कन ॥ গতমাস কলাহাস কুসুম মুদ্ত : গরের স্থচন রাণী জানিয়া নিশ্চিত !৷ তুই তিন মাস আৰু গোপন রাখিল।। চতুর্থ মাসেতে গর্ত্ত নিশ্চয় জানিলা।। রাণী কন মধারাজ কি কহিব আর ; অনুমান করি বুকি গরের সঞ্চার।। শুনি রাজ: হর্ষিত হ্ইয়া তথ্ন। ব্রাহ্মণ পণ্ডিতে দেন বছ রত্ন ধন।। দেখিতে দেখিতে প্রধাস উপনীত। **পঞ্চামৃত আ**ছে শাস্ত্রে যেমন বিহিত।। বেদরিধি মত পূজা দেন কালিকার। অভয়া চরণে মন নিতান্ত রাজার।।

দৈইমত ক্রমাগত ঘর্ষমাস কয়। मख्य गारमत जामि इहेन छम्।। সীমন্তোলয়ন দেন শাস্ত্র অমুসার। আর যাহা পূর্কাপর আছে জ্রী ব্যভার 🛚 व्यक्तियादम व्यक्ति का का व्यक्ति भारत । রাণীর মধ্যে **আমিরাখি পরে** পরে।। मञ्ज कवारे मुन जिल जिल्ल नसः। उल %। कथारे याड़ा थार्डवात मङ्गा ।। চিনের বাদাম আ'র সংখ্য জলপান। वादु (जर्म याहा हाइस मन करत थीन। চেনাডুর সরভাঙ্গা বর্পি খাছে অচি। कर्नामाल (बाल म्य चैक्टित क्टि।। বিলাতি কুমুড়া হিচি পক্লান বানায়। ८ १८ वादत खनिरश्चादत **हारे क**दत थात्र ।। পানিলোয়। স্থামাভাঙ্গা অতি পরিপাটি। नगर्य बारबन शृद्द कोमानना वाणि॥ ভাগ ভুজা ভক্তব্য যা যেথানে ছিল। भदिल व्यानिया त्रांक महिषिद्ध फिल ॥ व्यष्टःगढा मतमारम भिर् इस माथ। ं मरनामाभ भूगं हरता घूष्टित वियान ॥ 🖓 क्रिटनन तानीरत गांव एक हिल माथ। श्रदत शदत गांध करंत्र (मन गदन गांध ।)

চর্ব চুষ্য লেছ পের চাতুর্বিধ केन। নানা জাতি ফল দেয় দেখিয়া সভো্য :: কত শত তরকারি করেন রহ্মন। শাক সক্ত। আদি করি পঞ্চাশ ব্যঞ্জন 🛭 দম্পোক্ত কাবাৰ আর পেলাও কালিয়ে : নমেতে রুশই করে গিল্লি বালি গিয়ে 🕸 कर्त्रन हरूम क्रम क्रम अञ्चल हरून । শ্বমলেতে পরিমিত সরিধা কোড়ন।। বোল বোল মাথে। মাথো চড়চড়ি টক। ভাস্তঃদ্রহারীর টকে বড় সক।। কামরাঙ্গা জলপাই লেবু কলছিয়।। করঞা আমত্য ভাতে আঁব আদা দিয়া।। তাফুলা আমড়া বোল তার আনারস। অবির আচার আপুরধ্রার রস 🛭 মিউ রুম ডিজ কটু রাজেন দকল। সকলে অফ্লাচ ফ্লাচ কিবল অহল।। पिष इक्षानिवेत एक व्यवस्थव। কটরা পুরিয়া পরে স্থান্ধর পায়েস 🕩 किलाणी निश्चि शका थाका महनाहता। करूति वानामङक्ति सनाट्य तकता ॥ রসবোলা রসবড়া রসে রসে নড়ে। থাকুক ভক্ষণ ষাহা দেখে লাল পড়ে।।

की त्रश्रीण बैंदनाहता वर्क्तदेशदन ७०।। यात नाम छेष्यांभटन दनटह ७८ठे त्नाल। ।। मिलि **देश्ट**ले मिलिमांडू व्यागितनम् यत् । রুজান্ত ভাহার বলা নহে মনোম্ভ।। কথন গ্রহণ নাহি করি আস্থাদন। সকলের মুখে মাত্র করেছি শ্লবন।। উৎকৃতি সাম্ঞা আনে নানা স্করিয়া : িদিলেন কভক গুলি মেয়া **কা**বেলিয়া।। वासमे विसास स्टिंग धाक्रतारे महा। ছোৱার: আঙ্গুর পেন্ডা খোবানি ম**নে**কা ।; পর্বতে কন্দর গথ কত দেশ ভ্রমে। **षार्मन** विविध कल वक्ष्माहिखरम ॥ পেয়ারা দাভি্ন আতা দদা নানিকেল। थेक्ट्र त्रावाशकान त्वरू कुल दवन।। তরমূজ খরমুজ নোনা পৌপে তাল। বাতাবি গোলাপজাম কাঁকুড় কাঁঠাল।। কড় দ্রন্য আনে তাহা নাহি খায় বলা। को ठोली को ना हेर्ना नी का दिवलिया कथा।। টাপাকলা পাক। আন স্থমধুর রস। আমলকী হরিতকী ফুটি আনারম।। অলঙ্কার তার আর কব কি কথন। बर्तक युक्त वर्ग कर्ना अधिन।।

वानात्रती वन्याभाष्टी शतदन वनन। जा**कार विनाजी ना**ष्ट्रि यात्र रयह यन ॥ চুষরি টের্চি ডেন রেলওয়ে ভুরে। चमुखं शास्कन। किছू शस्त्री भाषिशुस्त 🛚 গো**লেল।** গোধড় গৌন পিফুগুল্<u>বাহার</u>। জরদ সরুজ নীল বাহার যাহার 🙃 আফোলে আমানতারা আনে বিদামান। প্রিধান যাহামাত্র শক্ত কিরে চান।। রেশমি পশমি বস্তু ভাল ছিল যত। কোণা হতে কেবা আনে কহিব ভা কভা। মনোসাধে দেন মাধ ভুগতি তথন। পাত্র মিত্র আদি করি মত একাগণ ।। থে থেমন সে ভেমন সোগান স্থান। र्य किम ८म किम न्यान পांश्राशीला जान।। প্রবীণা গৃহিণী আসি আশীর্নাদ কবি। বলে মা মেটের হাছা বালাই নে মরি!! যেদি মন জেমি ধন পুতাবভী হবে। **्यामात्र कलिएल कल व्यामन्त्रिक मध्य !!** विषास इँहेम्। जाता यटनन भवारे। जान थांक (जननाटका वाहेटना मा याहे।।

den silen

उत्तिनीत क्या

পরার ।

কথার কথার নয় মাসগত হয়। मणभ भारमञ्जलम जिल भूगं हह ॥ মহারাণী চ**ল্লকলা হইলা** এসর। ज्यिष्ठं रहेश करा। महा मदहाद भव 🔢 चाशक्त (इन काश हिल्या मा इय । अভाग करिन नीखि मनानिक महा। উজ্জ ক **স্তিকা**বর ক্পের আলার। **जूरमण्ड रहेन उपन हल्या** हिन्स 🔢 ধাইয়া ধরিল বাত্রী ধরাপতি ধন। मर्ख्य करित करित माजित (इपन।) **अइज**िह्हेग्रा तानी कुमानी मीहरक। व्यनिमित्य मनस्रुत्थं (मरश्र खुइ ठ८क ॥ সংবাদ লইয়া দুত ব্ররিত আদিয়া। <mark>সমস্ত ব্লন্তান্ত</mark> ভূপে কৰে বিব্যৱসা।। व्यविश्वाक्त्रभूटि करत निरवणन। পুলকে পূর্ণিত অঙ্গ শুনহ রাজন।। अमर्विका क्या। अक तांगी हसक्ता। কি কব ৰূপের কথা দিতীয় চপলা।।

স্থাপ শাসি রাজা হর্ষিত মন। দুতেরে শিরপা দেন বহু রত্ন ধন।। ° অন্তঃপুরে চলিবেশন হয়ে উল্লাসিত ! স্থৃতিকা ঘরের দারে হন উপনীত।। ক্না: হেরে নরেশ্বরে হরবিত মন : निवस्थि नित्रस्थिन दोलिका वष्टन ॥ ভূপতি গঙ্গী অতি জননা পাইয়া। ভাষেন স্থান্থের নীতে প্রফল ২ইরা !! উথলিল অংসিফু নয়ন যুগলে। ব্দন ভাসিয়া যার অক্রতার। গলে।। সহারাণী পুজেছিলা কালিকা চরণ : रमहे भूगाकरण बहै कमाबिङ वह । একংণ আমার এই হইতেছে মনে : ক্লার বিবাহ দিব প্রতিজ্ঞা পুরবে ॥

--

मर्गताक। निर्माटक शक्ति।।

পরার ।

নির্বাহ ভূপতি অতি উল্লাসিত মনে।

নাক্ষী করি হস্ত্র সূর্য্য দিক্পালগণে।।

কহেন পূর্বেতে আমি করেছি এবন।

বেখানে স্কুরুপা কন্যা সেইখানে গণ।।

পণেতে এমত রীতি আছে পূর্বাপর। ' জাতিভেদ নাহি থাকে কাহার উপর।।। আমার ভেমন পণে নাহি প্রয়োজন। সমুদ্য স্থির রয় এই নিরূপণ।। মনের মানদ এই ফহিলাম নার। ধনবান কুলশীল সভ ব্যৱহার !! আচায় বিচার কল গুণ অভিশ্য : সভাধর্ম পরায়ণ ধরাপতি হয় ! थरमम हर्वेटल धरम हर्वेदक व्यक्ति। মানেতে বিখ্যাত হবে যেন কুরুপতি।। কলক্ষ বাৰ্জিত কুল সত্য আচৰণ। कदशत जुलमा जुल: विश्वीय महन।। ব্যুংক্রম অপে হবে রাজার কুমার। তৰে তারে দিয় কনা। প্রতিজ্ঞা আমার।। এই মত অঙ্গীকার করি নর্বর। বাহিরে আসিয়া বার দিলেন তৎপর।। বাল বন্ধ স্থাদি করি যত প্রসাগণ। দেখিতে রাজার কন্যা সকলে গমম !! वानाकत वाना करत यन कति करत। 🗀 বৃত্যকিরা চারিদিগ বেড়ি মৃত্য করে।। मुमक त्यांचक पांक ए।व दीका कानी। শেডার তমুরা তাসা সপ্তসরা বাশী 🕕

জগবাল্প **জা**র ডম্প খোল করতাল। বেহালা সারজ বাজে মধুর রনাল।। ' ভূরি তেরি জোড়াঘাই বাজে রামকাড়া 🔻 🦠 ভুপুর ঝাঝর আর মাদল নাগাড়।।। পায়েতে যুজুর কেহ বস্ত্র বাদি ভালে; কিরিখা ব্রিয়া দব নাচে ভালে ভালে ॥ রাখাত বৈষ্ণব কত রুদ্ধবিন বার্মী। অবধত এল মত মাখি ভসারাশি।। मर ७ म ७ क्यू लग न १ ४ छो ५ करत । আসিয়াকে ভাট কত সংখ্যা কেনা করে।। हि अर्छ। जानिया मात्र कत्रकानि निया। चुचित्र सा (कार्य) वटल द्वाइन्स पुत्रिस्। ।। কাঁনা খোড়া কুছে। খাদা অভুব ব্ৰির। পোদা বেবি। গলগতে কুকুত্তে ফ্রাক্র ॥ ধাঞিবাড়ি চিভাবাড়ি লয়ে এলে। উত্তে। अशादतव भाग त्यन हत्न भव कृत्छ ।! व्यतिमना कतिया धन त्मम मुद्दाकादन । **८माना कृति हिटत भागा गाहा हेक्का गा**रत ।। বসন ভূষণ রত্ন রথ হাতি যোড়।। কাৰ্মারি কামেরার দাল খ্যেড়া যোড়া , मकटल नहेशा थम याम कू जूहरण। **উटिकः बट**त बुट्न कमा श्राकुक कुमरन ॥

দরিজের মনে। আশা বৈতরণী নদী।
অর্কপথে গিরা ভাবে ফিরে যাই যদি।।
আবার আনিব খন নাহিক সংশন্ন।
কিন্তু যাহা আনিয়াজি রক্ষক কে রয়।।
প্রধান দরিদ্র বলে তাই বটে ভাই।
আমি এর সদ্যুক্তি মনে গ্রভাই।।
এই মত বলি সবে যান নিজালয়।
ছযদিনে ঘঠাপুজা শুন পরিচয়।।

-

लत्किनीत वक्रीभुक्तः।

গুৰ্থী !

ভালনে বেনেরাপূলা আছে পূর্বাপর।
আচনা করিতে হয় বন্ধী মার্ক জর।।
রাজ্যবাসী সকলের আনন্দ অপার।
করিলেন পূর্বাপর আছে যে ব্যভার।।
পূজা কৈল পুরোহিত যোজ্যোপ্চারে।
বসন ভূষণ আদি নানা উপহারে।।
নিতা ভাজে গৃহসাকে জাগ্রত থাকেন।
পত্র আর মন্তাধার লেখনী রাথেন।।
আছে যে বিধান বিধি এই রেনে প্রত।

লেখেন লক্টি যাহা স্তিকবিশের।
সাধ্য তাঁর নহে তার বিভিন্নতা পরে।।
বর্তদিনে ঘটাপুলা হর সমাপন।
সপ্তম দিবস অত্যে শুন বিবরণ।

ভविभिनीय आगित्कोरङ्

পরার।

অন্টাহেতে রীভিমতে আছে যে সবার। आहि मिटिन आहि कांक्री करवन गांकाव ।। চাল বুট ভিল মুগ বর্বটি ভালা ! মনোহর। মণ্ডা মুত্তি বাগি গজা খাজ।।। কাহন কাহন কৌড়ি কতেক আদিল। কোঁচড় পরিয়া সব বালকেরে দিল।। ছটাছটি জড়াজড়ি করে যত ছেলে। শিবচন্দ্ৰ শস্তুচন্দ্ৰ কালীচন্দ্ৰ কেলে ॥ সিন্ধে ফটে পঞ্চা গৌরে হারা তারা লালা। কাজিকে ঈশ্বরে ষেদো ভাগবং কালা।। শীতারান ভারারাম অভিরাম ভাগ। रतक्ष जांताक्रक आगक्रक जाम।। প্ৰিচুলে এক ছেলে আসি তৎকালে। निः (अरम पूर्वाम दूर्ण नाष्ट्रदत भारम ।

(ছालाता ज्यांनम् करत् मार्ट अटक (वेटक) আঁতুড় হইতে বাণী উকি দিয়া দেখে।। नम्हित्न वालिकाद्य क्यांहेक सान । **बिश्म** ि नवम मिन कारम **फै**रमान ॥ সম্পূর্ণ হইল এক মাম উপনীত। করেন ষ্ঠীর পুঞ্চা যেমন বিহিত।। মুগায় বেদির পরে ঘটের স্থাপন: ষ্টশাথা ভতুপৰি করি আচ্চাদন।। हार्तिमिदक कालिशनः मिटलम क्यांन। মঞ্জ আচার করে মতেক রুমণীশা যোডপোগচারে পুরা অন্তেভে পুনক। করেন দঠার শুক্তি বিনর্ক্ত পুরুক। निर्वित्व मकल कथा कृति भगाना। সহত্র সহত্রে পরে ত্রাক্ষণ জোজন !! यात्रिक्ता विभिट्टन त्राजित्रिंदिकाणव । नहत्य यादक यानां कानांत्र छेनत ॥ 🔑 আগমন বিভাবরী দিবা অৰ্শান ৷ এমন সময় সভা হতেছে নিশাও।। अर्म शास हस्तकां रार्गा कांन । कान इम्र इक्नीटल मील-मिनगर्ग। कविछा कीर्सन शान माछ माछ छ। है। बाकि। भागनी एश दान्याक्षाह ।।

জ্ঞাতি বন্ধু আদি যত অমাতা রাপার গুণিজন করে সব গুণের বিচার।। দরিক্রে বিলান ধন যেবা মহ চান। এইক্রপে হয় সপ্তমান অবসান।।

जिव्हें अश्रीत अस्टिशास ,

भाषात ।

অফীম মালেতে দেন ওদন প্রাথান। **ष्मारह**ैय क्षकांत्र विभि त्यरमञ् बहम ।। भरमानीङ कति वाशी माङ्गेश्यः वाला । সৰ্বন অঞ্চে আভবণ করে স্বর্ণ বালা।। ख्लकः डिल्कः (मन नश्**रम अक्ष**न । পরিধান **মনো**মত অপূর্দ বদন।। ঘনমপত্রিকা কৈল গ্রাহ্নিপ্র আর্মি : রাশিচক্র গণনায় হয় ভুলারাশি।। अनिवंश विखेवर्य अस छङ्गवादत । **उत्रक्षिनी देश्य नाम लग्न बसूना**दत्र ॥ ওদন বদনে দেন করি মায়পুতা। ৰূপেতে করিল আলো ভূপতির স্কৃতা। वानाकारन वानारथन। वानिकांत्र शतन नाथ नाथ कथा कर क्रिक उपटम ।।

অমৃত সদৃশ ভাষা সরে চন্দ্রাননে। र्मा है है। देन बाका तारी मक्क छक्तर ।। वैत्रःक्रम अञ्जित करम करम इस्। इन द्रा क्यन कलो इहेल छे एश ॥ ত্রেশেদশবর্ষ প্রায় ভরজিণী হন। রাণীপ্রতি নরপতি সঞ্চোগনে জন 🖰 युवर्की ध्रेश करा। उपनि जवनः १२।। এক স্থানে থাকা আৰু উপযুক্ত নয় । भ दृहक्त शुंख जाराम (य भवत हिल । তর্জিণী লয়ে সেই মহলে রাখিল। অনুঃপুর অন্তর্গত ছিল যে আবাস। टमडे वाटम एवंकिनी के**विटल**न बाम ।। महहती (पन हाति मगान रहश्य। তাহাদের ৰূপ গুণ কি কৰ বিশেষ।। (योजन वस्ती नव व्यथम (घोवनी। कमलिमा हस्रम्थी स्थारक्षरममी ।। চভুরা নয়নভারা চভুর্থ সঞ্জিনী। **(मिथिएंड क्लारी) (यस कोरमें क्लारमें क्लारमें)** ।। নৃত্য গানে স্থানিপুণা ভুল্য চারিজন। क्यी विमी नंदर स्थम निक्ति अन्म !! वीनाबद्ध (वेनू चर्त्र यनि कर्त्र भान। ছত্রিশ রাগিণী ছয় রাগ মুর্তিমান।।

मथीनर्य नुष्ण भारत नवीरन श्रियो। टेन्द्रव दम्हे द्वादन दानी यान अक् मिन ।। • वानीटक मिथिया मटव इत्रविक मन। প্রথাম করিয়া দেন বসিতে আসন।। তরক্রিণী ছেরি রাণী ছইল। বিস্ময়। জামতা ব্যতীত আর শোভা নাহি হয়।। যৌবনে যুবতী যদি গতি নাহি পায়। জীবন নংশার ভার খনন জালায় !! (म जाना विध्य जाना ना इस जिना। (यमन छीटमात नांग व्यवार्थ मनांग।। এ সৰ ভাবন। কত ভাবি মনে মনে। वाह्यात नित्रत्थम कना। उत्सान्दन ॥ ক্ষণেক বিলয়ে বাণী কবিষা গমন রাজার নিকটে আসি কন বিবরণ।

- A Super-

থাজারপ্রতি নহারাণীর তর্জিণীর বিবাহের কথা প্রস্তাব

পরার।
কন্যার মহল হতে আসি রাণী কন।
মহারাজ স্থির হয়ে করুন শুবণ।।

যুবতী হরেছে কন্যা প্রতিজ্ঞার দায়।
তরজিণী মুখুপানে চাওয়া নাহি যায়।

পুর্বাপর শুনা আছে দেবতা কি নর। বিবাহে প্রতিজ্ঞা কিয়া হয় স্বয়য়র 🛭 **महे खंडन फाउँ। यात्र माहिक मश्रमा ।** তোমার পণেতে রাজা না জানি কি হয়।। वाहित पुरा कमा गात घरत शास्क। তাহার সংপুর্ণ ভোগ ভোগয়ে ভাহাকে॥ পুৰের হঙাও সব আছে দী প্রমান। িষ্মবশেষে রক্ষা হওয়। স্ক্রুটিন মান ដ বাণরাজ। কন্যা উধা আইবড় ছিল। তাহার কারণে কত প্রমাদ ঘটিল ৮ অনিকৃষ্ আদি উধা করিল হর।। ক্রোধে বাণ তার জানা ধিতে জীবন ।৷ **म्**ङ्बुरथ (महे मत ऋनि विवत्रः) নিব্বাণ করণ মন দেব নারায়ণ।। চক্র ধরি চক্রথারী ক্রোধে ছতাশন। ুষ্যবিলয়ে উপনীত, **বাণের** ভবন।। পড়িয়। সহুটে বাণ ডাকেন শ্বন্ধরে। পরিতাণ পান বাগুলন্ধরের তরে॥ আর এক নিবেদন করি সন্নিধানে। 🔧 ভারণ করন্তুপ অতি সাবধানে॥ गहामाना महाताक कुरू অধিপতি। স্বহিতার জন্য জার হলে। কি মুর্গজি।।

आहेवड़ कांटल इटला धोवन छेन्छ। कुक्रकमा लक्कानात द्यांख विश्वमस् ॥ वालाकारस विका नाकि निम कुर्याप्यन । नजामरक्षा नाम जारत कतिन स्त्रम জামবতী প্ৰতি বিধি হয়েছিল বাম। ভবে যে পাইল ভাগ ভাগো চিল রাম ॥ শ্রীমন্তান্তর প্রস্থাবের সার। আছরে প্রভাক্ষ তাহে প্রমাণ ইহার।। দমযোগ পুত্র শিশুপা**ল মহাশয়।** হাতে ভুভা নেৰেছিল বিবাহ আসয়। क्षेत्र गर्दा रहता थवा कारन मर्काणन्। রুকিবুণা ধরেন হরি জ্ঞাত ত্রি**ভুবন** ॥ শিশুর মতন শিশু জান কেঁদে কেঁদে। হরিয়ে বিষাদ হলে। হাতে সূতাবেঁথে ॥ আপনি ওজন কত ভাবেনাকে। মনে। त्नित र त्य र त्य होत नमजूना मरन।। ুব্লাখন হইরা চাদ করে আকর্ষণ। শমুদ্র পাতারে পার দরিদ্রের মন।। তার ভাগো যাহা ছিল হয়ে গেল শেষ। प्रःथिত हरेश। পরে চলিলেন দেশ।। नम्मी सन्तिमी (य देवकुटके कमला। य पूर्विकियात रूटना नगरि यात रामा ।।

পাইবড় বড়কনা। ভরানক অতি। প্রাথ ভূগিতে হয় কলঙ্ক সংহতি।। मेंहांताक शूनः अक कति मिद्रवस्म । স্কুড়ার বিবাহের অপুর্ব কর্মন।। এক সভী ছুই পতি একি অলক্ষণ। क्रायां भारत मण्डलाटन द नारशत मन ।। অর্জুনে প্রদানে ইচ্চ। দেব নারায়ণ ; শাঁতের করাত হৈল ভতার খেমন।। ছুই ভায়ে ছুই পতি ক্রিলেন ছির। ভেবে ভেবে অঙ্গ কালি হইল ভগীর।। গ্রিক্সের ইচ্ছা দাহা অন্যথা কে করে। আপনি যাহক ওদ্ধ কর্ম্ব উপরে॥ ক্লফের কিরীটা প্রতি মন ছিল অতি। নৈলে কি অর্জুন রথে **স্কুড**রা সার্থ্।। যুত্তী যৌবনকালে উনন্দন্ত প্রায়। বিনা কান্ত ন**ে শাক্ত** আইনড় ভার।। वानाकारम विदय हरन तुष्ठि नकिन। छ। इत्ल कि ७ छ। सदय इत्छ। उलांगिता।। षाहेरफ यूरा स्मरत शास्त्र यमि घटत। थाकुक मञ्जूषा पूरत्र स्मरत हेव्हा करत्र ।।

পুনকার চন্দ্রকলা কছেন বচন 🕾 🕒 प्रत्रेखी अंत्रभ्रा अन्ह ताकन ।। इश्मभूरथं एमञ्जूषी नल विवत्र । সকল রুত্তান্ত অত্যে করেছে প্রবর্ণ।। **प्रिशासिक निकासिकी मृत्छ भत्रम्भ**त । সাকাপনে নরনের করি অংগতির ।। ভগ্নি ঘৌৰন মন সঁপিয়াছি **নলে**। লোকাতার জন্য যাওয়। সময়ধরস্থলে।। নান্দে যাহারে পতি করে স্বোধন। মে জন হইল পতি বেদের বচন।। দনয়খী অন্তরেতে প্রায়ে অতি ভয়। ভাবে হরি দয়ানর কোথা এ সময়।। गानच्छे गान क्छे धर्म नके इस। কেমনে প্ৰায় কাৰ নাছি গেলে নয়।। যত্ত্বতি ভাবি গভী চিন্তা করি মনে। युग्चंद्र स्थारन यांन विश्ववन्तन ॥ नक मध्या त्रकृताला कृति भाला कृत्। नलत्राटक हातिमिटक व्यट्यम कर्त ।। শহস্রলোচন শশী বরুণ শমন। र्रायाह्न मनक्षा এই ठावि क्रम ॥ তাহার নিকটে বসি চিন্তাযুক্ত নল। जामाज्य मकानटन विटक्त क्षवन।।

व्यवस्थित वाक्रकमा करव निवीक्षण। এক স্থামে পাঁচ নল হয় দরশন।। नेगप्रकी माना तन्त्र मन शंकरमरण। অভিমানে দেবগণে চলিলেন দেশে।। <u>जिक्रमः एतर्थ भग छ। एत्रा (यह फिला।</u> সেই পুণাকলে ভাব সতীয় রহিল। में शिक्ष मध्ये करते ई एका एसर होते। স্তৰণ। ব্যুণী প্ৰতি মনন সহার।। স্পানর। পুলিবীর অধিপতি ভাষ। ঘ্রক্ত ভারিতে হয় কন্যাভার দায়।, কন্যা হলে দিবা নিশি আভার ভাবনা বেবল করিতে হয় পরি উপাসন 🙃 ष्वतागय वाको खात कि हू नाहि तर। क्यांक्रमा क्यांचित्र शास्त्र धटल इस ! যাতা হয় মহাশ্য় ভাবহ নিশ্চয়। তংইবড় মেরে যার সদ ভার ভর ॥ ্ভাগন শ্য়ন ত্যাকি হন্ ধ্রিমান। छेख्य भ्रधाश्वाधम मक्रान नगान।; कक्रम कन्मात करका दिवांच উদ্যোগ। विषय हरेटण भटत हटन खबरग्रा।। ভোমার গণেতে রাজা মনে ভয় হয়। সময়রা প্রতিজ্ঞায় বিশম সংশয়।।

প্রতিক্রা পণেতে কোঝা কার স্থখোলন। কন্যা লয়ে পণ যথা নেই থানে ভর।।

-

মহারাজ নির্মাহের রাণীর প্রভি উক্তি ৷

পরার ৷

রাজ। ফন মহারাণী শুন সান্ধানে। প্রতিজ্ঞ পণেতে হিন্ত যার সেই সানে।। প্ৰেতে ব্যাপিত অতি হয় মহীতলে। भाव एउट्ट ग्रायत ।। যুগে যুগে বিবাহের দেখ নিল্পন। তেত্যিশে মিথিলায় ধনুউন্ন পণ।। পণেতে পাৰ্বত হলো জনক ভবন : भूगंबन वामहस्य करतन भमन ॥ আপনে আপনি নাহি জানেন জনক। জগত জননা যিনি তাঁহার জনক।। পড়িত পাবন পূর্ণ কৈলা মনকাম। কমলা হইলা কন্যা জামাত। শ্রীরাম।। ঘাপরে জৌপদী যিনি ক্রপদের স্ততা। যজেতে উৎপত্তি সতী লক্ষ্মী অংশযুত।।। লক্ষ্যভেদী প্রীক্ষা করেন আপনি। नक कति (महे लक्क विटक्सन काछि।।।

যার যুদ্ধে পরাভব হন মৃত্যুঞ্জর। चिन्द्री विद्याल अन्तनाहि धनक्षय ।। কিন্তু সব সে কেশব কুপ: ভিন্ন নয় ! নভুবা ভীমের ব্যাদে হতে হতে। লয়।। পান্তব গমন তথা পণের কারণ। জ্ঞীরুঞ্চ পাওব ছাড়। নহে কদাংন।। ভাগো পণ করেছিল ক্রণদ রাজন। ভাগ্য পুণ্যকলে পেলে জ্রীমধুক্তন 🛚 পণে প্রাপ্য পূর্ণপ্রকা পাবকালে জাণ। অহিকেতে কত হাখ রাগ্ধ হয় মান্দা। तानी कन बाधा (भएका कनिकारण मधा। कार्याः विकास - ६ स्थलार्थं एस स्था। রাজা কন কেন প্রিয়ে মনে ভাব সদ্ । জনম মরণ বিভ: ধাতার নির্কাপ ।। রুফের অপুর্ব্ব লীলা বেদাগমে কয়। भाइति सक्षात भारत खार हुस एव ॥ र्ज्याम मा घटल जाट्या मन्त्र वास्त्र म যার কর্মা সেই করে আর সাধ্য কার।। ু**প্রজাপতি করেছেন বিবাহের ছিন**। তোমার আমার ভাবা সকলি অন্থির 🛚 **অভএব মহারাণী থাকহ নিশ্চিত্তে।** চিত্ত ছির করে করে চিন্তামণি চিত্তে।।

বাহারে করিলে চিন্তা চিন্তা বার দুর।
নির্বিষ্ণে করেন নাস চিন্তামণিপুর।
প্রবোধ বাক্যেতে কত বুঝান রাণীরে।
ভূপতি মগনা অতি চিন্তা সিন্ধুনীরে।
মহারাণী ভালঃপুরে করেন গমন।
মহারাজ উৎক্তিত দ্বির নতে মন।

and his film

নহাসাজের ভারজিনীর বিবাহের প্রভালেখনে অন্তদ্যতি

वास्-जिनंगी।

হুইলা বাহিন্ন, নুপতি কুথার,
নির্মাহ দেশাথিপতি।
পাত্র মিত্রগণে, সভাসদ জনে,
সকলোতে কবে নতি।।
ভূপতি উখন, কহেন বচন,
দৃষ্টি করি করিবরে।
দিয়া নিনেদন, এই বিবরণ,
সবিশেষ সর্বভ্রে।।
লেখহ পত্রিকা, আমার পুত্রিকা,
ভর্ফিণী গুণবঙ্গী।

কহিব কি আর, উপনা তাহার, দুশুতে ছিতীয় রতি।। ভাদার বিবাহ, নৃপতি নির্বাহ, কবিবেন সমাপন। इडेश नमग्र. इडेटव छेमग्र. নিকাদেয় নিকেত্ৰ !! ধরণী উপর, ধতেক ভূধর, ভাৰভিতি যে যেখানে। लवात महत्र, कत्र (धात्र), লিখি লিপি সেই স্থানে।। পুরোহিত উক্তি, সিদ্ধি এই যুক্তি, প্রকাপতিরে মরিয়া। বিলম্ব না করে হইয়া তৎপর, লেখ সব বিবরিয়া। क्ष अन्दलम, गकल विरम्ध, আমার পাবের কথা। वदान्त्रम एछ, निकंशन प्रहे. इस (यम मन यथा।। मचार इडेग्रां. यहारन यहिंग्रां, লিখিতে বদেন পাঁতি। বিলম্ব না করে, যত কৰিবরে, অবিশ্রাম দিবা রাতি।।

ভরুক্ষিণীর বিরাহের প্রতিক্রা পতা

পরার।

क्कितिकृत्व छेर शिकि निर्मी ह त्रोक्षन ।

हताहत व्यक्ताहत नत्द जिल्लून ।।

होत कि कमा व्यक्ति नात्म उत्रक्षिणी ।

कत्शत छेशमा नित्स हिन त्रीमानिनी ।।

स्ति नार्रे अक्ट्रों हे समा कित्त घटन ।

दूसनात जूसा नम्न हेर्सात कात्र ।।

त्याह मेर्ने त्राही (महे जूशकित कमा। ।

सर्वे छत्न क्ष्णिहिल कत्श छत्न पना। ॥

तोक्रमा व्यक्ति त्राही श्रीक्रिक स्वत्न ।

दित्र कोहाद त्राही श्रीक्रिक स्वत्न ।

दित्र कोहाद त्राही श्रीक्रिक स्वत्न ।

दिस्स क्ष्मी कृत की सर्वाशित हत्न ।

हत्स क्ष्मी कृत की सर्वाशित हत्न ।

हत्स क्ष्मी व्यक्तिश्री हत्न ।।

व्यक्ति भीत विवादश्य श्रंक लहेश। छाटेंग्र टमण विदमण भगन

পরার।

পত্র লিখি ভটাচার্য্য শুনান রাজায়। মনোনীত হৈল বলি দেন রাজা নায়॥

ા (સફુ:

🚁 দ্রিকে ডাকিরে রাজা কহেন সত্তর। পাঠাইরা দেও দুভাদেশ দেশান্তর।। বিলয় ন। কর কোন মতে কদাচিত। ত্বরায় করহ গব পত্রিকা প্রেরিত॥ রাজ আছেল! পারে ভবে হইয়া তৎপর। ভাটেরে আনিতে দুতে কন মন্ত্রিবর !! দূতের মুখেতে বার্ছা পারে কা**লুভা**ট। বেগেতে অমনি ধায় নাহি দেখে বাট।। এক পার আর চায় কালুভাট নাম। উপনীত হন আদি রাঞার মো**কাম।।** মহারাক জন হোক্ ঘনস্বন বলে। গগণের চক্র যেন পান কভিলে।। একে ভাট তাহে পায় বি**বাহ**হর গন্ধ। ेषाञ्चकल पुरुषे (यन इसुत प्रानिम ।। ভাটেরে ডাকিয়া মন্ত্রী কন সবিশেষ। পত্তিকা লইয়া শীপ্ৰ **মাহ** সৰ্বাদেশ ॥ দ্রাবিড় কলিঙ্গ অঞ্চ বঞ্চ উত্তল। মগদ ক্রীটা কোনা কাশ্মীর সিংহল।। অবন্তি প্রয়াগ কাশী কাঞ্চী ক্রনাট। वहत्र विवासवानि तकात हिना है।। हेळका हिन्नुना है दसर इन्हांवन। कानए कामिश्रा कुली निक् जीशांवेन ॥ ভেজাপুর জয়পুর গরা কুকবাড়। নবদ্বীপ অগ্রদ্বীপ চক্রদ্বীপ রাচু ।।. হস্তিনা দারকা জন্ম জলেশর ভ্রমাক 🔊 হট্ট সন্দীপ কাম্পি বদরিকাশ্রম।। স্থরক কুরক নন্দি মিথিল। আগর।। মণিকর্ণ ক্ষীরপ্রাম কটক মগর।॥ -যত যভারাজ। ছিল ধরণী উপরে। 🦿 লিপিদ্বারে স্বাকারে আবাহন করে।। ভাটেরে বিশার বেন নানা ধন দিয়া। অপর ব্রস্তান্ত যত যতনে কহিয়া।। 🥂 বারষার কন মন্ত্রী শুন অতঃপর। 💎 বিলম্ম কর কালু হও ভতপর ॥ রাজ**কর্মে বনি**দ্যাৎ দেরি কর তবে। শ্বশু আমার ঠাঞি দওনীয় হবে।।। মব্রিকে কহেন কালু ভুলি গুই হাত। 🔭 एटन बदन जरू प्रश्न इट्सटग्रह शास्त्र ॥ মুখ বুক দৌড় খাপ সেই ভাটকর্মা। ধীরে চলে মৃদ্ধ বলে ভাটের অকর্মা।। कांनु बाग रबेरन जाग छहे वाज नरक न बहीन महाटल बाग्न त्यन कट्ड ।

े छहाझनीत गरमत उदक्कां ७ मधी भरनद सम ।

পরার ৷

वाकांत्र मन्मिनी ठांति नहरुवी नटन। নৃত্য গানে নিত্য মগ্ন আপন ভবনে।। वालिव' ममग्र वाला (यह ज्दित देश। সময় इहेटल छात्र जान। मन हस्य। अक मिम छत्रक्रिनी वितरण विश्वा বিরদে আছেন মুখ বদনে ঢাকিয়। ॥ **एमकारल कमलिनी रखा अपनी** । চিন্তিত দেখিয়া মনে इंट्रैंट हिन्छिए।। মুত্র বলে ভারে ক্রিয়া ষ্ডন। विव्रम वुष्टम बर्टम चाह कि कांत्रण।। नीतर्य दक्ति धनी मा कहिल छाया। कमलिमी जारव हरला द्ववाई किछाना॥ তথা হঙে আদি ফত সঙ্গিণীরে করা। अनियां तम कथा मत्य इहेना विश्वत्र ॥ . क्मिलिनी वटल उटला हरुमूथी नथी। নবাকার মধ্যে প্রিয় ভোমায় নির্থি॥ ভূমি গেলে তরঙ্গিণী কহিবে বচন। 'किकोनिटर कि कांत्र (डेठांडेन मन।। মবা হতে ডোমারে মেরড,ভাল বামে মনের মানস ভুমি বুঝিবে আভাসে 🕦 कमलियी कथा अनि नश्चि हस्प्रभूशी। व्हिट्ट है कार्ट व्यादक के अपूर्वी ॥ তর্ক্সিণী সদিগানে প্রিয়সন্থি গিয়া। মিউভাবে জিজানেন সমূথে বসিয়া।। कि कांत्रण विश्वसूथी विवश तमन। ভোমার এ ভাব দেখি ছুঃখে দহে মন।: जारत (मर्ट्स यमक्ररथ कथा महि क्या। **ष्यदश्चादश विश्वयूशी भोना हत्स ब्रह्न ॥** ্রাজকন্যা বৈই জন্যা হারা বাহাডান। আপনা আপনি সবে কর অনুযান।। भूक्त भारत वक् यनि कात थाटक। टम यमि विभाग भाष् विधित्र विभारक ॥ তারে ट्रित তার মন দরে ছু:ब्रांमटल ! নিবারর্ণ দুরে যেন_্আছড়ি আনলে।। স্থি সিনে ব্লাজকন্যে না কাহে কথন। **এक हात्य वर्ग किन्छ আছে छुट्टे अन्।।** সেইস্টল উপনীতা সে নয়নভার।। फोर्ड (मृद्ध मरनाष्ट्र: १४ वरह काक्ष्मधाता ॥ একবার ভার পানে ফিরায়ে নয়ন। নথেতে মৃত্তিকা মাত্র করিল খনন 🛭

विश्वभूकी नशपूर्ध भूध नेहि उठाता। সংচরী বত্ন করি ভূলে নিল কোলে।। প্রিয়ভাবে প্রিয়সখী যত কথা কয়। त्रवतको काश्वि भूमि एक भाग तम्र ।। তথাকৈতে সহচরিপ্রে আসি ফিরে। ळ्यांना मंभनी इंटन ं नित्नन दीरह ।। मिक्नीस धवान! (म खनारक्षत्रकी। িবারে করে **স্বরো**চন সকল ভগনি ব্রুজতে না পাবি কিছু কোন অভি থায় : গ্রাণ সনী হ**ল দেখি** কি কবি উপয়ে।। .कासमार मां कहिल कथा निरमामिनी। পৌনাভাবে আছে খেন ছক্ষা মানিনী !! क्षांनशः (अ कथा (अहं छप्रिक्षत्मनी। उपनीय। हम यथा पुरुक्तमस्मी ॥ उश्रामक जाकचा ६ इस प्राप्ता । धानाक इहेशा नाम (इन् अत्क्राम ॥ হইরাছে ভ্রম বুলি ভাবিরা অভারে। ক্রিবারে নির্নিকণ ধান নির্ভুৱে ।। ্মনোভঃখে ছংখী হবে আতে রদবতী। ফুকারে কাঁদিতে নারে খেদান্বিতা অতি।। नर्म निल्ल ए त एक्षान मिलियः। বহিরা পড়েছে ধারা হৃদর আসিয়া।।

শ্বরভারে বিষদরে যে প্রকার নেরি। মনে করে প্রোধ্যে সেইমত হেরি 👢 ঁ ভর**ঞ্**ণী দীর্ঘাস হতেতে বজান। प्रमुचानि एककिनी कतिहरू शब्दन ।। তেতি এৰ আভৱণ সংখ্যা শ্যান ! যেন সৰ অন্তৰ বিভঙ্ ভূমৰ দ तकाव चारत वरत चारत जारतव चारितवी । लान (मिंद्र हीज नवी श्रवारखनमनी ह जा वांचा सादाय सीच सिनाया अनील : ंबर शादी जात्यातः वर्धानक मांश । অবিত আইলা দিরে সমন তড়িত। আশক্ষার ক্ষান হয় দিতে বিপরীত।। চি**ন্তান্তিত** আনি ফুলে পড়িয়া অবসী। अभिनेत्र अस्ति क्रम अभार अगरेगी । কোথা হতে ভুক্তিনী আদি আচৰিত: न्दिशानी क्रमदारा देशव छेशनीय ।। ব্যাকলা হইয়ে বঁবে অতিশয় ভীত। উপায় চিন্তিয়া কিছু না পান বিহিত।। কি কবিৰে কি হউৰে গণিয়া জ্ভাশ। ঢাবি স্থী চলিলেন তরক্ষিণী পাস।। निकटि निवर्ध त्न एवं पुष्किनी नरा। नम्न मलिल (हित्र मलक्किए। इस ॥

রাজকল্য হয়তেলে আছে আক্রতার ধরীধরি কবি ভাতে করিয়া চেতন। ক্**মলিনী** বিনয়েতে জিলালে তথ্ন। কি ফারণে মুজগন্মিত কং বিবরণ। আ**র** দেখি স্থামুখী মনের অন্ধর : এট স্থান ক অঞ্চী নম বিচ্ছার ৮ आक्ष मांग दिश्यमधी किल्लांत्य नित्र । ख्वाहानी बद्दा भन्नी विक्रुहरू उस । इत्य प्राप्ताः गाम किन्मः अनिमः। অহাৰ দিখা কেন কম কলেটিন। 🖟 ियं डोर्स किंडारिय हा विश्व महत्ति । া চীৰুত্ব ভাঙাইল কৰিব চন্দ্ৰি : शांतराध गाहि सा किन्नु मीर्गाशम -লে আছে গ্ৰেমন ব্যাস পারিভাগে আশা । পাছল লা জোন মতে মনের রামনা । कर्म कर्ना मश्री छाति करत्र **निर्दे**श्हा । क्यानिसी बाल दुवि अक्टिशिक सुडि। हर्स्युभी बाक अहरा ' त्य वृक्ति छ। है।। কিন্তু ননে সন্দ এক হতেছে আমার। ८वारधंस मक्त (न ८३) मल्ह चाकति ॥ वर्षत दिवर्ग इक्ष मान मक्तकृत। नक्षमा अञ्चली भन त्यारशंत सकत्।।

त्म नकर्ष सूनकष कुलक्ष नारे। कि क्रांनि किमन त्यांन किएम रेपल्यांहे ।। ं क्यालिनी वटन जानि हाड़ी ४८ई आहि হাত ধরে যাব যেই অস্ত্রুগ বাখালি । বাই পিত্ত কল এই তিন নাতি হয়। তার মক্তর্যাত হলে রোগ ভালে কয়। ासमुर्थी वर्षा मधी प्रामान मर्गामान কৈনি জুলি আনে কিছে অভুৱি সম্বাদ্ধ ও : oto, ath ceta for mate applied · 片种香料 压砂 俊逸 阿佛如 百四日 म है। हाला दाना या वर मालि किएन देव निया साम इस्स दिन भाषत कि हरा। অগ্নি ওশা অগতে গৈছে ক**ভ্**নাচি রব। सहित एक्सिन गांजि व्यक्त रह । রোগ আাস নিজগণ ক্ষেডি বিগেন। भाभामा विषय द्वाश हरन मा नि एएत । ष्ट्राह्य स्थानस्था करू सहहर्ते । রতিপতি লাই এই অনুমান করি। এ রোগীর রোগ পেই এই সনে লয় ; विष्ठांद्र कृतिशा ८५२ इस कि मा इस । শ্ৰুক্ণ যায় সজে হতেছে বাভাগ . **কান্যাগতি হলে** ভার অন্ত প্রেয়া ভার 🗈

भूनः এক कथा आमि विक मबाकादत । श्रूरक्षानादन नदम हन कोनदन छहादत। না থাকিৰে চতুরুতা ভেঙ্গে থাবে ভুর। **ব্লিতে**ন্দ্রির গে**লে** তথা হয় দর্গচুর।। এই মত সথী যত প্রামশ করি। রাজস্কুতা রহে বথা জান প্রাভরি 🔢 তরঙ্গিণী প্রতি কন চ**ম্লয়ুখী** সখী। भूरण्यानाम भर्या किया चाक्या निहरि ॥ এদেছে সংযূর এক অতি মনোহর। পুচ্ছেতে ঢাকিতে পারে প্রচণ্ড শিশ্বর।। तरक ७८क बिरुक्रम करू नुष्ठा केरत। रमिश्रिटल मरनाम रफ़ श्रद 🖛 रहत ॥ তরক্ষিণী শুনি কন সংচ্রী গণে। यारेट पामना देश्य कुन्न कान्द्रमा সকলে একত্র হয়ে বিহ**ঞ** ধরিব_।। भाभन सम्मिद्ध आमि युकुत्न तासित्।। অন্তঃপুর অন্তভাগে যেই **পুলেব**ন। স্থি সহ বাজকুন্য করেন গমন ॥

প্রমঞ্চ ওরজিনী ।

उद्गिनीत शुरुभोगारित योजि

পয়ার (

কুন্তুম কানন কিবা কব স্বিদেশ। सूत्र भूत्र मरधा यान व्यम दत्त दन्न ।। নানাজাতি রুকে কল ফলেছে প্রচুর। জীকল কমল। নিচু গুৱাক থজাঁর।। শাৰ তাল আফলকী আভা লামৰূল। গুমুক পোলাপজাম পাটনায়ে কুল।। আনার আঙ্কুর কল। কামরাঙ্গা কুল। কাঁঠাল পেয়ারা শেউ নকট বকুল।। 🖰 পুষ্প আছে কত প্রাতি কার সাধ্য কয়। পারিষাত ফুটিয়াছে যেন ই**ন্দালয়**।। দেউতি **সৃদ্ধিকা জবা কিংশুক** চম্পক। ्राकाष्ट्रिक। उत्तन्। अँ हे कुम वक ॥ कार्यिनो कांश्वन क्रकटकनी नार्शवत মালতী গোলাপ ঝাটি টবের উপর।। ভূমিচাপা গন্ধরাজ বাতি যুখী বেল। বিরহিণী পক্ষে বংক যেন শক্তিশেল। নরোবরে বিকশিত কত শঙ্কাল। ं नानाविश्व (काकनम् तक्क छेद्रशंस ॥

न्यक्त स्थुलारन नमा मस अस्त अक्टरन त्राक्टरनी (थलिका दवज़ात्र ॥ ্রমর **গুঞ্জরে কভ হইয়া আকুল।** ্মধুপানে চলচল যত অলিকুল।। প্রশাবনে ঢাকিয়াছে রবির কিরণ। गरेत्र गव मगीतः अभिरह भवन।। তেঁতুল পিয়াল শাল নারিকেল বাশ। কৈত শত প্ল প্ল তাহে করে বাস।। भाभिता भात्रता यह छेएड सारक बारक। वोकशंक शांधि कल छात्न वरम छ। क পঞ্ছরে পিকবরে করে কুছরনি। त्म श्वि श्विमित्त देवश अदत कान् धनी ? ।। ट्रिक मटन द्वार श्रीत श्रीत जनका कोशीन कटमन (यात्री कति (सात्रकः ।। गन्म भन्म नम्बाक्षास्त्र हमाहन रि छन। छत्र छत्र अभिनी इदनन ष्रहन।। ागरन जनक अब रहेगा भरका। জ্বাপনারে রুহে ধনী আপনার বস।। मुँज्रादम् बर्ट्स त्यम हिट्यत श्रृङ्गा । स्था जारण छेत् वरम घूथशस्त्र अनि ॥ পঞ্চত্তর একেবারে হানে পঞ্চ শর। তৃণপুন্য হেরি পুন্য মদন ফাঁকর।।

নে শরে কে সারে সরে অন্তশীলে অভি कार्यानतम अन खुरम राकृमा युवकी ॥ इत्एक व्यक्त भूथ (मर्थ काना बात। লোমাঞ্চিত কলেবর অধর শুকার।। আক্রি হইয়। পড়ে মদনআলায়। বিলগ না সহে রভি রভির আশায়।। স্থিতা সে ভাব ভঙ্গী বুঝিয়া সকলে। রসনকী প্রতি কিছু জিজাসে কৌশলে। গ্ৰনে অসত কেন হলে কি কারণে। करोक कृटिए धर्मा करहन हत्रद्र ।। সহী কয় যে কণ্টক ফুটিয়া**ছে পাঁর** । 🚈 কৰাকে ৰুলক ভিন্ন নিষ্কৃতীক দায়।। রমণীর মন পাওয়া অতি স্বক**চিন।** क्रशाधमनिद्रम दश्य मध्य थाटक मीमः।। গচ্চাত চতুরা ভাষা চাতুরি খেলিল। दन्छेक कृरिहेर्ड वरन मश्रीरत कहिल।। অতি বুদ্ধি **নিদ্ধি ন**য় কয় নয়নতারা। ধরিতে হইবে গায় যদি রন ভারা।। মধান্ত ব্যতীভ দেখ কোন কর্ম হয়। মবাবর্জী না থাকিলে শেষ রক্ষা নয়।। विवादस्त्र भर्धाः एक्श भवाक घरेकः १ পুরাণের হলে থাকে মধ্যক ধারক ।:

न्याहि। दक्ता (यह श्राप्त मोनास मधाय । উপসর্গ উপস্থিতে সে করে নিরস্ত॥ বিবাদের মধ্যে ভট সালিশী প্রমাণ। পিরীভি ঘটনা হ'লে কুটনী প্রধান।। মধ্যবর্তি হত্তে কর্মানা হয় আটক ব যেন তেন প্রকারেতে করয়ে খেটিক।। নধ্যক ছাড়িয়া মেই ঠা**র্থা ক**র্য্তে চার। তাং র আগদ কিন্তু ঘটে গায় পায়।। তর্কিনী কোন কথা নাহি সানে মুখে। পড়িয়া লজ্জার হল্তে মরে ননোতুঠো 🖽 क्मलिनी कन करा एन्द्रमुखी (हरस । भट्ना क्षे नृत्यनादक दक्षीन दम (भएत्र ? () হে**সে হেনে** চন্দ্রমুখী কহিতেছে তারে। সালে হাঁচে বেদে ভিন্ন চিনিতে কে পারে । नाती इट्छ नाती स्नांक निन्मः कहे। नय । অযথার্থ কহি যদি তবৈইতো, ভয়।। পুরুষের মন নারী অত্যে করি চুরি। ঞ্জালায় বসান পরে নিছরির ছুরী।। জাপনার মন কভু নাহি দেন কারে। निर्देशिय श्रुक्य मदत तम्बीत छदत ॥ नाडींद्र व्यशिधा किছू नाहि मिथि व्यात। नारधात व्यक्तिका भागा अकि वस्कात ॥

दि दिमन जीत महा एकानि वार्णात्वी
दि वह महल गाँती पछ शिख्या जात ।
स्टामक निम्नुंता काम द्य जात ।
सानाव वह ता कना मा द्य शहात ॥
सानाव कह ता कना मा द्य शहात ॥
सन्यानमां आहि तमां शिक्ष करत ॥
सन्यानमां का का का दियाना मेल ।
तम विश्व कि तु सिहीत क्या ॥
सन्या क्या का कम सामारम ।
सन्या क्या क्या कम समारम ।
सन्या शृतिया मनो मा कह वहम ।
सहसा शृतिया मनो मा कह वहम ।
सहसा शृतिया मनो मा कह वहम ।

তরক্ষিণীর বিশাহের স্থান নির্মাণ।

लधु-जिभमी।

ওখানেতে নরেশর, তাকি নিজ মন্ত্রীবর,
আজা দেন হইয়া সম্মত।
লিপি লয়ে গেছে দৃত, আনিতে তুপতিস্তুত,
সক্ষে সজী আসিবেক কত।।
লক্ষ লক্ষ রাজাগুণ, লয়ে সৈন্য অগণন,
র্থ রথী সারেধি অনেক।

সম্বরে নার্যা হও, জানার জানার লাভ, শিবিয়াদি বানাও কতেক।।

ानावशाम वानाय क्टब्स ।।

মধ্যে মধ্যে ক্ষম্ভ যত, বাজাবে অপুর্বামত, কাঞ্চনে নির্মিত কর বর।

স্থানে স্থানে মণি দিবে, ঘেই খানে যা দাজিবে; হীয়া চুণি অমূল্য প্রস্তুর।

যদি কেল দেখি গোলে, পড়িবে আমার রোবে,
ক্রাচিত না হবে মাঞ্জন।।

কিছু হলে অক্সহীন, গৰে হবে অক্ষ্যীন, পাঠাইৰ শমন ভবন।।

রাজ আজ্ঞা লান্তিমাত, তথ্যি ধাইল পাত, স্রায়িত হইল অধি**ল**া

পরিত্যাগ নিজাহার, দিয়া রাজ প্রনিবার, ভাবিশ্রাম ক্ষিকে ক্রিক।

জপূর্ব আবাদ সব, দেখিখারে অসম্ভব, কভ করে গণিতে তুম্কর:

কত মনি কত স্থানে, আলো করে স্থানে স্থানে, লক্ষ্যা পান দেখিয়া ভাষর।।

দৃষ্টিমার হয় জ্ঞান, দেবের ছল্ল স্থান, বিশ্বকর্মা কর্মে প্রাভব।

হাপরযুগেতে যেন, বাজহুর যজে হেন, যেই ৰূপ নিৰ্দাণে শাসন পান্ধার প্রস্তৃত করে, প্রকাল মুকুতা গরের। চন্দ্রকান্ত সনিতে রচিত।

কেমন সভার ভাব. াক্কর দেখি অফুভাব, সমভাব যেমন ভড়িত।।

মধো মধ্যে জলাশন্ বাস্তবিক জল নগ্ৰ, ক্টান্তে করেম থাছোদন।

দৃষ্ট হয় জন্মৰ, স্বোক্ৰ হেন লং. শৈত ভিন্ন জাৰ(ধাৰ্মমা)

পুরী করি স্থগের, সদী অতি বিচ্ছান, ভ উপজিল নমে এক সন্ধা।

রাজার প্রতিজ্ঞা আছে, কিজানি যদ্যাপি পাছে, বিবাহেতে যদি হয় হলে।।

চৌদিপে বেক্টন করি, করিল জমন করি, লজিববার সাধ্য নহে কার :

আচ্চাদিত করে শর, দেখিবার ভয়ঞ্চর, পরন প্রবিষ্ট করা ভার।।

মনে বিষ্ণুচক্র যেমত আকার।

চক্রী যদি হরে বক্র, স্বহস্তে গরেম চক্র, ভথাচ অশক্ত যেতে হার।।

शिक्ति अपन शिक्ष, जना क्यानित्त तरह विजिन अतिकारित स्वीत स्वान स्वता

জীবন সংশার হর, প্রাণে মাঞ্জ বেচে রয়, করে করে নিগুঢ়বন্ধন।।

-

रमनरमनाखरतव बोकल्छिमरशर खोलेस्य ।

পরার ৷

· 'डाउँ शिवा नक्षकाटम निया नगाहात : প্রত্যাত্র বাস্তালক লাজার কুম্প্র ভাশপুরের বিজেপিবরে সেড শিবিক্রি। ক্ষাণত উপনীত রাজার সভায় ।। হতের উপর কেই করে **আ**র্টেম্প । হার যে উল্লাখ চিত্ত প্র**সন্ন** বদ্ন ।। িশিরবেটির ফল্কা শি**রে**ইশোরের **মর্নোহ**র। शीकात अन्ती करते (मेथिर **अंश्**नात ।। कर्पाट कुछन गरन मिश्रम होता। অক্ল কিন্তুৰ প্ৰভা অতি চম্পুকার 🛭 কাহার গোসাক জাটো কাবা পেউ বৈদন কোন জন ওরিধান রেসমি বসনী। যোড়া গ্র' বান্ধা পাগ কাহার যাধার। কাহার পারাম পোঁদা ইফীকিন পায়।। ুলটের চাদর কার শোভিতেছে গায় i केर्राटम क्लेबात गर्मिक जोत्र ॥

श्रमण उत्रक्तिनीः!

कहवा माथात हुल करतरह स्पक्ष है । কাহার লগেটা পান কার পারে বুট।। कर्वा अस्टब्स्टिश्व श्रिक्ष श्राहरी है। क्नकार होट्टे भरत हरेश' स्थातात ॥ क्ष हक संग्रिमा जटना जर सन्। মানিকের মালা গলে করিয়া ভূষণ।! এক চম্মু অস্কা ভার এক মোনাহেব ॥ ার্ম সেক্রাজ খেল লেপ্টেম সাহের। কেবল বাবের বস লক্ষ্যাভাড় প্রস্তা। मन्यांत्र बुढा (भन (भारत धन) शक्य ।। कामा (श्रीष्ठ) मन्य नकु नदक मिला। नसः ্যায় রাজা তেরি মন্ত্রী মিলেছে উভয়া সকলে দেখিয়া রাজা করেন আদর। অবিহিন কবি লন গভার ভিতর । অপক্ষ হোর সভা হইয়া বিময়। मत्त क्ष व्यानग धन कुना मध। পশ্চিমাংশে পূর্বমুখে বনেছে ভাষাগ উত্তর দিলেতে বলে যত রাজাগণ। পুর্বাদরে পাত্রনিত্ত সব কক্ষচারী। শক্ষির অংশেতে প্রকা বৈদে সারি সারি ।। ব**সেছেন নুপ্**বর অমাত্য সহিত। ছেনক।লে রামরুজ রাজপুরোহিত।।

্ধৰ্মশান্ত ভৰ্মণান্ত নাহি যার মূল। क्टर्क क्टर्क क्टन खर्क रयमन वाकुल ॥ ন্যায় মতে নাার কথা নহে নিরারণ।। पुरत्रोहित्छ जाक निश्चा करहन ताक्षम ॥ আমার প্রতিজ্ঞা বাহা জানহ আপনে। পরিচয় লছ স্ব রাজপুত্রগণে।। পুরোহিত পরে পরে পরিচয় লন। भरता क्र खन्त नाहि भाग এक छन ।। करने १५८१ कुरल भी ल यमि (कह इत्र ! .**ধর্মেতে** বর্জি.ত দেই স্বধার্ম্মিক **স**য়।। **भू**टक बिटल अर्थानीटल र्याम् ११ ७३। गाहः । पुरुकति नांदादम स्मार्के करें दिश्या मास ।। সৰ্বপ্তৰে গুণান্থিত মেলা সুক্ঠিন। অনায়াসে পাওয়া বায় অভবে প্রবীন।। পরিচয় লয়ে ক্রমে ভ্রমিয়া বেড়ান। গলখোঁদা যেই দিলে যে দিগে না যান।। পুরোহিত প্রতিক্ষার ফার্ড সমান্ত্র। यापात निकटि घाउस ना घाउस मनाम। व्यक्षभारम गन्नार्थाम वृत्ति तम व्यामन । 🔧 वरल रकम थ मिर्टश मा अरल महासम्।। গুণগ্ৰাহী গুণী আমি দৃষ্ণেতে মদন। শোসার নিকটে নাহি হলো ভাগমন।।

পুরোহিত কন তুমি বড় রূপে গুণে। অধিক সম্ভূষ্ট বাপু পোনা কথা শুনে !! . এ কথায় খোন রাজ মানহীন হয়। বিষ্পুন সূপ যেন গতের অভিশয় 🛭 তিখেক যে ভানে আর কভু নাহি রম। অবিশয়ে তথা হতে করেন গমন। বাজগুত ঘাতাধাত করিতেছে যত ! यनक ना इस नश भरगोतील गल।। ध अरुदि (भारतार्यार्त कर मिन १७। ता जन्म । वस्ट्रम उत्यापम राज्या স্থান প্রেমারী রাজ' বিজ্ঞা কেশরী : নকত বিজয়ী মেই বিক্ৰমে কেশ্ট্ৰী।। यरम गरम कृत्व भीरक भरदिशभांत स्मार्थः ভার কাতে লাছি আছে এ ভারতে শ্রেক। এক পুত্র ভূপতির নামেতে প্রমণ। উপমার যোগা যার না হয় মন্মথ।। গুণিক্সনে তীরে গণে গুণে অগ্রগণা। শঠত। বজিংত সত সবে বলে ধন্। कुक्षम कानदन यान मित्र। अवगारन। रहनकारण উপमीठ छाउँ रगई बारन ॥ পত্র দিয়া ভট্রাজ কহিল রুস্তান্ত। শুনিমা বাসনা তার পেথিতে নিভান্ত।।

বিরলে ভাটেরে লয়ে জিজানি তথন। তরজিণী রূপ গুণ করিল অবণ।। শ্রুতমাত্র ভার মন উদাক্ত হইল। পিতা মাতা কাহাকেও নাহি জানাইল । প্রস্থালা গ্রানেতে হয়ে তথপর। ্রাছির। এইল এক শ্বেজ করিবর।। ভার পুতে আরোহণ হট্যা সতর : अरक्ना एणिनमाञ्च हिन्द जन्द्र । त्युट्रां अंकात महाराहत अवस्थि। ভগদভ হন্তী মত গমনেতে গতি 🕈 ्लगरि (योजन व्यक्त अम ग्रैंस भएए। शंघरन भरकछावड जिङ्गतम लैडिए।। চারি কোশ অঙ্কে পদ নিক্ষেপ যাহাব। দিবা রাবে কভ পথ গমন ভাছার।। ্সই মত অনত্তে সপ্তাহ চলিল। (क्रवल अरक्त अरक्त कार्टाटक मा निल ॥ গভেকুলমনে ভির নছে বস্পতি। क्षेत्रावल शृष्टं (यन यान भन्ने शन्ति।। নিকাহ রাজার রাভ্যে উত্তরিরা পরে। দেখে কভ রাজপুত্র ফিরে বার ঘরে।। তাহা হেরি রাজপুত্ত হইরা নৈরাশ। বিবাহ হয়েছে ভাবি ছাড়িল নিশাস।।

মনোত্তথে তুংখী হয়ে বিলাপিয়া কর : সুসার নাহিক চলো নৈরাশ আশয়।। স্বাক্ষণ হয় মন অতি উৎকণ্ঠিত। **(इनकाटन त्मेंडे (धाँमा ज्यामि डेलमीड ॥** বিনয়েতে জিজ্ঞাদেন প্রমধ তাগায়। কোথা হতে আরমন গমন কোথায়।। কি নাম ভোমার ভূমি কাছার ভনর। বিভাবেয়া বিবহিব। কছ মহাশ্য । থোন কহে সহাশায় খন পরিচয় ৷ **মণিপুরে দক্ষোহন** রাজা থারে কর ।। সর্বত্রে বিজয়ী আমি ভাঁহার নদন।। মনোহর নাম ধরি বিখাতি জুবন । গমন হইরাছিল নিকাহ আলয়। তর্ক্ষণী কলা তার বিবাহ আসয়।। যাভায়াত অম মাত্র ভাবে বোকা যায়। বিবাহ না হবে ভার প্রতিক্তার দায় ৷৷ থোঁনার অন্তরে আছে পূর্বকার রাগ। মনে ভাবে এর কাছে করিব বিরাল ।। র্থোনা কন স্থপতির একান্ত মনন। आंगात्त आंश्रेन कना कत्तं ममर्थन ।। কিন্তু কুলাচার্য্য সুখে শুনি ভার কুল : অবাক হয়েছি ভায়া ভাবিয়া আকুল া MIT .

মনোরমা কন্যা জন্য হব জীতান্তর। **धर्रे जना** किरत यांचे जाशनात घत ॥ व्यम् वरद्व क्वांचा (शत्व छेशाम । বৃদ্ধিসান হয়ে কর রমণীর ছেব 📭 ক্রীরত্বং **ভদ্ধলাদশি** সাধুর কথন। রমণী পরেশ ভুলা অবিধি বর্জন।। যার্ক্ত পি পরম রত্ন মন্দ কানে রয়। ্দে রক্ত গ্রহণ বিধি বিধানেতে কয়।। পক্ষেতে উৎপত্তি পদা ব্যাপ্ত ত্রিভ্রন। প্রশংসায় প্রশংসিত যতনের বন।। विभिक्त हमरी यपि मिर्ल जाया छर्। বুল শীল ভাজে বাঁধা থ 👫 তার গুণে। অত্যক্ষা রমণী রত্ন ভাষা কভু নয়। তা হলে কি যতুপতি কুজাপতি হয় ।৷ আইবড় আছে কন্যা পাইয়া সন্ধান। श्रम्पत हत्ना (यन मुखिरल आंत्रान।। বিনয় বাক্যেতে ভায় করিয়া বিদ্যা নজর বলিয়া সেই হস্তা দেন তায়।। किंद्र विषाय कति पिता अवरम् या। অভয়া ভাবিয়া হৃদে নগরে প্রবেশে।।

क्षांचे अनुस्था र क

অথ প্রা**মথের নির্দ্ধাহ** নগতে প্রধানশ ও পৌলাপীর বাটীতে অবস্থান।

পয়াব ।

क्षीनित्र अमर्ग कति एस्टबन कोज्क । मरुट्य मुल्लम सुधी कृति मार्डे छूथ 🛚 भग्ना भन्भ नवाकात डेक्स छत्री छ। না কৰে এছণ জল না পেলে অভিধি।। কার প্রতি কদাচিত কার নাছে স্বেম। অত্যন্ত শন্তুটা হেনে নির্বাহের দেশ।। मकिल व्यक्तिशा मरम वसा वसा मारम । বাসা কয়ি বন খিলিওয়ালী দোকানে।। দে রুমণী রাজপুত্তে করিয়া যতন। প্রয়োজন মত দিবা করে আহমাজন !! (গালাণী ভাহাব নাগ প্রমা**স্তন্দ**রী : নিৰূপমা ৰূপ হেৱে লজ্জিতা অপ্সৱী।। সম্ভেপ্তে তাহার ৰূপ কহিব কিঞ্চিত। অবণে তাপিত মন হবে উল্লাসিত !!

অধ্যালাপীর রূপ বর্ণন। প্রার।

বাঁকা সিভি দম্ব পাঁতি অভি চমৎকার। भृद्रभूभी (इति भूभी नित्म व्यापनात ॥ নয়ন খঞ্জন ভার সভত চঞ্চল। কিঞ্ছিৎ ভাষার নিমে দিয়াছে কজল।। নীলজলে নিলাম্বজ বেমত প্রকার। দেখিতে স্তুত্ত নাহি উপম। যাহার !! বিষাক্ত শাণিত শব কটাক্ষে তাহার। কটাকে কটাক্ষ হলে রক্ষা পাওয়া ভার ॥ उद्धल भाषल वर्ग तमिक अवीत। নিতম অত্যন্ত ভারি মধ্য স্থান স্থীণ । সাত্রর চন্ড্রার শো**ভিত্তে** তাহায়। ডাইমনকাটা মল চারিগাছ পায়।। থকতর পরোধর শ্রীদল আকার। ঈষৎ চ্যোছে নম্র একটা তাহার।। কাঁচলি ক্ষিয়া সাকে দেখিতে ছক্ষ্যা ट्य (मर्ट्यट्ड (मर्डे **जिन घर**न) घरशांठत ॥ বর্ম অধিক নয় কৃছি সারোদ্ধার। তবে যে কাঁচলি কলে দেশের ব্যভার ॥ এমনি নিস্ব**রে**শের অনিদ্ধ কথন। ভাবণে ভাবণ মাত্র জুড়ায় ভাবণ।। 🧼 🗥

त्शांनाशी त्शांनाश सूरश त्शांनात्शत तेका। मित्रानम् नाहि खाटन महाहे जानम् ॥ সহাস্য বদনে কত কথা কর ছলে (धन मने देकरण नव करन वा को मात । পথেতে পুরুষ গেলে মুগ্ পানে চায়। ছাত ভূলে গা ভাজেন কথায় কথায় 🖰 भाकान (थाकाइ छाडि कांत्रशंद्ध कन। ्ष हे करन सुक्ष १२। यह किन करा।। বাধা গুলি কহে মেন মিছরির ছবি। গ্**ভুরে চা**ভুরি করে করিয়া চাভুরি।। यमि अदन काट्य वटन कर्श क्य ८६८म । অবস হট্যা সঞ্চ বন্ধ যায় ভেষে 🛚 गठेजात्र नन्भर्गका क्षमरमा गहिल। দৰ্ক কৰ্মে নিপুণতা দততা বডিৰ্জত ॥ বাটার ভিভরে তার ভিনটি কুঠারি। প্রসংখ থাকিতে দেন একটি তাহারি॥ তার ওক্তমিকনা। নাম স্বর্ণলভা। বার বর্ষ বয়ঃক্রম ৰূপে স্থর্ণলত।।। কুরঞ্জ নয়নী অতি বালিক। সে নয়। नेबर कमन किल करता छेन्य ।। ध्यमथ निकटि (नई नर्वनाई बादक। व्यविश्वक यश्चम या नरवान छाहारक ।।

্ৰিই মত দিন কত অনৰ্থক যায় 🕩 রাঙ্গপুত্রে চিন্তে চিত্তে কি করি উপায়।। এক দিন ভোজনাত্তে নিদ্রা ভঙ্গ পরে। স্থালতা বদে আছে সমুখের ঘরেশা প্রমথ তাহাকে কন শুন স্বর্ণতা। আইন আমার কাছে আছে কিছু কথা।। স্বৰ্ণলত। আদি তার নিকটে বদেন। রাজপুত্র পুর্বর তার প্রশংসা করেন।। পরে কন স্বর্ণলভা মথার্থ জিচ্চাদি। গোলাপী ভোমার হন কি প্রকার মাসী।। পিতা মাতা কোন স্থানে তানের কি নাম। বাসস্থান এই কিন্তা স্থানাউরে বাম।। স্থালতা কহিতেছে কেন মহাশয়। व्यामात्मन शतिहर्त्य किना करलाम्य ॥ **उद्य यमि जिल्हानित्म (महे श**विषय । এ পক্ষের পক্ষে হন বিধাতা নিদয়।। বালাকালে পিতা মাতা মরিয়া সিহাতে। ছিলাম তুইটি ভগ্নী মাদীমার কাছে।। কনিষ্ঠা হইনু আমি জ্যেষ্ঠা কমলিনী। রাজবাটা মধ্যে রন সর্বক্ষণ ভিনি।। রাজার কুমারী ধিনি নামে তরজিণী। তাহার নিকটে আছেইইয়া সঙ্গিনী।। 🕾

ভালবাদে তারে বড় সঙ্গিণীর মধ্যে: ष्यं प्रश्ने न। इन एमें रह क्लू जिल श्रद्धा। শুনিয়া প্রমথ অগি নীর্ব হইল। আকা**শ** ভাবিয়া হস্তে আকাশ পাইল।। মনে মনে রাজপুত্র ভাবেন ভাবনা। সাধিলে অবশ্য সিদ্ধ হইবে সাধনা।। ভাবিয়া ঢিন্তিয়া কিছু না পাই সন্ধান। फूर्गा विना अ **फ्**र्सट्य एक कब्रि**टव** जाता।। ভাষিতে ভাষিতে মনে উপজিল হাসি। रयश्रास्त्र रशायान कर्षा रमञ्जारम भागी। चकार्या नाथमं छन। नस रूउस खरा । व्यव्हर्साद्य कोन कम्ब गम्भव न। इस ॥ তথনি রাজার প্রক্র করিল বিচার। मानी वना (शानाशीरत कर्हवा आमात ।। भामी वरम धरत चारत कति मरमाधन। আর বা কি আছে পরে কপালে লিখন। অতঃপ্র মাদী মাদী বলি যত ডাকে। শুনেও না শুনে বেটী কেবা ডাকে কাকে। কপটে কপট করি গোলাপী তথন। क कारत जाकिए (यन थाक बना मन। রাজপ্ত ভাবে মাসী কত জানে ঠাট। व्यवन क्रह्त और मिरस्ट क्राउ ॥

नाम धति मानी विल ल्या वा कि वटल। किछ गांगी निश्वताणि धरेत পाट्य बरल।। अनरता रंशानाभी मामी ताक शुक्क कहा। त्तानानी करिट्ह कथा अन्य स्मान नम् ॥ এমনি শঠতা সভী যোগ ঘটেম মন। ক্যা মাতা ক্যা পিতা পড়েন বচন 16 প্রমথের মুখে আর নাহি ধরে হাসি। শোলাপী ক্লহিছে ভোর মাসীর হৈ নানা 🕡 ভাবিয়া চিন্তিয়া পরে ফান্ত হয়ে আশা । কহিতেছে অকারণ দেওয়া গেছেবাসা ।! করাস্থুলী নাকে দিয়া অ**ধিকে**প করে। विधि कि निवह इनि चर्जीक्रमी शहर ॥ ঈশুরের কিব। লীলা মহিমা অপার। গ্রহপীড়া হলে কার নাহিক নিস্তার।। গ্রহপীড়া জন্য রাম গেলেন অরণ্য। शर्वरमञ्जू के दिन के के दिन दिना ।। গ ওকিতে কত कछ পান নার্যায়ন व्यापति प्रथेष शहकणी क्रमार्फन ।। थार जना नल दाका रन वनवानी। অন্যের থাকুক কার মহেশ সল্লাসী **क्रिमन व्यामात अब इरेल उपरा।** अर काति जक्टनंत्र निधि स्ट्यं नह।।

বঁড়ুপীর গাঁথা সাছ কেবা ছেড়ে দিল গ ঁ পিঞ্চৱৈতে পক্ষি ছিল কি ৰূপে উড়িল।। প্লাইয়া গেল কোথা ছাতের শীকার। িকার জন্ম আমোজন পেট ভরে কার।। রস্থাণত শনি ভাহে প্রথম মঞ্জ। প্র**ভাক্ত ফলিল প্**রি পেই ফলাকল ।। বাসাদিয়ে আশা করে এত দিন থাকি। म खाकि वित्रा मानी फिल पर याकि !! हिष्टि कि नारमत कथा किए भाग होति। कि करत (कारलटक (मार्ट (म (ध वरक मार्गी।) किस (वरे। भामी वरम (भारत अन्ताहित । ভথাচ না কানি পোড়া সনের কি গভি । একবার যাই দেখি বলিপোর কাছে। কিনেতে হলেম মানী পরিচয় পাছে।। উপনীত হন ষণা রাজার কুমার। इक्षित्रक कम मानी कहि नमकाता। বাদা করে পাছি আমি আত্মতে তোমার। लर्ज वाडी माहि वंध मात्री देश आभात ॥ গোলাপী নিতান্ত মনে হয়ে নিরাশয়। एथन बनिद्रभा जादन दसदह कथा क्य । ওন ওরে যাতুমনি ক্র আর কত। जामि त्लाद्व कावि त्वन त्लिटिक्टल मछ।।

জেনেছি তোমারে আমি ওরে বাছাধন। কলির ছেলেন মত নহরে তেমন।। टात मुग (एथि कुधा कुछा माहि थाटक। যে স্থান নির্থি স্থাপি সেই স্থাপে। या किन द्वारी इतन अपे श्वास इतन। যদি কিছু মনে থাকে তাপ পূর্ণ হবে।। विभिका तमनी धनी वर कारन में। उ। মাদী হয়ে ৰগা ক্ষা তথাচ পেঁচাও ॥ গোলাপী বলেন বাছা আছ করি বাসা। रामखन दकाम खारम कि कातरभ जा मा। কিলেতে হলেম মাসী ওরে যাতুমণি। পরিচয় দেও মন্তা কেবট আপনি।। প্রমথ ক্রছেন মাসী দিব পরিচয়। যে কার্য্যে এ রাজ্যে আনা তোমা ছাড়া कहिर्ला (भानाभी मानी सन भविष्य। অপ্রকাশ্ত রেখ দেখ প্রকাশ না হয়।। বিক্রম কেশ্রী রাজা পিতা নহংগ্রা প্রমধ আমার নাম তাঁহার তনয়।। পশ্চিম সুরঙ্গ রাজ্য রাজ্য তাঁহার। চরাচর অংগাচর নাহিক কাহার।। এই খানে তরঙ্গিনী আশা মাত্র আসা। कृमि यपि भूर्य कर्त्र श आमात क्यांगा।।

প্রমথ দিলেন যদি নিজ পরিচয়। रशानांशी खनिशं तर खक स्टब तर ।। पीर्यथाम ছाङ् वटल मिह्तिल अअ। আর নী করিও বাপু ও কথা প্রসঙ্গ ॥ त्म व्यामाते व्यामा वृथी इत्त ना स्मात । এ.কথায় কথ কিয় ছুট। মাতা কার ।। সুত্রীব একটা সাছে কোটালের ছেলে। , বিনা দোৰে মাতা কাটে ছুভানত। পেলে ।। প্রহরী পাইক পথে ফিরে ফারে কাঁকে। अर्डिमीत्र अर्डभार इश यकि हात्क ॥ এ বড় কঠিন ঠাই শুন বাছাধন। বিদেশে বিপাকে কেন হারাবে জীবন । অসাধ্য সাধন বাপু তোর এই আশা। বাঘের ঘবে কি কভু ঘোরে ককে নাদা।। রাজ্বংশে উৎপত্তি রাজার তনয়। রাজ সলিধানে গিলা গৈছ পরিচয় 🛭 বনবান কুলগীল তোমা হতে ছতি। ্পার নাই ভূমণ্ডলে যতেক ভূপজি॥ সম্ভূষ্ট হবেন রাজা তোমা ধনে পেয়ে। যোগ্যপাত্র বট তুমি তরক্ষিণী মেয়ে।। ্অধিনীর উপাসনা অকারণ হয়। ছাগলের সাধ্য বাছা যব সাড়া নয়।।

তোমার দাসীর যোগ্য নছে কদাচন। श्वकार्यः माधिएक भागी यह वाश्यम।। অন্তরে ভাবেন বাসা দেওয়া হলে। দায়। কি করি কি হবে বাবা ভেবে প্রার্থ যায় 🛭 কখন কুলোক আসি দিবে কুস্ত্রণা। কাটার উপরে লুন বিষম ক্রপা।। এহার কারণে শেষে নাহি রবে মান। এখনি উঠিয়া গেলে পাই পরিভাগ।। অভিপ্রায় রুকি তার রাজার নন্দন। বিতর্ক করিয়া মনে স্থির কৈল মুন।। পাইয়াছে ভয় মাদী নাহিক সংশয়। নৈর্ভার হলে কথা কেরা কারে কয় 🛭 অত্যেতে ইহারে বাধা করা বিধি হয়। বান্তবিক হাগ্য করা অর্থ বিনা ময়।। ইহা হতে হ**ইবেক কার্য্যের উদ্ধা**র। আমার কর্ত্বা এর করা উপকার।। প্রমাবিহনে দেখাকেই নহৈ বস। প্রদানা দিলে ঘরে বনিতা অবস।। পরসা পাইলে নারী কুলে নাহি রয়। পয়স। জন্যেতে কুলীনের কুল ক্ষয়।। প্রসা কারণে লোক মরে চিন্তাম্বরে ৷ পর্সা আশয়ে নীচ উপাদ্না করে।

পয়সা থাকিলে থাকে শত গুণ জোর। প্রেয়া বিহনে যত গুলিখোর চোর।। প্রসা যে হতে নাই বিধি ভারে বাম। পয়সী বিহীন হলে ভেবা গঙ্গারাম !! পরসা নী দিলে এরে বাখ্য করা দায়। অৰ্থ ভিন্ন কৈৰ্ম নিৰ্কাহ কুেখান ৷৷ এত ভাবি রাজপুত্র গিলি দেন দশ। গিনি **পেয়ে** গোলাশীর হতে হলে⊦বশ[্]ট আশে পালে চায় আর আঁচলেতে বাঁধে। **७क ठर्रक शारा यानी जा**त हरक कॅरिन त नटन व्याभि मटहाँखेंछ इदेव अथनि। নিশ্চিম্ভতে থাক ভুমি ওরে বাছমণি ॥ চে**ন্টার অসাধ্য <u>কি</u>বা আছে বাপধ**ন। চেন্টায় সাধিতে পারি অসাধ্য সাধন ।। আপনাকে পর করি মিখ্যা কথা কয়ে। সাপ হয়ে কামড়াই ঝাড়ি রোঝা হয়ে।। স্থবেথে নির্ফোধ করি কুমন্ত্রণা দিয়ে। आसूदव वानाई (७५) ठक् प्रांगिटिश ॥ অভির হরোকা ধন ভিরে কর মন। चित्र करन विरक्ष नीरन अइंड लक्ष्म ।। এই মত সত্য মিখ্যা যতেক কহিল : রাজপুত্র বোক। নয় সকলি বুঝিল।।

গোলাপী ভাবেন এর কি করি উপার।
মুখ তুলে চাবেন কি বিধাতা আমার।।
এ ঘটনা যদিন্তাৎ হয় সজ্ঞাটন।
তবেত লইব আমি এক ঘড়া ধন।।
চাহিতে অপেকা নাই টাকা দিলে শত।
না জানি ইহার কাছে আছে আর কত।।
হাসিয়া কহেন বাছা এইকলে আসি।
রাজপুত্র কন যেন মুনে থাকে মাসী।।
চলিলেন মায়া মাসী আপনার বাসে।
কপট বনিপো মুখে মৃত্ব মৃত্ব হাসেু।।

অথ গোলাপীর নিকট স্থর্গ্রালভার গমন !

পরার

গোলাপী দোকানে আসি কন স্বৰ্ণত।।
এখানে আসিয়ে নাতা শুন এক কথা।।
স্বৰ্ণতা বলে নাসি ডাক কি কারণ।
গোলাপী বলেন যাও রাজার ভবন।।
আন নিয়া কমলিনী করি মনিভার।
অস্থ হয়েছে যাত্ব শরীরে আমার।।
স্থির নয় হয় মন কিনের কারণ।
কাহার কি দ্রবা যেন করেছি হরণ।।

আর কোন কথা নাহি কহিও তাহার। কেবল বলিবে মাসি ভেকেছে ভোমার।। স্থালত। চলিলেন রাজার ভবনে। क्मनिनी चाटह यथा जतकिनी गरन।। তারে ংইরে কমলিনী প্রিয়ভাবে কয়। আছ ভাল থাসি ভাল ভাল সমুদয়।। সবে ভাল স্বণীক্তা কহেন ভাহায়। যাইতে বলেছে দিনি মানি না তেমিয়ে । অবিলয়ে চল তাঁর হয়েছে অস্থা বিলম্ব করিলে মনে করিবেন হুখ।। কমলিনী বলে আসি হইয়া বিদায়। बाष्ट्रकार। ना विलिट्टा याउन्ना १८व मान्न ।। অভুমতি হলে ভার যাওয়া হবে তবে। নতুবা তোমারে স্থর্ণ ফিরে যেতে হবে।। কত কটে কমলিনী ভর্ঞিণী পাঁশে। বিদায় হইয়া যান গোলাপীর বাবে॥ श्चित्रमधी रंगरे मधी मकरंगत हारत। বিশায় হইরা রণ এক দুটে চেয়ে ।।

ক্রেন্সীর সহিত কমলিনীর কথোপকথন। পদ্মার।

উপনীতা क्यानिनी शानाशी निकटि । পোলাপী পড়েছে বড় বিষম সক্ষটে ॥ দূতিকর্মা অদ্য ক্ষম হরেছে বরণ শীতার হরণে হর মারীচ বেষ্ণুর্ম।। জীরাম বধেন গেলে না গেরল রাবণ। छ्रे भटिक जात सहया स्वयम भयन।। निक्षनीत धन ब्यामा व्यमच्यूर्व हटल। তাহার এমন মন প্রবেশে অনলে॥ ॰ প্রমধের কাছে আছে ধন জভিলাধ। हाजगृटर जिंदिशानी रदन नरदिनान ॥ मदन कादन के क्रुना निक्के महन्। তথাচ কেমন মন নছে নিবারণ।। গোলাপীর সেই **কথা সভত অ**ন্তরে। कमलिनी नरत किছू कहिएइ अग्रदत ॥ আসিরাছে রাজপুত্র পরম স্থন্র। जुलनाम कुला नज्ञ शूर्ग नाभव ॥ गद्ध आत कर नारे अपि अक्यदा। বাসা করে সাছে বাছা আমার ঐ ঘরে 🐞 তরকিণী পাইবার আশার আসায় 🖟 কিবল রয়েছে বেঁচে তোর ভর্নায়।।

व्यात्रात्र निक्रे नव श्रान विदत्त्व। তার সঙ্গে দেখা করে বড় আকিঞ্চন।। তুরি যদি পার কিছু করিতে উপায়। **তাহা হলে** হয় যাত্র অধিক উপায়।। ভোষায় আনার কথা করিয়া স্থচন। অ**ত্যেতে শত্**ক মুদ্র। করেছি গ্রহণ।। করিলে বাসনা পূর্ণ মনোনীত লব। षमण्युर्व हरत कर्य मिस्स्यामे हरा। অমুমান করি বাছা গুরু একাদশে। অথবা ক্তায় শনি শশিস্ত দশে।। कमलिनी वटल मानी कर्तिशास्त्र मन। লক্ষার যাইয়া লবে সোণা শতখন 🕠 সাগর সিঞ্চন করে মাণিক আশায়। সৈরিক্ষ্যী হইনা বৈটী রাণী হতে চায় 🛭 বামন হইয়া চাঁদ ধরিবারে বার। অতা পশ্চাৎ ভাবেনাকো এত বত দায়।। পা**থাহীন পা**খী চায় উড়িবার তরে। काननिद्यं स्टार मानी नहा जान कदत्र॥ কিছুমাত্র এক তিল জয় নাহি পায়। क् कदत युमखनाथ क्याहरू हात ।। गदर्गत क्यांत्र रख पिट्ड क्ट्र मेंने। ज्यदनमा द्व त्यद्व इत्व नमन्द्रन्।।

I se]

পরেব্ন দেখিলে ধন নিতে ইচ্ছা করে। ভাবেনাকে। পরকাল কি ছইবে পরে।। कुर्वृद्धि पंष्टिल लाक खरेन छत्न मर्नी। কে তারে রাখিনে যেই ইচ্ছামৃত্য করে।। त्शामाणी करहन आगि वज्हे अकगा। ভূমি বাছা ইইয়াই বেঁয়াছিশকর্ম।।। वींभा एए से किश्न नड़ और बना कहा। व्यत्ना हू की नाकानुकी त्यानाकथा इस ।। क्मिनि देटल गांभी देन अन दक्मन। গোলাপী বলিছে আর আছে কি ভেমন।। भागी वटेन छाइँवटन भाग भागावात । मञ्जा आभाव इस्ट शाहरी निखात ॥ তারে আদি যত রত রেতে। তত নয়। टा हरन कि किছू हाँकी पर निस रेश। ভাহারে দেখিলৈ পরে প্রভিত্তক কত। ছাড়িয়া আপন পতি হয় পদনিত।। কানের কার্মিনী যদি দৃষ্টিপাত করে। ভাঞি কাম বাড়ে কাম মরে কাম মুরে।। যদাপি ভোমারে আমি দেখাই ভাষায়। क्लामादत किद्वादत स्त्रीन। हरेटनक मात्र।। क्रमानिकी क्रम मानी कान अदक्वाद्य। टमर्थिव देवेमन त्यहें ब्रांक्शंत कुमारंत ।।

बहे विन भवादकरङ दिश्वा अस्टाटक। **अ** क्वांत शिष्टलन विषय विशादक ॥ মার্মির নিকট আসি আত্তে আত্তে বলে। **८कमरी**म खर्जावः हाँ म ष्याहेन कुंठरन ॥ े কথন যানৰ নয় রাজার নদ্দ। (मवर्षा शक्कर्व (यन एक्न मग्र मन ।) नम्रम जूनिन अहे (हतिया नम्म আশার কাননে এইছ হারালেম সম্পা ग्रद्धांत्र (कांशांनदल यमन निधन। পুনরায় কেবা তার করিল ক্ষন ॥ 🦠 ভরঙ্গিণী কাছে যেতে বলন। আনাম। मानी इरम भागी आमि मिविव उँशास ।। পায়ে ধরি মাসী শীঘ্র চল একবার। উহার নিকটে যেতে বাদনা আমার 🛭 পুৰ্বেতে বেমন মন ছিল ওগো নানী। कि अञ्चरश किन मन इर्हेल छेनात्री।। लानाभी विलाह (विर किन्द्रिं। अञ्चर्या व्यात्मानान. त्मरथ दुवि (७६) हुत्क यूथ ॥ চল ভবে যেতে ছৈল তোমার কারণ। नजुता श्रीमात देशान नाहि प्रदेशायन।।

ক্ষালিনী সমিতার প্রমধ্যে নিকট গোলাপীর গমন।

পরার।
কমলিনী সমিতারে গোলাপী তথন।
উপনীতা হৈলা যথা রাজার নন্দন।।
রাজপুত্রে গোলাপী কহেন হেনে হেনে।
যার কথা শুনিয়াছ পশ্চতে দে এনে।।
সকল হলতে বল নব এই জানে।
আমি বাছা কেনা বেচা করিগে দোকানে।।
বিদায় হইরা যায় গোলাপী তথন।
রাজপুত্রে কমলিনী কথোপকথন।।

-

প্রমণের সহিত কগলিনী**র কর্মেপি**কথন।

পরার।

প্রমণ করেন প্রিয়সখীর গোচর।
তর্জিনী কথা কিছু করাও গোচর।।
ত্যভমাত্র তার নাম সংকশ্পিত হয়ে।
হইরাছি সর্বতানী যোগধর্ম লয়ে।।
তাভালা করিয়া তাজা এ রাজ্যে এসেছি।
বিকাশ্য নির্দাণ্য বিনে অবৈশ্য হয়েছি।।

আর কি ত্যজিব বল বাকি কিবা আছে ৷ সবে মাত্র বাকি প্রাণ তাও তার কাছে।। आपहोन भूना ८५८६ थाका अकार^न। কেবল আশার মতি রয়েছে জীবন। আশাতর রক্ষয়লে করিয়াছি বাস।। কলিবে রক্ষের ফল পূর্ণ হবে আশ।।। নিশি দিন ভেবে ভেবে স্পন্দন রহিত। এমত নাহিক কেছ করে **বেশন**াইত।। वादिश्रा मतावत कलश्रा भीन । (यमनक्रियंन कर दुक्कल होन ॥ তক্রপ আছি যে আমি ভাষার কারণ। শরশধ্যাগত যেন ভীম্মের শয়ন।। এত দিন আছে প্রাণ এই সে কারণ। কেবল পতন বাকি হতে উভায়ণ।। সেই এই উত্রায়ণ নাহিক বিশেষ। महिन का कार्टिन सह उन्त व्यवस्था ।। তোমার আশয়ে প্রাণ রয়েছে আমার। असारे अनात किया हरेत मरशह ॥ कृषि यात थियूनथी (मधन क्यान। ৰূপ গুণ ভার কিছু করাও অবণ।। कमलिनी बटल अने शालात क्यात। ৰণ ভণ ৰলা তার অসাধ্য আমার।

কিন্তিত কহিব ৰূপ গুণ যাহা জানি। গুণের নাহিক দীমা উপমায় বাণী।। ৰূপের বর্ণনা তার বর্ণিবারে নারি। তবে যে বর্ণিব যত পারি বা না পারি॥

তর ক্লিণীর রূপ**র**্বি ।

পরার ।

कुछन कुष्टिन छात्र नाहि यात्र ४ऱा। অভিপ্রায় করা যায় ধরা পায়ধরানা বিনাইয়া বেণী ঘদি তাহাতে বানায়। ভূতলে ভু**ৰুক**্ষে**ৰ ভ**য়ে**তি** পলায়।। हित लाई कुत्रक्षी दिन प्रसूरान। **छन (म**उस व्यवस्य काम **पनुस्रक**ा 🖰 नग्रन गुराम स्ट्रिंट करेंगक नेकान। কটাকে বধিতে পারে জারিলে সজান।। হিলোল ভাহায় কত নাছি ইয় লেখা। আছমে ভাষার কাছে স্থান্য রেখা।। ক্টাকের কোণা ভার স্বান্তি বিষময়। বিশল্যকরণী হলে কেতন। না হয়।। আর কার করা ভার তার প্রাটকার। তাহার ঔষ্ধি মাত্র নিকটে তাহার ।

ওষ্ঠাধর পক্ষবিদ্ধ দেখি লক্ষ্য পায়। পিঞ্চাত্ত জিনি মাদাগক্ষমতি ভায়।। হেরিত্বা তাহার মুখ অধোনুখে বসি। অভিমানে হইলেন রাছগ্রন্ত শশী ॥ क्रमञ्ज प्रतिदा जारम विकार कमल। গুরুতর পরোধর শোভিছে:যুগজ।। 🎒 ফল দাড়িম্ব দর্শ থর্বর তার। করে। **দম্ভভাবে আছে** বসে কাঁচলী ক্রিতরে।। किছू मांज थुँउ नारे श्रमंश्मा नक्ति। विक्रने शिखन पिट्ट इन्श्रटकत कलि॥ পত্মের মৃণাল যেন হেন ভুজনঃ। নিক্ষলন্ধ নিশাপতি নখেতে উদয় 🔢 কটিদেশ ফীণ অভি জিনি মূগপতি। নাভিমুক হলে আছে কামের বসতি।। ত্রিবলী বিরাজে সাজে তার কৃটিদেশে। নাভিকূপ বেতে ক্লাম দে পথে প্রবেশে ।। **নিতম** অত্যন্ত ভারি যেন বস্থলরা। যত্ন করে ইরিলেও নাহি যায় ধরা 🖟 क्षा कथन यपि (मध्य मख हाडी। उथनि जॉकरव थान इस बाजवां ।। করিকর জিনি যেন তাহার জগন। ुज़्नोत्र जूना सारे गर्स छनकन ।।

অভবেতে নিরম্ব কত ভাবে ভয়। লিপিখানি তরকিণী হতে দেওয়া নয়।। মরে ছুঁড়ি ধিরহেতে স্পক্ত নাছি কয়। হিতচেটা পেতে পাছে বিপরীত হয়।। যতলে প্রিকা লয়ে যান মার্পানে। क्षा भुक्तम भारत मार्ग जाल खाइन ॥ প্ৰকল্প উপত্ৰ বাবেখ ৰাগিলখে। পাৰেশ : स्वस नगरेत (त्स शोस जनाइ)(तः ।) ि भिन्नति जियमनी याम प्रतर्शते । বেই ভারে বাজনুত্র সহ সহস্কী । উপ্নীত বহুৰ জন্মা ভুইল। বিশ্বর । डिमामिनी अविकरी किति कतन क्य । क्रमिकी गहति कम श्रीक खनकर । कि अस्ति जुल खिक्ता क्षकरण भग्न ।। স্থী সং যেন সর বিশাদিত মন। अस्टल का**किएल कथा बृद्धां दकान** एन ।। ভ্রক্সিণা প্রভি শ্রী কম্লিনী ক্য়; कि छ्रांचाट फ्रांकी यान छ्राधित छेमग्र। निधुत्रथी जलि द्रशी ३० ३९ कर। যে দুখেতে তুখী আমি কে করে এবং নিশি শেযে নিজাবশে দৈখেছি স্থপন ! তদব্যি চিত্ত অভি আছে উচাটন।।

THE SUPPLY

ভোষের নিকটে নথী বল্লে বলা যায়। প্রতিবাদী হয় লক্ষ্য কি করি উপায় ।। जधौनन कुन कुन हाजात मिलनी । তোমার নিকটে থাকি যতেক দলিনী । তৰ ছুংখ দুখা হই সংগ্ৰাহা ধা'ক। अर्थका के वर्ग ३६ज शबु करहे एर्कि 🖖 अञ्चलाह्न मधीनत्व द्वांदाहा स्म कांद । প্রকাশ করে না গদি ভাবে ভিন্ন ভাব ! क्रमालमी मंत्री जात धिश्र जमा दश **ब्हर**न दहरन कोरह नरम वहर**मा**रल करा। লজ্বার অধিক প্রিয় বামরণতে, নং । । एक क्रीट हर एक भार ब्राप्ट क्रिया আদর করিয়া নিজে নয়নেতে স্থান। এখন ভাষালে বল করিতে প্রস্থান।। (म वीकिटन कांत्र महत्र अले) वश कता। একায়ের কায়ি নয় প্রক্রা মহাশ্য 🖯 নিদয় হইয়া তারে করহ বজন। ভবেতো করিবে কার্য্য যাহা লয় মল । তর্জিনী কন তার ভয় নংহি ভাষ **उर्थागंक इटल** खान कि करत नजार ।। **প্রাণের অধিক জার কিচুমাত্র** ময়। তাহারে যাতনা দেওয়া উচিত মা হয় া 🕆 তথ্নি লক্ষার প্রতি প্রতীকার করে।
একেবারে পাঠাইল দেশ দেশান্তরে।।
লক্ষা গেলে হেসে বলে আমারে কি হলো
স্থীগণ সবে কন স্বপ্লকণ। বলো।।
রাজকন্যা আরম্ভিল, স্বপ্ল উপাখ্যান।
লক্ষিরা সমূধে বনি করেন প্রবণ।।

-04 0 H

ভর্মিণ্ডি কথা উপাধানি।

TATE !

নিশি খেলে নিজাবশে দেখেছি ত্পন।
গালকে নাম্ছা এক পুরুষরতন।।
ভঙ্গীক্রমে জানাইল কথার আভাবে।
লাসা কলিলাছি আমি গোলাপীর বাবে।।
প্রমথ ভালার নাম দিল পরিচয়।
থেভিপ্রার কানা গৈল রাজার তনয়।।
দেখিলে কুমার অভি পরম স্থানর।
ভালার কারণে দহে বিরহে অহর।।
ভাপনার বশ নহে থাকি নিজাবশ।
পরবশ পেয়ে সে যে করিল আকোশ।।
ভাবিলারে মিগ্রুনেতে হলো সভ্বটন।
রাজ্বনা ন্হিল রভি হোর চন্দানন।।

একা পেয়ে রত হয়ে করিলেক রত। कछ कथा कहित्वक कहित छ। कछ। নিদোৰশে আমাৰে যে প্ৰেয়ে অচেতন ! বিশ্বাস্থাতক হলো রাজার নন্দন।। मुष्ट्रार्टरक (न कामारक कतिल व्यवस् । ৰশেতে পাইলে আমি ভাৱে করি নশ। কি ক্ষণে স্বপ্তন আদি করিল মিলন্ন ধরিতে চাহিতে চেয়ে না দেখি দে জন ! टार्यात मा (रुत्त श्रांत मट्ड कांगाम्ब्स) শীতলু না দয় যদি প্রবেশিব জালে।। স্থীর। দকলে তারে হুঝাইছে নীত। উচিত লা হয় হলে এক উৎক্ষিত।। विकाद्धित जाती सम्बद्धिय अनाभ । সেই মত রাজকনা। করেন বিকাপ।। শাধ্য কার ভাবে আর নিবারণ করে। **डिग्रंड ३३३। यान आंश्रनांत घ**रत् ।:

প্রমথের পত্র তর্ষিণীর প্রাপ্তি।

পরার ৷ 👈

প্রবেশ করিয়া ঘরে রাজার নন্দিনী। অভিরতা অতিরিক্ত যেন উন্নাদিনী।। " 35% ·

পালঙ্ক উপরে পড়ে বিযাদিত মন। पृचिमात पृचि रस श्रमथ लिथन ॥ পড়ি পাতী রুমবতী স্থীগণে বলে। তুত চেলে দিলি কেনো খুলস্ত **খনলে**।। অন্তরে জ্বলিছে একে মদন অনল। পত্রিকা পড়িয়া হ**বে**৷ **দ্বিঞ্**ণ প্রবল 🕕 व्याज्य रशमी वाला भवीन व्योवनी। शुक्रस्वत आश्रामन मोहि जारन धनी ।। স্বপনেতে কিছু মাত্র পাইয়াছে রস। **उन्दर्धि विधुमुरी नरह निज तम** ।। , শরীর **কম্পিত অতি যেন কম্পে**ন্যুর। রসহীন হয় শুষ্ক বিষ্ণ ওঞ্জার।। জালার উপরে জালা নহা নাহি হয়। কে কোথায় ছেভে দের পাইলে সময় 👭 হেনকালে পঞ্চার করে করি শর। অনুচর নহ এলো লইবারে কর।। আহা উহু করে ধনী,স্থির নহে মন। মুডনে নবার আজি কহিছে মনন।। करिंधी इहेन दफ ताकात निक्रमी। দিক্ছারা কিন্তু যেন দক্ষা কুরজিলী।। তর্ম্মিণী কমলিনী করে ধরি কয়। 💎 তোসার আমীছ পত্র এই চিত্ত নয়।।

ভূমি কি দেখেছ তারে কহ ধত্য করি।
প্রবঞ্চনা করোনাকো করিয়া চাজুরী।।
স্থপন অন্যথা নহে হয় কদাচল।
তোমার মার্গার বাটা আছে দেই জন।।
কমলিনী কন কভু না শুনি শুবনে।
চাকুরজামাতা আছে মার্শার ভবনে।।
কিন্তু এক রাজপুত্র এসেছে এখানে।
চাকুরজামাতা যদি জানিতাম দিনি।

হলে কি ভাঁরে ছেড়ে আদি একাকিনী।।
তাহার চরিত্র দেখে হয়েছি বিশ্বর।
তেমন নাহিক নিলে ভলাগিলে শম।।
সে জন সুজন বড় ভার বড় নাই।
প্রতিজ্ঞা করিতে পারি করিয়া বড়াই।।
কটাগৈতে ভার পানে কিরালে নমন।
নমনের সাধ্য নর ফিরে কদাচন।।
আনি নেই মেয়ে ভেঁই আদিয়াছি কিরে।
অন্য মেয়ে হলে নই সেই খানে কিরে।
কেরে কারে এসে ফিরে হয়েছি ফাঁফর।
কিরে যেতে ইচ্ছা করে ভাজ্য করে ঘর।।
দেবতা কিরর নর না জানি সে জন।
কি হলে আইল হেথা কিন্তের কারণ।।

্ব্ৰাণ্যালা কন তাবে দেখিতে কেমন। ক্মিলিনী কন আর আছে কি তেমন।। তাহার কপের কথা নাহি হয় শেষ। অবশেষ হতে পারে যদি কন শেষ।। নবীন বয়স অতি কুভক্তিম ঠাম। দ্বিমাত্র কামিনীর উপজ্য কাম।। হৃদি মধ্যে আদ্ধাদিত থাকে প্রোধর। কীচলি ছিডিয়া রাগে মাগে ভার কর।। রুপনা রুপনা চায় বাস্থা এমন। ইচ্ছা করে যেচে ভারে দিতে আলিক্সন্ অন্তরেতে থাকু অনা অকথ্য কথ্ন। ভারে পেলে যাচে রভিকাভির কারণ।। < इतिरल रम **रुक्षानम** रैंडन मदन नग्ना। ं निश्दत् क्रमलकली जनकष्ण श्रा ॥ তাহারে যে । দথে নাই সেই জন বলে। मनम मद्रदङ् श्रुद्ध इत्रद्भाभानात्न ॥ केंगेटक वाद्यक यपि इश विद्याक्र । भिनन ना हत्न (यन पश्च इत्र मन।। मदनत भानम कहि क्ष्म व्यादक व्यादक । আমার বাসন। নয় তারে ছেড়ে আতে।। नानी हट्स दावि **काट्स अकास**्समन। 🕝 তোমা ভিন্ন জার আর অন্যে নহে মন।।

कमलिनी बाहनिक अनि दम बहन রসবতী রমণীর মন ওচাটন।। অবিয়ত ভাবে কত মিশি দিনাবৰি। অন্তঃশীলে অবিশ্রাম জিনি কল্প নদী !! তিলেক না দহে বাজে দেখিতে বাসনা : क्रमालिमी वर्ल भट्व अथर कृष्ट्या ।। তর্কিণী কমলিনী প্রতি পুনঃ ভাগে : একবার মাও স্থি গোলাপীর বাসে । প্রভান্তর লিপি ভারে চইবেক থেতে । ভন্ন ব্যৱস্থা হ'ল ৰাজিকে সক্ষেত্ত । गटकाश्वरम श्राष्टि करता करलाश्रद्ध जिट्ट । विभाग गाम गाम जामाद कि कि कि व স্বপ্নবোগে সে ভোমাকে করি দরশম 🐬 'মর্পণ করেছে দেহ জীবন যৌবন।। आत कि कहिय किছू गरन ना गुप्ताप्त । উপস্থিত যে বিহিত স্থধাৰে ভাহায়।। এখনি লিখিব লিপি ন। ছবে বিলয়। कर्माननी जुमि माळ १७ अवशय ॥ শথি বলে নমকার পিরিতের পায়। যাচক হইল নারী মরি যে গুণায়॥ महाता क कुलिटनन हटा त्रीकटला । তীহার প্রতিজ্ঞা বুঝি রৈল শিকে ভোলা।। পত্ত ভারে লিখিবারে বৈদে রাজ্বালা। কমলিনী কন রাম যুড়াইল জালা।।

তরঙ্গিণী কর্ত্তক পত্র।

ভিপদী।

ভদবাধ মম মন, হইয়াছে অন্য মন,
স্থপনে হেরেছি যেই রাত্র।
যার জন্য শিবক্তে, করিরাছি অবিরত,
ভূমি সেই আকাজ্যার পারে।
ক্যান্দিনী যার তরে, সেতো নাহি মনে ক
আমি নিছা ভাতিল কি হবে। "
গুণমণি গুণে মন, নাহি মানে নিবারণ
বেপর্যান্দ মিলন না হবে।।

उर्वभनीत भन्न महेश्रा कंगनिगीर क्षमांशत निकटि गा

পরার।

পত্র লয়ে কমলিনী পাইরা আশ্বাস।
রাজার কুমারে গান করিতে উলান।।
নথী অতি ক্রতনতি ক্রতিক হরে।
পত্রিকা লইয়া যান রাজার আলুয়ে।।

मिश्रि शक तामभूख चांछ उत्तरिक। आखारम आदिवर्भ मख भवीत किन्निए। প্রত্তক্ত করে প্রাণ কোথা নাহি তির্চে। न्थान्सन इहिल इरस तम अक पुरसे 🕕 পুলকে পূর্ণিত অল আত্যন্তিক হয়। े**ककर्थः गरन** चार्ति चार्त्र कथाः तस्त्र ।। সহচরী প্রতি কথা কন মৃত্যুরে। সঘনে নিখাৰ অতি খন্মন লৱে ৷৷ वाधिक कहिरल दुमि गाउँ कीवन। 🎫 যাতা দিব তাহা করিলাম প্রণ।। কমলিনী কন আছি কিছু নাছি গঠ। ना आहि अमन बांत किए पिनि गहि। वाक्यकना वानुखारम् नास्ति वान्त्रातः ঠাকুরজামাত। মাত্র না হয় আভাব 🕫 थांना चंद्य त्यम डाट्य ना म्य वाजना। সমভাব থাকে ভাগ এ লাভ প্রার্থনা।। এই মত হয় কত কথোপকথন। অন্তগত দিবাকর নিশি আগসন।। कमिनी कंत आजि हरतम विष्रांश। तांभथूळ कहिरलम कि हर्त जेशांत ।। गर्वती कत्रशुष्टि (रहम दहरम कता। या हतीत इति कालि नोहिक मंश्रामा

প্রমথের নিকট ছইতে ক্মলিনীর প্রত্যাগ্রমন চ প্রার (

ররেছেন তর্ক্সণী যুবরাজ চেমে। ভীর্থের কার্বের নাায় গরাক্ষেতে চেয়ে । कृषिक हांककी यमि दश्दत ननचरन । পিপাস। কি শান্তি হয় বিলা বরিষণে !! **ठा**जिक्नी स्टब्स दनसे बाक्क कमा तस । বারিবাহ রা**কপুত্র কবে ব**রিব্য । হেনকালে কুমলিনী আসিয়া তথায়। তব্যিকী দলিংবনৈ নকল জানায় ৷ ৮ শুন ভাগে রাজবালা কবি নিবেদন। পিবিভি না হলে অত্যে বিচ্ছেদ সমান।। দেখিলাম রাজ্যুতে এমত প্রকার। কারিমধ্যে **ছারা যেন তেমতি আকা**র। বায়ুরূপে **ওুমি ভারে** কর ছিন্ন ভিন্ন। ছায়। बारल ताकशूल हुई ग्राट्स भीर्ग ।। कर्त ब्राइ कर। माई मन पना मन । তোমার বিরহানলে দহিছে জীবন।। ভরঞ্গি বলে স্থি ক্য কি তোমার। চলিতে চরণ ভারি বল নাহি পার।। कामीनेटल मक मन मन मना नक्कर्न। ष्टिलेश यांचना हत्या अ कथा **भारत**्य ।!

व्यदेशी हरति विकि देशी मरह मरन क्ति नाहि इत्र थान डाहाति विहटन।। যৌ**বনে মদ**নজালা সহ্য নাহি হয়। বিনা রতি কি ছুর্গতি হলেম সংশয়।।। আপনি মরিয়ে পুড়ে অনোরে পোড়ায়। " निरादा अङ्ग त्यन गर्की कर्ट्ड छात्र ॥ রতিপ**তি**্চাহে রতি কুচ চাহে কর। পাব কোথা ভা<mark>রাও তা জানে</mark> পরস্পর ।: বুৰোও বেংখেনা কন্ট যত হৌক পর। र्जिनमा किरिन कि. कर अंत्र श्रेत ॥ সুসয় গাইয়া **দ**ৰে সাধিলেক বাদ i মড়ার উপরে খাঁছে। একি প্রমাদ।। প্রবল মইলে জালা মিদ্র হয় জলে : এ জ্বালা কেমন জ্বালা জ্বে **জার** জ্লোন करन करन स्मात् इत्र करनदक (हजन। উত্তর সমান প্রশার বৃচিন মরণ।। দীর্যস্থাস ত্যাজি কয় নৃপতির বালা। विमा कांग्र कि कुंडोंस मा यूफ़ारव कांना। আন্ধিবেষা এনে দিতে পারিবেক তারে। যাহা চাবে কহিতেছি দিব আসি ভারে !। क्दब्र भटत देनतिकीटत श्रुका लटा पाटि । বির প্রক্রের কেনা রব ভোমাদের কাছে।

बार्ठती ठाताठाति करत शतलात । অকেবারে বাঁদির কি হলো কুরুপর।। স্থিগণে সকলেণে কর্যোড় করি। কহেন বিনয় বাক্য চরণেতে ধরি।। আমরা তোমার দাসী ভোমার অধীন। অবিহত অনুগত আছি নিশি-দিন্দা मामीदा विनटि मामी अरेड উচিত। বিনামূল্যে কেনা বলা **অতি** অমুচিত।। **उत्रिक्षिणी कन मात्र श्रद्ध व्या**। বিনামূলো কেনা তার বড় কথা নত্ত্বা। ইহা শুনি কমলিনী কহেন তাহারে। অদ্য আমি এনে দিব রাদীর কুমনের 🔢 এমনি আনিব ভারে প্রার গোচর। नकरनत पृथ्य हर्त हरव ना र्शाह्त ॥ হির হও মেওয়া কলে সরুরের রুকে। এ বিষয় কভ জনে দিতে পারি শিকে।। অত্যন্ত উতলা হলে কিছুই ন। হয়। ধৈৰ্য্য ধর বাজকন্য। ব্যস্ত বিধি নয়।। যাত্ন পাইয়া ধনা যাদিনী পোহায়। त्मई थारन युवताक এই व्यवसाय।। े कार्यानट्ट गर्ककन स्टल्ट्ड मोस्न। স্থির নয় ব্যাকুলত। উভয়ের মন।।

দিবাপতি জউপতি নহে অবসান। রাজবালা চাহিংবেল। হন ভিয়মাণ।। **जराज्ये तर्द रंघन त्राजा कुर्याग्यन** । দিবাকর অনিবার করে নিরীক্ষণ ।। তেমতি নিরখে রবি রাজার মন্দিনী। স্থির নিয় জনে যেন মন্ত সাত্রিনী। মনকটে কোপদুটে চাহিয়ে ভাষ্করে। রান্তগ্রস্ত হও বলি অভিশাপ করে॥ खेतुः त्यात्र श्राष्टि कन करूना वहन। কেবলাওহে দয়াময় বিপদভঞ্জন।। আপনি কোথায় তব কোথা স্থদর্শন। কপা করি রবিকরে কর আচ্ছাদন : অর্জ্রনে হাথিলে প্রাণ জয়তথ বধে। দাসীরে করছ ত্রাণ দিবাকর বধে।। অদ্যকার দিনা হলে। তেমতি প্রকার। ना रहेरल विভावती व्याटन नौहा जात ॥ কোনখানে আছ বাপু অঞ্জনা কুমার। বধ ভান্ত ওরে হন্ন বাঁচিনেক আয়।। वियान करिया क्रम मधीनन कारह । বোধ হয় আজি বড় বেলা বাড়িয়াছে !! नशीनन वटन वटि चल्रमान नम्। शक्त रहेल छात अबि मन इस ॥

সরুকে কেনেড়া দোহে একই সমান।
গারজ হইলে হতে হর পুনাজ্ঞান।
রাক্তনা কর একি উচিত কথন।
কাটাঘার হুন দিয়া করা জালাভন।
এ কথা শুনিয়া রক্তা পেরে সথীগণ।
নম্রখ করি কহে না কহ বচন।
ক গলনী কন বাণী ভরঙ্গিণী আগে।
অনুষ্ঠি হলে যুবরাজ আনি আগে।
রাজস্বতা কন শুভকর্মে দেরি নয়।
এনো এসো প্রিয় বিভাগ নাক্তরা।

-

क्मलिनी स नवन्छीत्रांत्र अवस्थित निकटी ध्यम

পরার।

কমলিনী কন সব সধীর গোচর।
কে যাইবে সমিভ্যারে আনিবারে বর।।
সবে ভারা চেয়ে ভারা কহেন বচন।
কমলিনী সঙ্গে ঘাহ শোলালী ভবন।।
উল্লাসিভা হয়ে ভারা কহেন ভখন।
মানিবারে যাব ভারে আমার মনন।
সকলের অমুমভি লয়ে ছইজনে।
প্রণাস করিয়া রাজবালার চরণে।।

চলিলেন ক্মলিনী আর সেই ভার।। তারা তারা বলি যাত্রা করিলেন তারা।। গোলাপীর নিকেডনে হয়ে উপনীত। দেখা নাহি করে তারা তাহার সহিত।। আগম নিগম পথ কম্লিনী জানে। 🤫 यदवर मकानि हरेल कि काब मकारन ।। এক্ষেব্রে উপনীত **হইলা জন্দ**রে। রাজপুত্র বাসা **করে আছে যেই ঘরে** 🔢 তুই কলে মনে মনে হঙ্গে **আনন্দিত।**ু तालशुक मनिधारम इन डेशनीड।। দে**থিলে**ন যুবরাজ জাত মনোস্থানে। স্থারে আহেন বদে বি**ল্পত্র সু**থে।। প্রবীরণে নির্**থিয়ে রাজপুতা কন।** প্রথম ভাগাফ্রমে হল আগম্ম ॥ ভাবে বুঝি হইবেক আশার সকল। অক্সাং প্রাপ্ত মের আকাজ্যার এল 🕧 नशरन या राजि नाई ना श्रीन खादरन। এমত অদ্ভূত কর্ম হয় কিকারণে।। অতঃপর বাঞ্চাসিদ্ধি হইবে নিশ্চয়। देनटन क्न कमिनी निर्माटक छेनग्र॥ रुके हिटल बाज शूटल कम निनी वतन। यक्त कविद्या द्रम् व्यक्तारमञ्ज करण।।

তহি त श्रेष्ठाक यसा कनित्रक करा। আকিঞ্চন ক্ষাতিত না হয় বিকল।। যাহার যে জন প্রতি নিতান্ত মনন। তাহার নৈরাশ নাহি হয় কলাচন।। ভার পক্ষ এই বাক্য নছে কলাচন! বামন হইয়া যাব চাঁদে আকর্ষণ। সম্প্রতি মিনতি এই চরণকগলে। भएएक मा इटल कर्या करत याव वरल ।। মহাশয় ভাষিনীর। নিবেদন করে : ছ্কুম**্ঠা**কুর্বির ধাইতে সত্তরে ।। . সক্ষোপনে কহিতেছি শুন বিবরণী করেছেন রাজকন্যা ডব আবাহন । প্রস্থ ক্রেন সন্ধি করিব কি কাম : कर्मालनी कम बीख माज माती गांध ।। প্রমণীর বেশ ভিন্ন না **হবে** গমন। অংমি যাব সভে ভারা রবে নিকেতন ॥ রাজপুত্ত কন **রাজি যা বলিবে তার**।-কোন মতে দেখাইতে পার যদি ভাষ।। कंगलिमी कन एटर ठांकुत कामाने। ফুলেতে লাগিল ভরী স্থার দেরি নাই।। ছাইয়া তারার তারা বস্ত্র আভরণ। রুসরাজে রুসবন্ডী করিল তথন।।

রহেন নয়নভারা প্রমথের দরে। গোলাপীর অংগাচর এই কর্ম করে। ভারা ভিন্ন ভারা অন্য না পান সন্ধান। কম্লিনী সমিভাগের প্রমথ প্রস্থান।

USPA STA

जम्बिनीद भगिसाद उद्धिनीद सिक्षे शर्मास्यर गण्य

প্রার :

ক্ষমিলিলি পেতেখ করি প্রাক্তার নক্ষম : ইউর্লিম্মতার। পশালৈ সম্লা लवारी खादमा छात खाति भरग गरम । নিক্তয়েতে উপনীত বাজান ওবলে।। কুলুমকান্ট্র ভারে রাখিয়া গোপেনে। कर्भागनी कन विशा एपिनी गटन । 'বানিহাছে রাজপুত্র শুন সতং বাণী। **অমু**মতি হলে তথ সহিসাদে লগানি।। শ্বীর। মকলে শুনি ইইয়া উল্লাস। सा**नाङा** ि भूष्ण चारत क्रिशा उलाभ ॥ প্ৰকাৰ্য বিবাহ আহে বিহিত খেমন। ভাহার সকল দ্রব্য করে ভারের ।। अर्गावङ भूष्णमाना जटनीव्रहमान । रुदिना कुरूम नेगा हत्त्र अकेमन ॥

আতর গোলাপ চুয়া স্কবাদিত কত। 🥞 যতন করিয়া আনে সহচরী যত।। প্রাইতে মেঠাই মগু। নানা মেওয়া ফল। আঙ্গুর আনার পেস্তা স্থাসিত জল।। করিয়া বাদর সজ্জা স্থীরা সকলে : তর্কিণী প্রতি পরে ছেসে ছেসে বলে।। সেজেছেন যুবরাজ রমণীর সাজ। ভো**মা**রে থাকিতে হবে হয়ে যুবরাজ 🙃 একবার একত্রেতে বসিবে সে বেশে। পশ্চাৎ করিহ কথি। যাহা হয় শেষে॥ শুভকণে শুভদৃষ্টি দৃষ্টিপাত করি। पुर्वात गरमत छोत। तर तक्ति ॥ ভর্কিণী মনোনীত হইল সে কথা। क्ये द्वानिया नसभूथी अर्गलेखा ॥ অনুভাবে দেই ভাব বুঝি সখাগণ। সাজাইছে মনোমত পুরুষ রতন।। কাটাও পোশাক দেয় পাজামা চাপ্কান মাধায় দাচার ভাঙ্গ হীরার নির্মাণ।। কোমরে কোমর বন্দ ইন্টাকিন্পায়। মাণিক অঙ্গুরী করে বেণারদি গায়।। कर्तित कुखन तिम तक्षमित मह। कि शूक्ष कि श्रकृष्ठि पृष्टिमाञ नह।।

তিলেক বিলম্ব নয় হয় শুক্র সুগ্ন। কটাকে হেরিলে কন্দর্পের দর্গচুর্ব। করিয়া বাসরসজ্জা হইয়া সহর । क्मलिनी हिलादन आमियादन नत्। ওখানে রাজার পুতা কুরুম কাননে। निकास निमध हरस तन घरठल्या ॥ गन्म भन्द हलांहल कतिहरू प्रवन्। নিবিধ্যেতে নিক্রা যান রাজার নক্ষন।। কনলিনী গিয়া তার পালক্ষের বাবে। কন্ত কেন্দ্রী করে নিজা ভঙ্গ করিবারে ॥ ्कानगरक ब्राक्तश्रुराख नः इस ८०**७**न । তর্জিণী কাছে আসি ক্মলিনী কন্য রাজপুত্র রয়েডেন নিজায় গোহিত; নিডাভঙ্গ তার নাহি হয় কদাচিত।: ভাই ফিরে আইলাম দিতে গো সংবাদ। এত সাথে বাদি হয়ে কে সাধিলে বাদ।। অবাক্ হইয়া দবে পাইলেক তাদ : কেহ কয় উপদৰ্গ হয়েছে নিৰ্ঘাদ 🔢 কমলিনী পুন যান হয়ে অতি ছখী : अधारञ्चरमनी मटक जात हत्समूथी।। রাজার তনয় যথা হন উপনীত। দেখিলেন যুবরাজ নিজায় মোহিত।

ভাকাভাবি ঠেলাঠেলি কত করে ভারে। নিক্রাভঙ্গ নাহি হয় কোনই প্রকারে॥ मधी गटन छूबी घटन भून गिक्का किएत । তরঙ্গিণী প্রতি কন বাসর মন্দিরে।। শুন ওগো রাজবালা করি নিবেদন। না হন জাগ্রত সেই রাজার নদন।। শুনিয়া রাজার কন্যা হইয়া অধরা । নাহি কথা মুদ্র**ালিত। হরে পড়ে** ধরা।। महम श्रदेश न्त्रित न्यानम्म त्रस्टि । মৃত্যপ্রায় অভিপ্রায় নিক্ষাস বঞ্জিত 😃 मधीता नहेता दलातन कतिला यलन। বছ পরিশ্রমে তাঁরে করিলীকেতন ।। टेड्डिस পार्टेश त्थरन कर मिलाल ; এত ডঃখ দিবে ছিল বিধাতার মনে ।। केटेफः सदब किरम नरम भवान आबित। शृषिकी विभारत यमि छाट्ट श्राटनिक ॥ এ ছার শীব্রে আস নাহিক আমার। প্রাণনাথ বিনা সব দেখি অন্ধকার।। कुळूम कानन दूबि इहेनदा कान। हेरकान मकारेनि भाग भारकान ॥ মননে মানদে যারে ভাবিশাম পতি। সে বিনা জন্মেরে ভঙ্গে হইব অসতী !!

नक्षमान वाक्माभ ममान छेलस । इहात अमाथा हरल धर्चा मरे हरा।। व्यर्भन करत्रि गांदत शीवन व्यीवन । त्म दिना कीतन धड़ा दूथाई दौहन !! অপরাধি হইয়াতি কালিকার প্রে। मङ्बा कि अ दिशम घटें शटन शटन।। বিলাপ **করিয়া বর্কে** করে করাঘাত। তুনয়নে অবিরত হয় অশ্রন্পাত।। ातिलान गाहि हरता अ (घात महरू ! এখনি ভাষিব প্রাণ তাহার নিকটে।। আম্মি চলেম বং! রাজার নম্ব। স্থাগণ পশ্চাতেতে করিলা গমন 🖽 দেখিলেন রাজপুত্র নিদায় নিভর। তর্জিণী বৈদে তার পালফ উপর ।। হেরি তার চন্তানন করিয়া রোপন। কহেন তুখিনী জন্য হইলে এমন।। বিধাতা বিমুখ বুঝি হলে। এত দিনে। কেমনে ধরিব প্রাণ ভোমার বিহনে ॥ অধরে অধর দিয়া কানে উভর্য ৷ মুখামৃত স্পর্শে তার নিজাভগ হয়।। চাহিয়া দেখেন অতি গভীর রঞ্দী। नगूर्थ मिनी मह (महे कमलिनी।।

বসিয়াছে তর্জিণী পালক্ষের ধারে। ভাহারে হেরিয়ে চিত্তে রাজার কুমারে । युवकी युवक विशेष करहरू थातन। বিযাদে ক্রন্দনে অতি আরক্ত নরন।। সে নয়ন নয়নেতে করি সন্মিলন। ভয় পেয়ে ভাবে মনে ব্রাহ্মার নক্ষন ! मण्युर्ग विश्वम दुवि घष्टिम आगातः। কোৰভৱে শিষ্করেতে বনে জমানার।। অদ্যই নিধন হব নাহিক সংশয়। তাহাতে তিলেক যাত্ৰ থেদ নাহি <u>হয়</u>।। জনিলে অবশ্ব মৃত্যু সকলেতে জানে : यात कमा खान योग त्महेरीकामधादम !! একবার ভারে হেরে মৃত্যু যদি হয়। খনের মানস সিদ্ধ মরণে কি ভয়।। থাহা হৌক কোনমতে না দেখি উপায়। এথনি ধরিতে হলে। কোটালের পায়।। রাজবালা পায়ে ধরি রাজপুত্র কয়। প্রপরাধ জনাদার ক্ষম নহাশয়।। হয়েছি শরণাগত ক্ষম মম দোব। দয়া করি দাসপ্রতি কন্ত হও রোধ।। चाँ थिठादा तमवर्जी প্রতি কমলিনী। রুখাল ঢাকিয়া মুখে যান তরঙ্গিণী।।

ক্ষলিনী কয় আমি জামীন ইহার। হাজির করিয়া দিব ছঙ্গুরে ভোমার।। প্রমথ ভাবেন হতে হইল হাজির। প্রথমত কারাগারে রাখিবে নাজির।। চেনামাত্র কমলিনী সকলে অচেনা ৷ থলে তায় হে তোমায় নাহি যায় চেন:।। এখানে আসিয়া আমি তোমার কথায়। বিপাকেতে প্রাণ বায় কেবা মুখ চায়।। দাবীর কথায় যেই করিবে বিশাস। এই শীত তার কিন্তু চবে সঁকানাশ।। প্রভাক্ত প্রমাণ আছে বাল্মিকপুরাণে মৃত্যবাণ দশানন দেন পত্নী স্থানে।। ्मके भारत मरन्त्रामही बसुभारन मिल। संदौदत विश्वाम कति तावन मिकल।। জানিলাম ভূমি পঞ্চপাংপর পাতকী। त्रभी इहेश। इत्ल विश्वामणां की।। कमलिनी कन वृक्षि कुणिशिष्ट (वाल। জ্মাদারে ভেকে দিব যদি কর গোল !! জতগতি রসবতী স্বস্থানে গমন। भनन व्यामित्रा लग कति व्याताहन।। अमथ ध्रित्रहिक्त तम् गीत दवन । তাহা হৈরি যুবতির মনের আবেশ।।

বিপরীত বেশ দেখি বিষম আশয়। বিপরীতে বিপরীত হর স্থায়ে।। বিশেষ বৃত্তান্ত অৰগত বনমালী। করিয়া বাধায় রাজা করেন কোটালী।। क्मलिनी क्तरशांद्य युद्धमकानता। বাজপুত্ৰ প্ৰতি কন সহাভাৱদলে !! रतिकि जामीन उत् विसनी जानियाः আমারে থালান কর হাজির হইয়া।। লোষ গুণ **ভজুরেতে হট**েৰ বিচার। অপরার্থী হলে ঘাটি হইবে স্বীকার দি একক্রা অত্যে লামি দেই উপদেশ। हेड! इंटल मर्सकर्य इडेटवक स्मय ॥ পায়ে ধরে ক্যাদারে করিবে সিমতি। কোটাল দয়ালু অভি দিবে অব্যাহতি 😃 কথার আভালে হাদে রাজার ভনয়। ভাবে সেই ভর্জিণী জমাদার নয়।। কেমনে দেখার মুখ[া]মার তার কাছে। এমত স্থবোধ মূর্য ভারতে কে আছে।। এমনি জোলার মত হারায়েছি কুড়। দে আমারে জেনে গেছে ঘন্টার গরুড়।। ক্ষলিনী অভিপ্রায় বুরিয়া গভিক। গতিক্রীড়া দাহি করে রক্ষী ভাষিক।। ভবশেষে হেনে হেনে কহে প্রমাণের।

চতুর ঠকিলে কভু প্রকাশ না করে।।

লাক্ষেপ করিলে কিব। হবে এইক্ষণে।

মলিল বহিয়া গেলে কি করে এক্ষনে।।

যা হবার হরে গেছে মিলাইলে হরি।

চিন্তা কি ভোমার কুলে লাগিয়াছে তরা।

ভারে কেন অকারণ বিলাহে কি কল।

ভারে কেন অকারণ বিলাহে কি কল।

চলিলেন যেই খানে রাজার নন্দিনী।

পশ্চকত রাজার পুত্র ভাগ্রে কমলিনী।।

রাজাব কুমারী আসি আপনার ঘরে।

নারীবেশে বসে আছে পাল্ফ উপরে।।

ভর্মিশীর মন্দিরে **প্রম্থে**র উপস্থিতি।

পরার ৷

প্রস্তুল হইর। অতি মান যুববাজ।
হনর বাাকুল কিন্তু নয়নেতে লাজ।।
উপনীত তরজিণী আছে মেই খানে।
তারে হেরে রসবতী লাজে ঘোম্ট। টানে।।
খুলিয়া আপ্রন খোম্টা রাজার নক্ষম।
তরজিণী প্রতি ক্ষম করি নিরীক্ষণ।।

সেলাম হামেরা আবি পৌছে জমানার। আসামী হাজির মিয়া হছরে তোমার।। আমানতে জ্মানত খালাম তে। হয়। উচিত করহ দও যাহ। মনে লয়।। উপযুক্ত যাহা হয় কর প্রতীকার। অবিচার কর যদি দোধাই তোমার।। কিন্তু এক নিবেদন অপরাধী করে। मंख्रित कत्र मेख चालनात करता। যার লাগি করিয়াছি এমও আলম। ্স দণ্ড বিহনে দণ্ড ভণ্ডপরিশ্রম।। অপ্রনি ব্যবত। করি দও আপুনার। ইহার অধিক হলে প্রাণে বঁটা ভার।। क्षत्र भाषानग्या (स्ड कृष्ट्य। ওতে ওর্ড দিলে কন্ট প্রাব্র অতিশয় ।। করুরজ্জু দিয়া বান্ধ ভা**হাতে স্বীকার**। ইছরি জনাথ। হলে হবে অবিচার।। বিদার দশনে গণ্ড এছগু ইহার। বাঁচি বাঁচি মরি মরি অদুষ্ট আমার 🕕 একথা শুনিয়া ধনী ফিরায়ে নয়ন। हेक्टिए ग्रेडी द्व फ़िए कहिल जानना। मधी ठाटश मदशाधियां कटरून कुमाती। राहि जांग अकि कांग वन्ट बनिहाती ॥

शुक्रदव तमगी मांच दय करत धातन। তাহার রমণী যেই সেই বা কেমন।। নারীর কারণে নারী কেব। গ্ইরাছে। যে পারে একাষ তার অসাধ্য কি আছে ॥ হাগিয়া কছেন তবে ব্রাজার তন্ত্র तमती पुरुष ब्लम् नम्दर कि बस ॥ তাহাতে স্থদার এই হতে পারে শেষ। লভা হয় উপজয় মনের আবৈশা 🛭 প্রকৃতি পুরুষ হতে অভিলাধ ধার। কাঠা**লের আমসত ভার মা**ত্র সার।। ^৪ পুরুষ প্রকৃতি হওয়া বিবিধ বিধানে। শ্রীমদ্রাপবতে **আছে** তাহার প্রমাণ 🛚। ওজ্ঞা সামেতে সহা যথন 🕮 মতী। উংক্তিতানলে দন্ধ বৈকুঠের পতি।। মানেতে ঘুচায়ে মান হয়ে বিদেশিনী। ाडाखरत मानज्य स्ट्रेस नाखिनी ॥ आशिन औहति इन नाती कना नाती। কি পদার্থ নারী ভাগা বুফাবারে নারি।। ্ব নারী আশর আমি হইয়াছি নারী। ন নারী কেমন**ুনা**রী চিনিতে না পারি।। শাপনি করেছি মান জাপনার ভঙ্গ। े ग यपि जानमा उद्ध दकन करत त्रभ ॥

বঞ্চিতে বঞ্চিত হই সদাই আতঙ্গ। না করি বঞ্চনা কর নিয়মের ভঙ্গ।। একথা শুনিয়া নম্রখী রসবতী। দস্তাঘাত জিহের করি সলজ্জিতা অভি।। কহেন জ্ঞান শিকা শিখায়েছে কেবা। মে পারে এমন কাজ রাজি এতে সেবা।। অবিধি বিধান অগ্রে করা অনুচিত। उत्तरभक्ता अहे भक्त भक्त भारत हिल् ।। নিয়ম না হতে অত্যে অনির্ফ হর। नम्भेरे भुक्रम महत्र कथा कहा नम्र ॥ শঠত। সর্বাদা যার কথায় ব্রুথায়। হায় রে **বিধা**তা এ**রে** গড়িলি কোথায়।। मत्था भरथो होति **हर्टक इर**स्टर्ह मिलन : क्तिवन वामनाः महन्यक्तिहरू मिनन ॥ পলকে क्षन्त औत्र दिवस मा नत्र। ममन जोनात जन जनिरह छैं जा।। পুজনার মন দশ্ধ কাম ছতাদদে। भनारेटङ जम्म अर्थ मा ८५८च नव्रदम ॥ সময় পাইয়া কাম হয় উপনীত। লজার পশ্চাতে ভয় পলায় ছরিত।। গহাৰ্ক বিবাহ জাছে বেমত বিধান। गमार्थन करत छोटा महिल्ल अभिनेत ॥

পুশামানা বিহি দেন দোঁহার গলায়।
বিরহ অনলে অলো মরম গলায়।
তৃণ বৃদ্ধি এক স্থানে হলে সজ্জাইন।
অগেকা করেনা তারা কাহার কারণ।
উভবে স্থীর প্রতি দুর্ভিপাত করে।
বৃক্ষি মন স্থীগণ পলায় অন্তরে।।

-

भुक्तात दर्गन ।

পরার ।

বুবতী নিকটে যান যুবরাক বেঁসে।
প্রিয়ভাবে কন কথা মৃত্ মৃত্র হেসে।।
হইয়াছি সক্ষত্যাগী প্রিয়ে তব লাগি।
নাঠে ঘাঠে কিব্রি যেন শালান বৈরাগী।।
ভোমারে না পাই মদি এই ছিল পান।
কামাকুপ তীর্থে গিয়া ছাজিব কীবন।।
এই জলে নাহি পাই পাব ক্লান্তরে।
এমন মনন ধন প্রকান্ত অন্তরে।।
কবায় কথার কান বিয়া কান পরে।
ব্বক বোগান কর যুবতীর করে।
করে করে অক্লাক্ষরে প্রোধরাশার।
বিবতী ধরি কর সাধেন শ্যায়।।

भागिष्डि ना नार प्रमा कुष्पुर्व । কন যেন এঁট্রিডন পাই যুগে যুগে । সন্মতি অপেকা করা অবিধি প্রথম। দয়া ভেমে দয়া করা রুথা পরিচ্ছাম।। বিরক্তি জানান দুশ্যে অস্তরে তা নয় : কৃপট মুখেতে কটু সরল হাণ্য ।। . अष्टांख निमय यमि वनदं ही इतः। নিদয় হইলে তবে শ্য়া উপজয় !৷ তাহা শুনি তরজিণী স্থাখি মনে মনে। क्षर हातिश इसे आप्त्रम नगत्न ।। শায়ক দায়িকা কাৰ হৈছিয়। প্ৰভাকে । जमिन कुलिया निल जाश्रमात रक्ता ख्यम यथन नन खंघन উপরে। उधन अपन बन निगाकत करते हैं। वमशी बहात कहि अबका कहिए । किष्ट्रभाक वक्का नाई मरिया प्रसिद्ध ॥ " क्षेत्रश्ल करहन 🐗 अलाहा वाहा । পরে যা কবিতে ইয় উপক্রম করে। ध्यमि क्षेत्री एवं छि शर्ड पति। गम्भूशी श्रेष्ट कृति गविनव कृति ।। क्रमरत निमान आहे इरन कि आंत्रीत । उन्नम् आबि मेर्न नानियार छत्।।

প্রমথ কছেন প্রিয়ে ভয় কি তোমার। তোমার অধিক যত্ন ভোমাতে আমার।। এ বংণী আরেণে শুনি নে বনী তথান। नीत्रव इष्टेशा तम मां कहि वहन ।। ্স ভাব ভাবিয়া ভাবে রাজার নক্র। লোন হলে ভারে বলে সম্মতি লক্ষণ।। নাধিতে আপন কার্য যুবরাজ নাজে। वं हिंग भूमि जनवंदी कड़ गड़ बाद्य ।। লাজেটে প্লাম লাজ দুৱে গেল ভয়। जयब्र कमरन वरम इड्डा निर्डश ।। বিধুমুখী কট পায়ে কাতরে **জা**নায়। कर्णक विलय कर विलट्ट त्यामास ।। একেবারে হতে হয় এমনি অধীর। পুরুত্রে মত আর নাহিক অভির।। দয়া তালে নিৰ্দয় কি এত হতে হয়। মিঠাকুল পাইলে কি আঁটি কেলা নয়।। পুরুষ জেতের অতি নিষ্ঠুর ব্যভার। কেবল করিতে চায় স্বকার্য্য উদ্ধার ।। প্রমথ কছেন প্রিয়ে দোষ অকারণ। ভোমার নিকটে দোষী সদা সর্বাক্ষণ।। (मायी कटन (मायी वला (तारमत कात्र। (वाय एमाय कामा कति ४एमी एमर मन।।

উপকার **কিছু ক**র করি অ**নুগ্রহ**। সদয় হবে**ন হুর্মা** দুরে বাবে গ্রছ।। ্শতত গরত কর পর উপকার। উপকার সম ধর্ম নাহি কিছু আর ।। পরের কারেণে কন্ট আপনার হয়। विनः काले कनाहिल नट्ट सुरक्षाम्य ॥ यकरके अंडिया धनी कारम अब्र करत । স্থাপের উদয় হয় ক্রমে পরে পরে।। ফেনে রোঘে ভাষে ধনা একিরে বালাই। অংমার এমন আরু বর্গে কাষ নাই।। এমত পরের যেবা উপকার বরে। ইংকাল প্রকাল এককালে তারে ৷ স্মরশেষ যাত ক্ষী গ্রা গোলা দুর। উভয়ে অংকাজ্জা দুর করিল প্রচুর 🛝 সুগরি সুজ্পের গন্ধ পরিপূর্ণ বাবে। সকলেই বিমোহিত নিযুক্ত সে বাসে।। পরেভে পালয়ে বৈদে আদিয়া ছন। नशीतां करतम यत जामत वाक्समें।। স্থুলীভল দেন জল কণুৰি বাসিত। স্থীগণে মনে মনে অতি আননিত।। বেদানার সরবত গেলাশ ভরিয়া। কেহ দের মিঠাপান আহ্বাদ করির।।।

কৌভুক করেন কভ কথায় কথায় ৷. সুখের যামিনী হলে অতি **শীপ্র যায়**।। হেনকালে দিনমণি হতেছে উদয়। তারে ছেরি উভয়েরি জাবন সংশয়।। যুবরাজ কন মনে হয়ে অতি ছুখা। বিদায়, আমায় আজি দেও বিশ্বমুখি।। ভর্জিণী কন প্রাণ বিদ্রিয়া যায়। পরাণ থাকিতে প্রাণ কে দিবে বিদার।: क्रियरम थाकिव भिता ठासिश्रत कीरवा। ভোষার বিচনে দেখি অক্সকার দিবে।। এ কথা কহিয়া ধনী আতি ভিন্নমাণ। চাদমুখে চুম্ব দিয়া প্রমথ পরান।। ধরিয়া নারীর বেশ যান নিজ হানে -करङ्ग क्यांगिव खिर्ह्य निवा जन्मारम ॥

৬৭ক্ষিণী মন্দির হইডে প্রমথের গোলাপী ভবনে প্রভাগখন:

প্রার ।

সেন্থানে নয়ন জারা গোলাপার ঘরে। দিবুস হইল বলি ধড়ফড় করে॥ হেন কালে যুবরাজ হন উপনীত। তাঁরে হেরি সহচরী চলিল। স্বরিত।। পরদিন নহে দেরি হতে বিভাবরী। **आधु**कि नगर यान नालि नट्ठती।। পুজোদ্যানে নাহি জান নিদ্রার শক্ষায়। একেবারে উপনীত যুবতী যথার।। সমাদর করি তার পরম যতন। ग्रशीशने कवि (पर भम्धकालन।। ভাজা করি রাখি দুরে রমনীর বাজ ! বসিলেন সিংহাসনে হয়ে যুববাজ।। খাদ্যন্তবা আদি কত আদি স্থীগণ। চর্বা চুষ্য হোছা পোয় করি আহমাজন ।। কভ কাব) র্যক্থা **ছুই জনে** হর ! উভয়ের মনোনীত ইরেছে উভে ।। CE नकाटल श्रूटल्लाना**रन (यट**ल क्टने। भन করাঙ্গুলি ধরি দৌহে করেন গমন।। মলিকা মালতী জাতি গোলাপ টগর। সেঁউতি মতিয়াবেল চাঁপা নাগেশ্বর।। श्रकृत्न (परिशा कृत मरमाङ आकृत। মধুপানে মন্ত হয়ে ভ্ৰমে অলিকুল।। ভ্রমর ক্ষারে প্রে মধুর আশায়। পঞ্জন খঞ্জনী শিখী নাচিয়া বেড়ায়।।

ডাহকা ডাহকী ডাকে মুখে দিয়া মুখ। का मिथि युवक हाट्ट युवकीत दुक ।। इामिया छाकिल धनी काश्वरल वपन । ব্রতির প্রতিকে জয়ী করিবারে মন।। হেনকালে পিকবরে করে কুছধনি। त्म प्रति र्श्वानदत्त धनी निरुद्ध व्यमनि ॥ উপজিল রমণীর মানস্তর্জ। সেই স্থানে উপনীত হইল অন্স।। নে সময় প্রিয় হয় সেই রতিকান্ত। দুরেতে থাকিলে কান্ত দিতীয় কুতান্ত।। রসবভী কয় হয় নিত্র। আকর্ষণ। প্রমণ ভাবেন তাই আমার মনন !! প্রিয়জন প্রতি কন সহাত্যবদনে : অলু**্ঠ** হতেছে **অঞ্** নিদ্রার কারণে ।। অনক্ষের অকোপরে করিয়া নিজর। গৃহ মধ্যে যান দোঁহে হইরা তৎপর ।৷ সখীরা সে ভাব হেরি কন পরস্পর। আর কেন চল দিদী যাই অনা ঘর।।

বিপরীত রতি !

প্রার ।

তথ্যি মদন্ধাণ করিল আর্ভ। क्रभगांब इक्षनांत ना गट् विलय।। লক্ষিত হট্যা লক্ষ্যা করে প্লায়ন। বলে মার না আসিব থাকিতে জীবন 🛭 গাছগান্ত হান ভারু গ্রহণ সময়। সর্বভাস হলে সব অঞ্চলারময়।। स्वारम व्यारवर्ग (गर्य प्रत्थ व्यक्तकाद । শ্রমজন বিন্দু বিন্দু ওর্ছে দুজনীর।। অধরে অধর দিয়া অবিরত চাপে। অধীর: হইর। উরু থর থর কাপে। বিগলিত পড়িয়াছে ইয়ে কেশপাশ। কটিভাগ পরিত্যাগ করিয়াছে বাস।। কঠিন এঞ্জন কর কবে ছজনায়। পদম্ব সে ঘৃণায় সন্চাতে প্ৰায় ॥ কুচর্গির ষেন গিরি হুনর উপরে। সময়া**নু**সারে থাকে আচ্ছাদিত করে।। করে শ্রম পরাক্রম নছে কম রণে। পঞ্জার কুর্ম ছব্দু হতেছে ছজনে।

কভু উচু কভু নীচু নাহিক বিজ্ঞাম। ক্রমেতে বিহানা ভিজে গড়াইছে যাম ॥ উভয়ে ক্ষতি অতি আছে অনশ্ন। ছাডিতে না ইচ্ছা হয় পাকিতে জীবন।। কেহ কারে পরাজিতে নাহি করে শক্তা। অন্তরে থাকির। রভি এন্তরে আশঙ্কা। ভাবে বৃত্তি এ তুৰ্গতি দেখা নাহি যায়। দুরে থাকা দুরীভব তুজনার দায়।। ক্রু নয় অতু হয় ভেদ হৈল মর্ণ। থাকিতে না পারি করি মধ্যক্ষের কর্মা। কেই নাই এই স্তলে করিতে বারণ। আমার কর্ত্র। গিয়া করা নিবারণ। আগমন করি রতি মনের হরিছে ' भर्छा मर्रामम ई कर्त्व हरकत निभित्त ।। প**মার্গ্র হইল যাগ রভি ভাগেমনে**) রভি না সহিল রতি ভিন্ন ছুই জনে।। উপকারী য়তি অতি জানিয়: তথন ष्ट्रहे जन ममर्था। कविन जीतन।।

প্রমণ ও তরাঙ্গণীর বিশ্রাম। লঘু-ত্রিপদী।

সহচরীগণ আসিয়া তথন, চামর ডুলায় গায়।

অগৌর চন্দন, লয়ে কোন জন, মাথাইছে দুজনায় ।৷

গোলাপ আভর, তভ তর হর, আনি স্থী স্বাঙ্গন।

নানবিধ ফুলে, গোলাপ বকুলে, শ্যা করে আচ্ছাদন।।

বেলা দেকালিকা, দেঁউতি মলিকা, মালা গাঁথি থরে থরে।

যত স্থীগণ, হর্ষিত মন, রাথেন পালক্ষ পরে॥

লয়ে পুষ্পমালা, ভূপতির বালী।, নাগরের দেন করে॥

অমান প্রমথ, মনোনিত মত, প্রোধর করে ধরে।

নানা জাতি ফল, স্থশীতল জল, স্থাসিত <u>স্থা</u>যত।

আনে অগ্রেধনী, স্থধাংশুবদনী, ত্রমাকু সনের মত।।

নিশি অবসান, শশী অস্ত যান, প্রমণ বিদায় চাল:

র্মণী তথ্ন, বির্ণ বদন, একেবারে নিয়মাণ ।।

ধানি শিরে হাত, বলে ওহে নাগ, মিদারণ এফি বাণী।

হুট্য়। অদেখা, দিতে কালে দেখা। পুন যাবে নাতি কানি ॥

वांध्य (कमराम, (लागांत निकरन,

ভূমি ছে নিদ্য় বভাঃ

শুনিয়া বছন, করে বড়ে মন, জাণ করে বড় ফড ¹¹

তাহিয়া যামিনী, কহিছে ক্ৰিনী,

যোক করি স্থাটি হতে।

হোষ না প্রভাত, করি প্রণিপাত,

जा त्हारम त्रव ना नांध ।।

यात्र यनि व्यान, अदन ना ध्रश्रान,

হবে তে ব্ধের ভাগি।

ভুগিবে হে ভোগ, রবে না বৈভোগ,

वध इद्ध्य प्राचाशी ॥

যিনি দিবাকর, অভ্যন্ত কঠোর, হন উদিত প্রত্যক্ষ

[34]

कृषि हरत थीत, यनि कर्त हित् इहेता तम्बी शक्त ॥ শুনিয়া মিদতি, নাত্রে সম্পতি, निमि इम अवशास। যিনি ভার পতি, সপত্রী সংহতি, নিজ স্থানে চলি যান ।। ধনি ১ন্তাননে, প্রমণ সভলে, যুবতীর প্রতি কয়। माकि (पर्क मन, अरत आधिन। কি করি না গেলে নয়।। অ্রুণ তথ্য, যেগ্ন, শ্যান, आभाग छमन इस । क्रम निमी भरतः (जानाजी उदरन, প্রন্থের প্রান্তন ।।

ंटिंग**ीत गाउँ** अस्टिंग ।

পরার। প্রতিদিন এক জন স্থী সমিভাবে। আসিরা রাখিরা যাদ শাুজার কুমারে।। প্রথমে পৌছিয়া স্থী করেন প্রান। রাজপুত্র গোলীবারে আসিরা শুধান।

ভূমি কি করিলে মানী উপায় আমার। গোলাপী কাহেন আছি চেকীয় ভোষার ধ অসাধ্য সাধনা যদি হতে। তৎপর। তা হলে কি উপাসনা করে প্রস্পার।। তোমার কারণে বাপু অন নাহি খাই : कि अमित्र चूमि बाह्य आत्मात्म लामीहै॥ প্ৰাম্থ ক্ৰেন মানী তোমা ভিন্ন থার I কে করিবে বনিপোর এত উপকার।। অভিদিন রাজপুজ যান সেই খালে ৷ क्वित गर्थाहा जिन्न जरमा माहि जात्म ॥ সে দিন থিয়াছে দুৱে ছুৰ্মতি বিমুখ। गिलम इत्युष्ट (यम (लाइक्ट हुपक ।) দৌহার পিরীতে বন্ধ হল সুই জন। অদৃশ্র যেখন জরাসিন্ধর যোড়ন ।। ক্রমে ক্রমে, পিরীতের বাড়ে অনুরাগ। সময় পাইয়া বাড়ে ঘৌবনের রাগ ।। উथलियः सूर्यमिक् रूटसङ् स्ट्रिन । नरवनाई सुधी मन खावना विशेन।। নুতনে নুতন প্রেম হয়ে যোগাযোগ। বূতন বুতন নিতা করেন সম্ভোগ।। যে করেছে সেই চিনে পিরীতি রতন। অর্গিক প্রতি যেন অক্ষের নর্পণ।।

মনৌনীত দ্রব্য যাহা হয় প্রয়োজন। जशीता अगनि जानि इन धियुक्त ॥ পুরুষ সাজেন কোন দিন তরঞ্জিণী। যুবর জ সেই দিন সাজেন কামিনী।। यथन त्यांशल इन तुंख्यंत नन्ता। भाशकारी इत्य तम तमगी जर्थन ॥ প্রমথ কথন হন কাপ্তেন লেপ্টেন। তর্ফিণী বিবী হয়ে দেন সেক্হেন ।। যথন অন্তরে ধাহা হইতেছে শক্। नकन शिक्षेट्य नन शरनत व्यानक।। বাহার অধিক নয় সমান বয়েত্র। বখন বেমন মন করেন জায়েস্।। কভ দিনে ছুই জনে নাহি অবকাশ। গর্ত্তবিকী রস্বতী ছুই তিন মাস।। অপ্রকাশ রাখে কাকে নাহিক জানান। भइठही शहन करत **अञ्चलान ॥** ভারা ক্য় দেয়ি নম্ন গড়িলেন ধরা। ष्यधिनोपित्धत शरक मार्ट्स हूँ हा धता।। ছাড়িলে হারাই জাঁথি না ছাড়িলে সরি। दाञ्चकना इन केत्रि हाका श्रष्ट धारी।।। স্থী বলে চিন্তানলৈ দক্ষ হয় মন। इतिर्घ दिवारक क्रम्बद्धर नव मत्रन ॥

অমৃত জ্ঞানেতে বিষ করেছেন পান। এখন উপায় কিছু ভাবিয়া না পান।। (क्र क्टर (ब्राटन खारन मकरन भरक्षि। মৃত্যুর ঔষধি অত্যে গলায় বেদেছি।। ধা হউক আমাদের হয়েছে বিরাগ। স্বাইলে কালামুখী উলেট করে রাগ্ন। ঠাট করা রক্ষ ভঙ্গ বৃহিল কোথায়। সে রঙ্গ বৈরঙ্গ তাঞ্চ ভঙ্গ অভিপ্রায়।; বেদি কর্মা তেমি কল ফলিবে দিশ্চর। কদাচিত পাপকর্ম ছাপা নাহি রয়। এখন গোপনসিদ্ধ প্রকাশ কুকাম। শুনিলে পলায়ে অঞে যাবে যুবারাজ 🛭 আমাদিগে করিবেক লয়ে লগুভও। দোষীরে বন্ধকে পেলে দিবে ভার দগু।। চক্ৰমুখী বলে সখী ঐ ভেবেছ মনে। শূলেতে চড়াবে ভূপ শুনিত্রে শ্রবণে !! শোণিত হইবে নাহি ভূতলে পতন। ভশ্মপরি ছেদ করি বধিবে জীবন।। कर्माननी खाँउ क्य इहेंग्रा छुः थिए। মানী যদি পারে কিছু করিবারে হিড।। ठलिटलम कथलिनी मामीह मणुट्य । হুদীয় কম্পিত ভীত ধুলা উত্তে মুখে।।

कमिनी ज्यासिक दहेश श्लोनाशीय निकंष्ठे शसन।

পয়ার ।

কমলিনী অস্তরেতে হয়ে অতি ভীত। ভাবেন মাসীরে বলা প্রবাহে উচিত।। भिम् अभव माल याहेता भि सन । श्रमध हरेया जन तमहे बिरक्छन ॥ यथन गांगिनी वर्ष अनुमान रहा। গোলাপী শরনে কিন্তু নিক্তানিতা নয়।। ट्नकारण क्मलिमी (मरे शार**क्या**नि। কহিলেছে ভার খুলে দেও দেখি মাসী॥ গোলাপী কছেন এত রাত্রে কি কারণ। कमिनी कन आहि नित्निय कथन।। গোলাপী উঠিয়া ছার খোলে বরা করি। ক্মলিনী ক্**ন <u>য়া</u>সী এই বার মরি।**। भाजीयश्चि छूहे करन विन अकामरन । কমলিনী কন বাণী গোলাপীর মনে॥ वज्रेह विश्वम भागी अकि मर्कनाम । ताकञ्चला अवः चज्रा हत्यद्व निर्याम ॥ कहिएड अनव कथा थारिंग रूप चप्र। कुई जिम भाग हरण। तरका नाहि रस्न ॥

ষে জন আছরে মানী তোর এই ঘরে। সক্তোপনে নারীবেশে যাতায়াত করে।। গোলাপী কহিছে হলে। একি সর্বনাশ। আর্গি হতে ছাড়িলাম জীবনের জাশ।। এই কথা ছাপা নাছি রবে কলচিত। উপায় কি বাঁচিবার নাহি দেখি হীত।। व्यभवाधि नहि यमि कारनम चुन्छ। ভথান বা**টাভে বাদা ঘটি**বে **ভূগ**ভি ॥ সাধ সজে শঙ্গী হলে ধর্মের সঞ্জা। व्यमाध्यः तोता मिट्स कीवन मश्मस ।। আর তারে স্থান নাহি দিব ফোনমতে। व्यविलास मुद्र इत्य याकु राणि हत्छ।। উতলার কাষ নয় ক্মলিনী কয়। উহারে তাড়ান নাদী আপাতক নয় 🛚 यिष्णां । । यह स्म करत श्रास्म । कांत्र भिरत (सान तांशि मुठारव मत्रण ।। আমাদের গেছে নাক নাহিক সংশ্য। ভোষার মন্তক ধাছা কিলে রকা হয়।। গোলাপী শিরেতে শিলে মারি থেদে বলে। জীবন খাকিতে আমি প্রবেশিব জলে।। ভালিয়া কীঠাল খেলি মাথার আমার। এঘটনা বিনা ভোৱা ভূটা মাথা কার।।

উপায় कि वन एमिश इहेरव आंभात। কমলিনী বলে সব ঘটনা তোমার।। ্তুমিতো নাটের গুরু জেনেও জানন।। পূর্বের রক্তান্ত সর স্মরণ করনা ।। এখন উপায় চিন্তা করা কি কারণে। मिलन दहिएस शिर्म कि करत वस्तरन ।। সাধের বনিপে ভোর বড় হিতকারী। তার জন্য অনুবোধ কড়ই তোমারি।। বাহা হৌক রাত্তে কথা উত্থাপন নয়। मिवरम व्यामिया कालि कर याहा हम !! যার ষেই যরে গিয়া করিল শ্রা নিশি শেষে উপনীত রাজার নকন !! कमिनी जत्रिक भी कार्य हिन गांव । ভোকনাত্তে রাজপুট গোহিত নিদ্রায়।। নিদ্রা ভক্ষে গিয়া সেই গোলাপীর ঘরে। দেখি তার মন জারি অন্মনান করে।। জ্ঞান হয় কোন ভাবে জানিয়াছে কিছু। व्यानात (निर्मेद नुकि निर्देश कि हा अमय कट्टन मानी कव धक कथा। যদি ভূমি ভার আরি না কর অন্যথা। থিলির দোকামে দেখি অতি অপ্সলাভ যে কাৰে সঞ্জ নয় নৈ লাভ অলাভ

পাঁচ শত মুদ্র। দেই হতেতে তোদার। নানা জব্য আৰি ফানী করহ আপার।। গোলাপী ভাবিছে মনে তাই আমি চাই। এহেন বনিপো বল কি দোষে তাড়াই । ওপাড়ার লোক মরে আমার হিং**নায়।** বনিপো তাড়ার আমি পরের কথায়।। বিৰাহ না হয় তার প্রতিজ্ঞার দায়। যাচির। পিরীতি করে আমার কি তায় ।; ভাগেনার বর রাজা না করে শাসন 📳 'থ পরাধি আনি হব হবে যা**ত্**ধন।। প্রমথে চাহির। কর বাছা রে আমার। মরে গেলে আমি যাতু সকলি তোমার। भूख नाई कना। नाई माहि निक क्रा বনিলেপতে ব্রহিবে অনীরের ধন।। প্রমর্থ কহেন বটে আহেছ ব্যবস্থার। অবীরা মাসীর ধন বনিপোয় পায় ।। ছই শত মুদ্রা দেন তথানি কুমার। বেটা ভাবে বনিপোর যুড়ি মেলা ভার গ কি আ**শ্রহা গোলাপীর ধনের** প্রবাস। भटनत कात्रदश्र काटक कीवटनत व्याम ॥ भागानी क्षमत्य (हथा करथा अक्थन । ज्ञुष्टि करतन रहाथा वत ज्ञास्त्रवन ॥

দ্রাণী চন্দ্রকলা তরন্ধিণীর বিবাহের কথা ভূপতিকে কহেন।

পরার।

চন্ত্ৰকলা কন ভুপু কি কৰ বিশেষ। তরক্ষিণী বিবাহের নাহি হলো শেষ 😗 আইবড় মেয়ে ঘরে যৌবন অবস্থা। তোমার কি ছঃথ তায় তার ছুরবন্থ। ॥ তরঙ্গিণী মুখ পানে চাওয়া স্থকটিন। পিতা হয়ে কন্যা প্রতি এমন কঠিন।। (क्यन कवित्र) अत्र सर्ट महाताला । रक्तल नर्यमा वाल कर **दासकाय।।** ভাইবড় যুৱা মেয়ে যেম**ন কুতান্ত।** যার ঘরে আছে সেই সাবিয়া প্রাণান্ত।। (कमदन निषय **स्टब**्या है निन्दिख्छ। কিঞ্চিত অন্তৰ মুধ্যে নাহি হয় ভীত।। স্বিদিত বিছু নাই বলিতে কি হয়। त्योतम मसञ्ज द्रमरश्च मी दोटलब नश्च। রাজপুত্র কত এবে যায় কিরে ক্রিরে। প্রতিজ্ঞা করিয়া ছুমি নাছি চাও কিরে।। ছোসায় না দির দোষ অদৃটের কের। मञ्जा अभाव विभाकना। विवादनत्।।।

নোয়ান মন্তক রাজা সলজ্জিত হয়ে। রাণীরে প্রবোধ দেন প্রিয়্বাক্য কয়ে।। सूरताथ इड्रेग कम निर्द्धार्थत कथा। যার প্রতি প্রজাপতি নির্বস্তান বঁথা।। कछ नरह बना मुद्रा विवाह खनाथा। কার সাধা খাজিবারে বিধাজার কথা।। त्य मिन घडेना इत्व विधित घडेन । त्र मिन विवाह मिन हरत निज्ञाल !! वानी कन (खाकनारका नाहि श्रदशांत्रने । জানিলাম কনা। প্রতি বেগন ধতন।। **घटनाभूग इटल** तानी टेनटमन छश्रम में हैं। ভূপতি মধুর শ্বরে মহিনীরে কন !৷ অকারণ চিন্তা ভূমি কেন কর আরে। मांड मिन भटका भित्र विवाह कनाह ।। অন্যথা হবে না কভু আনার বচন। **एस रू**र्या कृति एतं इ**रेत** भलन ॥ त्य मकन अन्य होन्हि दिनाद्दत छटन। आर्शाञ्चन कत तानी निम्नः कुकुरतन ।। বাহির বৃহজ্যে হৈল ভূপতির বার। পাত্র মিত্র জাদি সর ক্ষানি পরস্পার।। অমনি সকলে আসি রাজার গোচর 👣 🖛 পাত করি রন যোড় করি কর।।

রাজা কম মাজিপণ শুন দিয়া সম। कर्नाहे विश्वकिती केंद्र जाहत्व।। यखी कम असूर्या हिंदिन मेंब्र्राश। ভথনি যোগাৰ উবা কথায় কথায়।। ट्रमकारल मिश्रक्षेत्र वर्ष्मा तार्काण्यत । তাহার তনয় যার মান বিশ্বস্তর ৷৷ উপনীত সেই ছালে তর্জিনী তরে। বিবার্টের আলোচনা শুনি পরস্পরে ।। ৰূপ গুণ কুল শীল সকলের চেয়ে । নরপতি ভুক্ট অভি ভার প্রতি চেয়ে।। निविधिया निवीकारण नर्स सुन्दे । অশৈখি ছুটি কটা পরে হয় দিরীকণ ।: পুরোহিতে আনাহয়। পরিচয় লন। নয়ন হেরিয়া কটা মূলে বোটা হন।। রাণীর সঙ্কার ভার[্]কীরিলেন ছির। বিবাহ বাকত **নর ভারত অভি**র।। স্বাঙ্গ স্থানৰ দৈৰি অভান্ত সন্তোষ। कियम महास कहे। श्रीकात मि प्राय ॥ লামাত। রাকার অন্ত বুঝিরা অন্তরে। निद्यमन माजद्वमा खाउँ कद्व बद्व ॥ ভাৰি ছটি কৰা তাহে কিবা আটকায়। इत्ख्र क्षत्र्ति तीं त्रमान किथाम

সামাতার কথা শুনি হৈল চকু স্থির। নৃপতি ছ:খিত অতি মন্ত্রমাণ শির।। খেদাঘিত হয়ে পরে কন কিছু ছলে। शत्न मित्न (वँध मित्र देकिननाम करन ।। যাহা হৌক বিশ্বস্তারে করিব জামাতা। হইলে সপ্তাহ গত কথার অন্যথা।। দিনস্থির করি রাজ। আনন্দিত মনে। मकल वर्षां छ कर महिथीत महन।। চলিলেন বাণী লয়ে পুরবাসিগণে। বিশ্বস্তবে জ্বেবিবারে অভি ক্ষমনে !! পাত্র হেঁরি পত্র কর মহারাণী কম। त्नजरमीर्च नरह (माथ क्षत्रह ताजन।। রাণীর মদন বুঝি কহেন 🙀র। इ**रेलक विश्वधंत कूमा**जीत वत्र ॥ নারেতে হরিন্তা দের আছে পূর্বাপর। তাহাতে হইল নম রাণীর নিভর।। হেনকালে এক দুত আদি স্বরাত্বরি। जुशिक मगरम यम नमकात कति॥ विक्रम रक्मेंद्री दक्ति। खतरक क्रेयत । ভরত আমার নাম তার অন্তচর।। थामय नारमण्ड रमहे शालात कुमात। নাপ গুণ বলে তার সাধ্য আছে কার।।

কোন থানে গিয়াছেন নী পান সন্ধান। অত্যেষণ তাঁর রাজা লম স্থানে স্থান।। चात्रि दयन दश्ने मुख दशदछ दमदम दमदम । **ज्ञान कद्दन गट्द अध्यय विद्यार्थ ॥** সীতার হরণ হলে যত কপিগণ। বিদার করিয়া তুণ **করে নিরীক্ষণ**।। তেমতি দে**খিছে স**ব করি **অন্নে**ষণ। স্থাবর জ্ঞাম জল বন উপবন।। প্রতিমূর্ছি কুদারের করিয়া লিখন। পৃথক দুভুের হতে দিয়া নিক্সান ॥ পাঠান কভেক দূত কত রাজ্যে ব্রুজ্যে। আসিয়াছি মহারাজ দেই রাজকার্যে ।। हेरा विल दाक्क द्वाष्टांत मनन । প্রমধ্যের চিত্রপট করিল অর্পণ।। हिज्ञ हे । प्रि इक्षि क्षित्र विश्वन । পূর্বের রক্তান্ত ভূপে হইল স্মরণ। সকলের ভ্রেষ্ঠ রাজ। বিক্রমকেশরী। কত রাজা তার স্বার্ট্রেকর বোড় করি ॥ जनिमित्थ हिक्टलक्षा दहित्स मनन । এমত জামাতা হুৱে ভাগ্য কি এমন।। সকল রভান্ত পরে রাণীরে শুনান। প্রমণ কোথার রাণী রাঙ্গারে হুধান।।

ইহা শুনি রাণী হতে দেন চিত্রপত। भे दिति दा**रका भ**ती करत हुए कहे।। তোরক্ষের মধ্যে রাখি করিয়া যতন। সৃপতির প্রতি কন হর্ষিত মন।। मियं पिथि धिमद्यदेत मञ्जान कतिया। বিশ্বস্তরে রাথ রাজা স্তোকবাক্য দিয়া।। রাজা কন স্থিরতার অন্যথা কোথার। রাণী কন ছাদু। হতে নর ফিরে খায়।। সেই কথা নির্ভরতা করিয়া রাজন। বিক্রমকেশরী পুত্রে লন অস্থেষণ । ভত্ত্ব করে প্রমথেরে না পেয়ে উদ্দেশ। বিশ্বস্তর প্রতি ভর হয় অবশেষ ।। সূপতি রাণীর প্রতি কহেন তখন। দেখ দেখি প্ৰকাপতি নিৰ্বান্ধ কেমন।। বিশ্বস্তর হৈল বর বিধির ঘটন ! অন্যথা করিতে কেবা পারে সে লিখন।। अना भन अकात्रग क्ता अस्ताकन। তর্কিণী আন রাণী আপন ভবন 🛚

মহারাণীর ভর্কিণীর মন্দিরেগমন। প্রার।

কন্যা আনিবারে রাণী ক্লরিয়া গমন 🕼 দৈশিলেন ভরঙ্গিণী ভূতলে শয়ন।। বিহারের অন্তরোধে যামিনী জাগৃত। ধরাতে অঞ্ল পাতি <mark>নিদার আ</mark>র্ত 🛭 একদুটে কন্যা প্রতি করি নিরীকণ। অনুসানে জানি যেন গর্ত্তের লক্ষ্য।। (अ लक्कन विक्कुन किंकू मिथा। सह। গিয়াছে **অন্ত**রের**কো দুখ নাহি হ**য়। উদর ভাগর গায়ে শীলবর্ণ শির্ কুচন্বর অতিশর পরিপূর্ণ কীর।। 🧸 নিতম চয়েছে ভারি পাঞুবর্ণ কায় : শয়ন করেন ভূমে অলনের দায়।। দেখিতে দেখিতে হ্য স্বিক্ষয় মন। প্রয়োধরে অত্থ্যে ধরে নিবিত্বরণ।। त्रंगी कम या नकन कवि मित्रीकन। ভাবের বিভিন্ন ভাব একি আলকণ 🞼 रवहे क्टल शुक्रदेश की खाना नहर । সেন্থলৈ এমৰ কাৰ একি অসম্ভৰ ॥ 🔆 স্থীগণ প্রতি হন জ্বস্ত অনবা थाखनगर्म राष्ट्र स्मन थाना।

मिश्टहत मखदक इटना मुनाटनत वाता। একেবারে ত্যক সবে জীবনের আশা।। महातानी कम वानी ब्रक्ट वर्ग हरके। মাতায় করাত দিব কে করিবে রলে।। कि मास्टम जगमम कटकी दैकलि भग। ক্ষবিলম্বে পাঠাইব ফ্লভান্ত ভবন।। क्रिक्टिया कर भारत समस्य ग्रहमा कानिनाम (स्थानीरमत नोहिन दें।हन ॥ वीर्णितीत लागः विभि इत श्रेमकात । আমাৰ সহিত ভাৰে আয় একবার।। চলি**লেন** রাগভারে রাণী চন্দ্র-ল।। **इक्ष्यंत शर्म दानं शनम इक्ष्या** ॥ স্থিগৰে বাণী সনে জ্ৰুভগতি যায়। তর্জিণা নিজাগত রুহেন তথায়।। ৰত দুৱে গিয়া রাণী ভাবেন কি দায়। मकिश्रद्ध जार्य भरत यांव व (काथाय ।। निथितर्ग चित्र मेरेस निर्माभरन क्रम । বিবন্ধিয়া কহ সবে সভা বিবরণ।। कात बाता हतना अई घेठेना चरेन। অসত্য কহিলে হবে নিকট মরণ ।৷ नवीशन नरव कन कतिशा नथन। - শৈখ্যা যদি কহি মলে না পাব আগুণ 🏗

কন কর পরশিরা মহিবীর পার। महा 🍓 कहि यमि हक् यन योह ॥ সংব'মার্ক, ভাল মন্দ আমরা এ জানি। वक निन उद्गिष्टिंगी कन এই बानी। পদ সেবা অত্যে তাঁর করেছি শর্ম। ভাকিয়া কহেন ওলো শুদ স্থাগণ । শनीत्त्र मत्था कि ह ४ स्टब्स्ट व्यक्तथ । निज्ञा এरम निमि (भर्य में छ रहन ऋथे।। अक श्रांत भर्त जात तथरक इरन त्यांन । मृद्य मिटल (शाटलमाटल कांत्र्रि भागल : একেল পাকিব সীমি খাসার 🛏 খবে। তোমরা সকলে গিয়া থাক অন্যন্তবে। কহিলম সাগনাকে একাকী রাখিয়া। কেমনে দুরেতে রব ক্ষ**হুথ শুনি**য়া ॥ তাহে তিনি কহিলেন তাহে নাহি ভয়। এই 'হড় ধাক' হয় বিভিন্ন আলয়।। অদ্যাব্ধি হইল সে মাস পাঁচ ছয়। **उपविध अक शृंदर थोका नारि इत्र ॥** পাজাবহ হয়ে আছি অধীনে যাহাব। তৰ <mark>আজা অনুসতি শুনিতে ভাহানু</mark> 🕕 সেট আজা **অনুসা**রে থাক। অন্য **য**রে नोहि क्षांनि के घाडमा बहेदवक भरत।।

अविन विदिवक दक्ता आदिन कार्रात ভাবিদেম ভীত হয়ে পতি পাছে রাগে।। गाहा सानि कहिलाम এই मिरिश्य। আপন উচিত যাহ। কর অবশ্যে।। রাণী অভি বৃদ্ধিমতা সুনীর স্থানাধ। সখীগণ প্রতি ফান্ত হইলেন ত্রোগ। ভাবিলেন এ বিষয় যদি করি ভাবি : ক্ষ্য, প্ৰতি মূৰপতি হটাবেন ভাৰি।। সকল মজায় বাধা জামার উচিত। करा। स्ट्रांस रहा भरत भारति वहिता। क्षित्यम विश्वीख इर**श्रक** हिएए। আমি ভিন্ন ভূপতিকে কান্ত লাগা কম : কি কৰিমা বিব্যৱহা কৰু বাজ্যোদ্ধৰে। **८क म्राम डेखी**र्न इन कलक गांत्र ।। नी कहित्स खुश्चराक्त मा तुत्व कथन । অগমানে ত্যক্তিবেন ভ্ৰৱ জীবন ৷৷ এত ভাবি মহারাণী করেন গমন। मृजुञ्जास होत्न (यटक मा हदल हद्व ।;

- >46

অথ রাণী চন্দ্রকলা তর্জিনীর গর্ত্ত অমুষ্ঠান জানিয়া নৃপতির নিকটে গমন।

প্রার ৷

প্রাণী গিয়া রাজাধরে কন স্মাচার। থাক রাজা লয়ে ভূমি প্রতিজ্ঞা ভোমরি।। **দৰে মাত্ৰ এককনা এই মাত্ৰ দাৱ** ঃ তাহার উপর এভ তাঞ্চিলা তোমার ॥ घरत्र छ सम्बाह्म आहेत ए (मर्स : তিলেক কথন ভূমি নাহি দেখ চেয়ে !! युवर्डी (बीदन कांद्रल ऋत्वास्त्र ६०) প্রশ্ বজায় রাবা **সাব্**ধান **কত** ।। পায় পায় শত্রু কেরে **দেখিয়া ঘৌ**ৰন। तोदन अलाद भना इस बना मन।। ভাদের নাহিক লোধ নমনেতে করে ! ভার জন) সমসগ সাবধান ভরে 🙃 ্তামার কনার শ্রেড নাহি নয়। লেখ। तिहे हिंचु कलक्करण श्रीति व तम्भ ॥ ८१५५८४मा जटह भाष ३५८२ कृतिएक। (वंटह (चंटक जाई भव इहेंग (पश्चिरक।। ্মহারাজ কন কহ রুতাত ইহার। 🦘 🐪 মহারাণা ক্ল বাণী ছড়াগ্য আমার 🕧 🥇

আনিতে কুখারী আমি করিয়া গমন। দেখিলাম ভরঙ্গিণী গর্ট্টের লক্ষণ।। यामा विद्याल अहे कलग्न थानां । নক গৰ্বা থকা হলো ভূপতি ভোষার।। र्श्वामा निख्य तथा नाहि गढा तांनी। অভিমানে তুন্যনে অবিশাম পাণী 🛭 অংগানে অভিমানে ইতেন এমনি। पाद ि विषयुत्र याचे नाभाग पामानि ।। मांदर धरेशा वस मुद्रश माहि त्य । हिहिंगा अव्याद्धि स्मञ्जूषातप्रद भर ।। ত্বপাত ক্ৰেন গ্ৰী ক্য়িলাৰ প্ৰ। এপনি গরল আদি করিব ভক্ষণ।। भीतम थाकिश भाग रहा वच गता। वादमाटङ कनक उद्य यह किन ५४) ।। विने जन धरमांकन नाहिक जामात ! অপার কলক্ষ সিশ্ব কিসে হব পার।। না রাখিব প্রাণ আর কৃছিলাম নার। অপ্রতে মৃত্যু ছিল কপালে আমার।। মহারাণী কন রাজা এই কি বিধান । বিপদ শুনিয়া বুঝি হারাইলে জ্ঞান ।। পরাণ তাজিবে তৃমি গরল ভক্ষণে। ন। রাখির আসি প্রাণ তোমার বিহনে। this .

विशिन् मिल्रा नक मश्मात महादि । रेश्कान भवकान धककादन शादा।। " **সাহ**স করিবে লোক পড়ি**লে** বিপদে। অর্পণ করিয়া মন অভয়ার পদে ॥ क्षांनियां विश्वन वाका इटल खिल्लमान । মাজি বেন ভাজে হালি হেরিয়া ভ্রফান ।। আমি এক উপদেশ কৃতি মহারাজ। छ। रत्न प्रांक्रिक भारत कलस्कृत काथ ॥ কোন কথা উত্থাপনে নাছি প্রয়োজন। जबिन्धी विवादकत सब जारवाकन ॥ কন্যার বিবাহ দেও বিশ্বস্তর সলে 🛦 আবিশ্বক নাহি জন্য কোন আন্দোলনে 🕆 এ প্রকার কর আগত তাকিবে নিশ্চর ট পশ্চাৎ করিব উক্তি মুক্তি **যাহ**। হয় ॥ ভূগাত কৰেন এই যুক্তি হৈল সার। পুরুষ হ**ইতে জীর বুদ্ধি চমৎকা**র ॥ কহি বাণী রাজরাণী বান নিজ স্থানে। এ রন্তান্ত অন্য আর কেহ নাহি জানে।।

অথ সহচরীগণ প্রত্যাগদন করিয়া রাজকন্যার গোচর স্বর্গোচর করায় রাজকন্যার আংক্ষণ।

প্রধার।

স্থি স্ব যেন স্ব বিষ্ণু বদ্ধে। भागिए हैं शिक्षा जानकार्तात सम्बद्धा । দেখেন নিছোর ধনী আহে অচেতন। ভাকাত্যকি করি ভাঁরে করিলা তেত্তন !! রালহুতা ক্লোধাহিতা হয়ে অভিসয় : অন্ত নয়নে চেধে স্থিগণে কয়।। কিষেতে বাছিলছালো এক অহঞ্চার। কাচা নিত্র। ভঙ্গ ভোৱা করি'ল আমার॥ সমত্ল: হীন জনে করিলে আদির : व्यवस्थारम छट्डे देवरम भक्षक छेलहा। সন্ত্ৰী বলে নিছা ভাৰি ভাৰ আগে পাছে : একেবারে সে **সূত্র** বাসা পুড়িরাছে ।। আসিয়া সে ঠাকুরাণী আপনি হেথায়। আপনাকে দেখেছেন নিদ্র' অবস্থায়।। घसुकारत (अरम्रह्म भक्त नक्षा)। (म लक्ष व लक्ष । त्र विलक्ष ।। क्षामा इ**रङ क्ष्मिल्ड इर्**हा खेळाथन। महरुद्रीभव मह हत्ल-बिसर्कन ॥

রাণীর সমূত্রে বাক্য করে সাধ্য কার। স্নেহখুন্য ভাব যেন করেন সংহার ।। আমরা তোমার হয়ে মসত্য কহিয়া। निशं हि विसप्त दादका विलोध करिया।। त्रोजनमा। कम रुश्य हर्याह श्राक्ताल । কি হবে ঘটল সথি একি সকানাশ।। क्रममी (मर्थम खुम थार्गत मगान ! কেমনে দেবাৰ মুখ ভার বিদ্যামান ।। পিতা জিনি পূজা জিনি গগত সংসারে। कामाव काइटव (थाँछ। मटन मिटन छैटिह ।। আর নাহি কালাম্থ দেখার কহিছি। कीवन शहेदल नशी जीवन नुकास ।। এখন কি সুণা ছিছি *২০*৩১৮ **অন্ত**রে . এমন তুজর্জ যেন ভারতে না করে।। লাজৰ এ ছাৰ প্ৰাণ লাহে নাহি দায়। রাহলাম ক্ষণমার তার আইপকায়।। क्षानमार्थ शामिनोटड यामित्व (इशाय । পায়ে ধরে আমি ভারে হইব বিদার ।। (मधा यमि नाहि कहि (म जरनत भरने। নৈ কিন্তু ত্যজিবে প্রাণ আমার বিহনে।। ংকরাজ লি নাসিকার দিয়া সহচরী। े रात्रि পात प्रःथ 👣 करह लेटिक पति ॥

অন্তব একি ভাব ভাবনা কে বলে। কি পদার্থ প্রেমতত্ত্ব নির্ম্ত না মলে।। এই মত আক্ষেপেতে দিবা অবসান। অভাচলৈ অবহেলে দিন্দণি থান।। গ্রেমণ এ সব কিছু লা পান সন্ধান। ভর্মিণা সন্ধিপানে করেন প্রানা।

भाग उन्हें भिनाम मन्तित्व अभावत श्रमम ।

मीश जिसमें।

व्यथ्य जायूनवान, त्रांतन तांतन वांत्व वांत्र तांना,

निवर्ष नां इत्र कर्नाहन।

विलग्न नांहिक मह, विভावती नाहि इद्य,

निवा पृत्थ्य करतन नमन ।

क्षणि कांवनी वृत्क, छारकन मरनत ख्रूर्थ,

व्यंत्राधा नांधन मरन रक्षण्।

त्रभीत व्याकृत्वन, व्याद्भ कति व्याव्हानन,

क्षणीत व्याकृत्वन, व्याद्भ कति व्याव्हानन,

क्षणीत व्याकृत्वन, व्याद्भ कति व्याव्हानन,

क्षणीत व्यात्रव्यात्म, छान्यतन छोवनीरम,

क्षण्य कि महान व्याद्भ कि स्वावनान,

क्षणित्वा व्याद्भ क्षणानंदन

mbbfffer

প্রাথ ও ভরজিশার আক্ষেপ।

প্ৰার 1

विश्व प्राम अथा ताकात क्याती।

त्य किन त्य त्य नाहे त्मरथन अवाति।।

विश्वतकतन विति द्वित्य करने।

विश्वतकत यहाशि द्वान दिन्य है है है है।

शास्त्र विश्व विद्या करने।

রসবতী মুখপানে চাহিয়া অমনি। বিষয় করিয়। কন শুন স্বদনি।। किटमत् कांत्रदर्भ व्यक्ति छितास तस्म । मिलिन यहन ८मिथ छः ८४ मे १६ मन । হইতেছে অন্তরেওে বাদনা আমার। **काञ्चल्डी हत्। धित्स महेरल गःहोत् ॥** অবংহলা এত মুদ্ৰ কর অবংশলৈ। इर्गमेश विकास एक्ट एटन गांके एक्टम ॥ ॥ ভাতি মানা রাজবাল। কন বীরে ধীরে। বিনা মেছে বজপতি ঘইরাছে শিরে।। মামায় দেখিতে হেখা আমিয়া জননী। গ্রিয়াছেন জেনে তিনি সকাল আপনি ! মাভা পিতা উভযের হয়ছে গোচর। मुनाव नष्टांश ५८म कारन करनवत्। अष्टात जीवरन जात नाहि धरताकन । অভিলাম হইতেছে হেরিতে শ্যন ॥ অবাহন বিনঃ শাব ভাহার সদন। একান্ত চিত্তেতে ইহা করেছি সনম।। আমান্ত্ৰ না দেখা পেতে আদিয়া এখন (क्विन तरसरह थान (इतिर्ध रामन।। অপরাধ প্রাণকার্থ করিয়াছি কত। मानीटत निमात (मुड जैस्टात गड ।।

এখানে ভোনার থাকা ভিল জর্জ নয়। অধিলম্বে চলে যাও আপন আলয়।। करें कथा छोंना नाहि तदव कर्नाहन। विशरम विशास्क रक्त हातारव कीवन ॥ অভাগী তেজিবে প্রাণ তাহে নাহি খেদ। विद्रभाव कांत्र न जारह रहामात विद्राहम ।। মরণ বিজ্ঞেদ হোতে বড় কিছু নয় ! বিফেদ যন্ত্রণা হতে সূত্য স্থােদয় !! প্ৰমণ কৰেন প্ৰিনা কহি তব আগে। বাহিয়া তোমায় প্ৰ আমি মতি আগে। প্রাণের আগিক হও ওরে প্রাণিধন্তা আমার করেণে ভূমি ত্যন্তিবে জীবন।। আমরকা পলায়ন এই কি বিধান। যে পারে একায় তার নির্দ্য পরা**র্ণ**া। দুত মুখে প্রচল্যাত্র তব বিবরণ। ভাবিয়াছি পিতা মাতা করিয়া বর্জন।। धविराक्तम (म.विराक्तम गट वज् नर्जन জ্বালার উপরে ত্বালা দঝে প্রাণক্ষ ॥ তুজনা তুঃ থিত জাৰ ইইয়া বিহান। তাহার বর্ণশ্ল করা অতি স্কটিন।। क्रिक विरक्रम (यन यम्नात क्रम। त्शाभीत नंगन करन इहेन अवन।।

(महे मछ छेज्र हात् नगरनत गीरत । ধরণী উপরে ধারা বহিছে অধীরে।। ভৰঞ্জিণী ক**ন আ**হি বাচন বিজল ৷ श्चिम् कार्ट्ने श्चिर्श मत् गर्मन ।। নিতান্ত ত্যন্তিৰে প্ৰাণ ক্ৰিয়াছ মন। विशिक्षित कुट्टे अप्तन छाजिन भीवन ।। অকারণ কি কারণ ভিন্তা বল ভায়। प्रभवात करेड (बाट्स १३) विमास ॥ খবংশের অভিবিক্ত নাভি সংবে কয়। थितकरम र पुजु एउटम युकु। ऐक्हा इस II ঘোষণা থাকিবে এই পিনীতের রীত। বিক্ষেত্ৰে পুৰ্ক প্ৰিয়ে মূৱণ উচিত 🛽 প্রজ্ঞিত প্রেমানলে ওদ্দিন হয়ে। প্রবেশ করিব প্রিয়ে সমিধ উভয়ে।। कुलरम गतिश निय निरम्धरमस्त कीकि । যাবত জীবন রবে নিলনেতে থাকি।। যভক্ৰ। বেঁচে থাক। সকলে স্বার। নয়ন মুদিত হলে কেই নহে কার। জ্বলম্ভ অনলে কেন স্ত (**চলে** দেও। বিধুমুখী বিধুমুখে হেনে কথা কও ।। বদন চুখন করি ধরি ছই করেজ 🛒 विकित्ता मह यान अग्रदनव घटव ।।

जोड़। दहति गहरुती (य रिश्वीत हिला। চিত্রের_্পুন্তলি ন্যায় সে স্থানে রহিল।। র্সবতী **রসর**াজ প্রবেশিয়া **ঘরে।** তুই জনে বসিলেন পালক উপরে।। মনোমত মনমথে করিয়া দমন। মনে ভাবে পিরীতের হলে। উ**জ্ঞাপ**ন।। मनन सिधन क्टल वांटन बांग काश । অবশেষ উভয়ের ছাত্রের উদয়।। বামিনী অর্দ্ধের গত অনুমান হয়। স্থী যত নিদ্রাগত জাগ্রন্ত উভয় ॥ প্রমধ কছেন প্রিয়ে শুন্হ কথন। আদি এক সংযুক্তি করেছি মনন।। প্রতিজ্ঞা করিয়া বেই না করে। পূর্ব। **दर्हेत्न श्विष्ठका एक (म**र्हेड महन्।। তোশার প্রতিজ্ঞা্এই ত্যাজিনে জীবন। অনুৰূপ্য তার বিধ্রি করা পলায়ন॥ পলায়ন মৃত্যু তুৰ साहि কোন ভেদ। অগোচর নাহি তার দুখা যার বেদ। উভয়ে অদৃশ্র হরে হয়ে ছম্মবেশ। गराताक ताका रिक्क यांच जना दमना।। यनाशि मन्त्र हत लेख (पृक्ष का प्र) রসবতী কর্ম ক্রিছা আনেয় ভোমায় ।।

যুক্তি যাহ। উপযুক্ত করহ ইহার। হইর স্বীকার **তাহে নহে** অস্বীকার।। পলায়ন করা বদি হর যুক্তিসিদ্ধ। निकित्त भारत स्ट्रेंटन छितिक ॥ পদ্ধরে সম্বর্হও জেন মহাশ্র 🗀 শুভক শেষ্ণিলম মাকরাম্য শ্রানা अभय करहन अिदा देवना कड भन। করেছি মানস যাহা করি বজাটন।। **অভঃ**পর রাজপুত্র স্থির ফরি চিত্র। লেগনী করেতে ধরি আরম্ভিলা চিত্র 🕕 🦠 আপনার প্রতিমূর্তি লিখিয়া কুলার ৷ সকল বৰ্জান্ত প্ৰিচন নিছে ভাব।। সেই চিত্রপট রাখি পালদ্বের পরে। দারবন্ধ করি দৌহে পলায়ন করে।। **डेडर्र राडी**ड यात थरा नारि काटन । অশ্বশালা প্রবেশিরা তুই অশ্ব সানে ॥ क्त्रशदत कार्रताम् । इरत् श्रुष्टे कर्ता সদাগর বেশ ধরি অমনি গীমন।।

্রান্ত্রপথ ও তবঙ্গিনী সদাগরের বেশ ধরি অবভিরাজ্যে গমন :

1

গমনে বামনদের করেন সার্থ। বেপেতে চলিল অখ নক্ষত্ৰ যেমন চ नम नमी পांव इत्य शिक्ष खरान्य। একেবারে উপনীত অবস্থির দেশ। সে রাজ্যের অবিপতি থর্মাপ্রায়ণ। অধার্শ্মিক প্রতি যেন দ্বিতীয় শমন।। রামরজে। নাায় রাজ্য পালে ক্ষিতিপতি। দরিক ডঃখীর প্রতি দয়ায়িত অভি।। তাহা দেখি সুজনার হয় মনোগজ। मिहे इतन विश्वतादत्र वाञ्चा पिन कछ।। বড় এক বটরুক্ত থাম মধ্যে ছিল। অশ্ব বান্ধি তুই জনে তথায় বদিল।। কোতহাল আদি কয় বাজায়ে দেলাম। कॅ|राह्म (औष्ट्र वातु क्लमत भाकाम।। कारन (काता अन्ति भूक कर (करा नाम। কেন্দ্র রাজে আরম্ভিইয়া হার কোহি কাম ।) टामरलाक अंतरमनी करट नमानत । छेशत मुझ के घत खेतक बरत।।

মের নাম রয়বর এছি লছ্যীরাম। शक्काणि होत्येवा उनत्का मनाभविकाम ।! কোত্যাল মাজে হি জে ব্লিশ স্মার : निम्बित विद्या ५८ कि मगटरे। उपन्त ॥ एं जात । यासारम करक (यो ए अरम नांत । हेगाम हासिक गामा कृतियहनार ॥ 'অর্থ হলে। দেখা ভাই মু-সালের নার। অর্থ পেনে জমানার প্তিবস্থাত 🖟 সদ্বার বলে চাই ফেরাফ জেকোম ? अस्ती करिष्ट बातु हन्यसादक स्था। স্টতোন সদাগ্রে স্মিতার করি। ाराहित वाषानिका अञ्चल लान्ही।। কেরায়া করিয়া বাটা রাজার ভন্ম। क्षिरमान कुष्टे जन महस्र कृष्ट्रे कहा ।। भाग मानी अभिद्यान एकाम कनाव ! (<u>गर्डे</u> (मर्न एचरवर्ग तम एकतात ॥ वानगात (य वामना श्रुहान अहुत। मितः निर्मि नम**ञात भक्षः।** श्रद्ध मृत ।। य **जारन नक्षान** सिंह रक्षत रम्थ महन । প্রকাশ্যে বেমন সূথ তা হতে গোপনে ।। ८मई ऋाटन मणिश्रटन मिक्सि विभाटक । **সাহ**স পুরিয়া নাচি জানায় কাহাকে।।

এ সৰ বৃত্তান্ত নাহি লানে কোন জন। अंकि। ताना विवादकत करत आरशक न ।। বিশ্বস্থর শ্ইবেন তর্ক্সিণী পতি। লগ্ন হিয় করি পর করেন ভূপতি।। আহলানে আহলানে চেলে বিশ্বস্তুর ভাষ সনোগত ছিল খত মনেতে বাড়ার।। বাসর ঘরেতে যেন কংগোপকথন। ভেমতি প্রকার মন সর্বাদা চালন।। विवादहत शृत्लं हम (मश्रकात मन। ভেবে দেখ সকলেতে আপন আপন। পার্নাল হরেছে ছেলৈ বিবাহের দায়। खान्य बाध्य पदि गामिनी त्राध्य ।। প্রভাত সময় রাণী ডাকি আয়োগণ। शाद्वटक इतिका एटन ऐलांतिक मम ।। যতনপূর্বেক ছাতি বরে জানাইয়া। বাটার ভিভরে লন শঞ্জ বাজাইয়া 🖁 😓 গালেতে হ্রিছা স্পর্ক করি হলধনি। কানমুটি দেন তারে কোন কোন ধনী।। এক এক ছু ড়ি থাকে বড়ই বজ্জাত। কানমুটি দিয়া শালা করে রক্তপাত।। বিশ্বস্তর পড়ে এক বক্ষাভির ঠাই। त्थाला मिन्ना कानगरल जात मन्ना मारे।। ্জান্ডাবেংকে! মুখ করে রন বিশ্বস্তর। ভারমেনে কীল পড়ে পুষ্ঠের উপর।। গায়েতে হরিদ্রা আর স্থাতি দেন করে। कि। भरे वृद्धि। तम उन्भिनी उद्धाः। रविष्ठ हता याग यथा उत्किशी । अञ्चलाची भन्नातानी भन्छाद मिन्नी ।। কমার এহকে বিয়া চাহি ব্যিপারে। जो अवार्ग कर रांगी करा दरात्राद्या दन । मधीलन तदन क्य कहि सम्बद्ध । নিজাপিতা আছে মাত: কুগালী কোনার অহিক অবলি দিবা ছিনি নিডা হান। নিদ্রাভক্ত নাছি হয় করি অধুমান ।। ভামরা ওয়ারে বেডে নিধের ভারার। একাকি থাবেন রাত্রে বহা কবি ছার।। मधिगटन नाहि काटन तानी क्रांटन मटन । कालामुगी नव कर्म करसङ् लाभरन ॥ यांशे ८होक हिस्सात पूर्व मिटन शदत। উলটিয়া পতিবেক আপুনার গরে 🔢 তর্জিণী **বলি সবে** ভাকে উচ্চস্বরে / থালি ঘর রহিয়াছে উত্তর কে করে।। স্মানক ভাকেতে যদি না পান উত্তর। जिंदी जिंदि कति मदव इंग निक्र खत्।।

কপাট ভাঙ্গিকে রাণী দেন অন্তমতি। श्रमाबाट्ड दशदेन बात यटङक यूदकी ॥ প্রবেশ করিয়া সবে নিরীকণ করে। রহিয়াতে ছার বন্ধ কেছ নাটি ঘরে।। পুহুমধ্যে তর্কিনী দেখিতে না পায়। फ्रकाल करणन हानी तल नाहि लाखा। সাণে কৰা দেৱৰণ করি আগিমন ! ख्दां क्रिनी श्रीबार्यम (क्रिन व्यव गत ।। মনুষ্য এখানে নাহি প্রবেশয় ডরে। (मदडा ब्रहेश अर्थ नीव कमा करता। विवान कटवन वानी कृति होहकात । হালে কে শেলাঘাত করিল আমার 🛭 खिसन कात चानि करति इति।। আবার জীবন ধন কৈ করে হরণ।। वरमहाता होती जीवी हातिमिटन हान। भावक समरह भन्ने प्रिवादित भाव 🏎 করেতে করিয়া পট করি নিরীক্ষণ। অবাক্ ছইয়া কন এ আরু কেমন।। ভাবিলেন রাজনত্ত চিত্রপট থানি। এখানি পুৰেতে আমি কভই বাৰানি।। এই চিত্রপট ছিল ভুরঙ্গভিতরে 🎼 ভুর কের চারি আছে আমার কোমরে 🕈

চিত্রপট সেইখানি কে রাখিল আনি। घटि गव अगुरुव कि हृद्व न जानि।। अश्रम कि कव अपि निया विश्व हरत । নে আছে হরিতা মালি ঘানির ভিতরে 🔢 ধর্মা গেল ভাতি গোল গেল অহজার। कलारक भृतिन दम्भ ्याय सका प्रांत ।। বুদ্ধির মাগর রাণ) অভি বিচক্ষণ গ অবিহাস চলিংখন বৈচ নিকেওল চ क्षान अर्ग ध्यन् पृष्ठ एत्राक्षर्छ। सि**रिका** किकश्रेष्यास क्र**टल**क (१ भाक्षे स्थान वर्णमा भागी हम सामाध्या । एने शामि त्यार्थ इं^{ति} मुक्त जनिक**न्।**। ভথান পদন করি রাজার নিকট। प्युक्तवीदा रगरल रहन एने श्रीन शुक्रे ह ক্ষেন ইন্তান্ত সৰ নূপতি সদন। শলৈবভা আদিয়া কল্যা কনিল হরণ।। গুহ্মধে। তরজিণী নাহিক আ্চার। भक्षा अपूर्ण करत त्माव किव काव ॥ বিনাচেয়ে অৰুপাৎ হলো বল্লগাড। বলি ৰাণী শিরে লাণী করে করাঘাত।। ত্তই পট মহারাজ ফরিডে গিলন। ূঁএক প্ৰতিমূৰ্ত্তি আছে ছপটে লিখন।।

নির্থিয় চিত্রপত্ত করেন মনন। বিক্রমকেশরী ক্রত স্থানি প্রেরণ।। প্ৰমথ কৰ্ত্তক পট দেখিতে দেখিতে। তাহার নিনের লেখা দুট আচ্মিতে।। এঘটন। সজ্বটন সকলে বিস্তার। আপনার পরিচয় নিমে লিভি ভার।। গন্ধ বিবাহ করি হয়েছে। শ্ভা আৰু সর্মেতে করি প্রায়ন ট পতি পাতি নৱপতি হইয়া বিষয়ে ৷ নহিষীর প্রাতি কন গেবতা তে। নয় ।। নেবগণ আগমন ভেবেছ নিস্চয় 🛊 তাহাত্রম সে বিক্রমকেশরী ভনর।। ক্রিয়াছি যার কন্যে পুর্বে অন্বেষণ। সে জন এ জন রাণী শুন বিবরণ ।। ণ সর্ববিবাহ করি করেছে এছণ <u>।</u> ष्ट्रनाथ। करतम नाहि (यस्त वहम्।। চিত্রপট মধ্যে সব লিখি বিবরণ। আতত্তে পলায়ন করেছে তুজন। এ কথা শুনিয়া রাণী হাত দিয়া নাকে। वरण विभि द्वन क्रिकि होताहै विभारक ॥ হায় রে বিধাতা এত করিয়াছি পাপ। **ारात्र कातरने भिन्न अहे मनलाश्च**री

अकुरण दांदतक यनि उत्तक्षिनी कत्। ए। इस्म कि अपूर्वि जात संदेश हम । বোণার পুরুলি বাজ। মুর্চাল কোথায়। তোর জনো অভাগীর প্রার্থ কেটে যায় ।। कोहारक ए संक्षित राज्यात कोत्र, शाकिएक कीनम बाहा क्षति कीवम ।! এমব রন্তা**ন্ত য**দি দলির। জানিত (अकारतास धार्यभेडे खाँगां के कहिए।। नकः। सार्व सर्किनीतः। कस मुख्याम । त्रक्षती चित्र दुनि हरसम्ब अकाम II লখিগাৰে দৰ জালে কেনে বল জার: অপ্রকাশ বাহিনাতে ভরেতে তোমার দ छालाधालि अधि गाउँ समक्तित त्यार । त्नाय यापि दक दकाशात भीकाव शादसद्ध ॥ ব্যাকুল কি কাম র। । ছিত্র কর মন। জাকুলে কুলান কল জীমখুগুন্ন।। ভাৰতা ব্যক্তিয়া আছে তারা ভূই জন। ত্ববিত আনিব দোঁতে করি অথেমণ।। আপাতত বিশ্বস্থরে কি করি উপায়। এখানে কর্ত্তবা নয় বংখিতে উহায়।। कि कतिवैभन कृत्य हत्या विश्वस्त । निष्ठा केंद्रिय भट्ट अति दृष्टि कटत्।।

রাণী কন খাহা জান কর সেই কায়।
ভাল মন্দ আমি নাহি জানি মহারাজ।।
ইহা বলি মহারাণী নিজালয়ে থার।
মহারাজ বিশ্বস্তরে ডাকিয়া পাঠান।।

-

মহবিকি নিকাতের বিশ্বযুরের মৃতিত কথোপকথন।

ME14:

পুরোহিত পুত্র আলি আশীলাদ করে : তাহারে কহেন রাজা আন নিশ্বস্থনে।। ভা**ন্ধ আ**জঃ অ**নুসারে পু**রোহিত তান। থাবাহন নুপতির বরেব শুগান।। দিশস্তর কন লগ স্থির কর বাবে। পুরোহিত পুত্র কন জাগমন মারে॥ नत श्रेन करह नश्च छछ शास्त्र हर। অংগাৰে যাওন বিধি চল মহাশয়।। निवरम दिवाह हरत जासूमान हता। পুরোহিত পুতা কন গরুলেতে ক্য়।। हिल्लिम विश्वेष्ठत वर्षात्र तालन। রাছা কন মিউভাবে শুন বাছাধন।। আমার প্রতিজ্ঞা যাহা আছে তুমি বানী তাহার জন্যথা আমি না করি কর্থন।।

शाद्वरक यनाशि कान पेरिक देवसक्त । ভারে না বরিৰে কল্যা এই নাত্র প্রনা ভোমার নরন ভারা দুগ্য খেন ভারা।। সম্প্রদানে অসমতি পরিবার ভারা । কহিতেছে বিশ্বর শুদ মর্পের পরিহাস জ্ঞাভার সাম নিবি নয়।। বিবাহ না হবে ভবে মরপতি ক্য। मञ्जीका गर (हर्स कत्रह शतम । বিশু বলে ছিল বলা আগ্রেচে উঠিত। চলিয়া থেতেন দেশে চইয়া ইঞ্জিত।। গালেতে ধ্রিজা দিয়ে বাডাইকে আশা। এখন কর্মবা নয় করিছে নির্পের। रक्षम कवि कव युर्गि एस गरीलाख । कानसूकी हिल करी जानांत क्षाट्य त गलदर्गीम क्षेत्रिक रिमा सुरूत हेन्ह्रा इस । काम मुद्रच किएत यात रुखे महानात । আক্ষেণ ক্ষিয়া বিশু ক্ষিতেতে কত (भागारके इंटरल र्रका मिखनात वर ॥ कछेक मिकरे कार्ट्स ज्रहर शायान । মাডাখুড়ে,ভাতে আমি ভাজিব পরাণনা अवस्था शासमाह मद्द विवाहन उद नमा क्रिया कम अगटह प्रोक्त है।

্রতাতাগী রাজা তুমি মিথাার গোষাই। ব্ৰস্থাত হলে তব পরিত্রাণ নাই।। যে না জানে সেই জনে করে অনুরাগ। কলত প্রকৃত ভূমি ভুল্নি রুনে বা**গ**়।। পিতা হয়ে ছুহিতার ধর্মা নম্ট করে। তার মত পাণী নাই ধরণি উপরে।। আখারে ব্রিভে ভব ক্ন্যার সমন। अञ्चितांनी स्टब्न कृषि कत निराज्य ।। ্ভূপতি কহেন বাগু কত বল আর। ইংশ্রু গ্রাহের রাজে বিবাহ কন্যার।। केळ्। देशे क्रां क्रमां क्रांद्र यि नात । — মেই সে হইবুংপুড়ি আছে পূঞাপরে ॥ टम कर्षा विजीस बात्र भात नाहि इस । বিশ্বস্থার চলে যাও জাপন আ**ল**র ॥ ।

একণা শুনিয়া বাপা এক দুকে রমণ दङ्गाधां उर्व स्थम मख्दक श्रवन ॥ ं विश्व निश्वभाव रस्य किस्त यान यस्त । নয়ন যুগলে ধারা অবিল্ঞান করে।।

अध्यक्षक्रियोव यूर्यमा या क्रम्य क्रिया नक्षम । প্রার ৷ त्रांकभूळ वास्कृता स्टार महाशेष्ठ ख्यादवरम् कारक दमादर व्यवस्थितमञ्जा

नाटमानव नम जाटह मिक्टन छोहात । ভাহার দক্ষিণ স্থান বড় চমৎকার 🔢 শেখিতে স্থানর অতি নিবিড় কানন ! প্রবেশ করিন্তে নারে রখির কিরণ 😗 ঝাৰির পাতান কতে ভাতে দীপানান! विजीत देननियात्या १३न कूना कान ॥ ছেরিয়া প্রমথ নেই মলোরম বন। षाहरण ४हेश यम दलता कावन । उप्रक्रिती मधियाँदन कत्र नामनाद्वा **उ**त्रिभी कहित्यम याहित (पश्चित्र ॥ শ্রমণ ক্রেম জিলে ক্রেমন বিব্যা क्रमनी श्रीकात श्रात एक करत भवान ॥ ভয়ানক পশু পাকী ভারণ; ভিতরে। क्शन कि खेशमर्श खुटन खर करत ।। বিশেষ আমার তাঙে পাতি ছু:সম্প্রা তাহার করিবে থিনে সর্বলাই ভর ।। একেত রমণী ভূমি গর্মনী তার। সতত পরত শত কিরে পায় পার।। भर्ष नाती विवक्तिक मायुर वटन । ट्यामारत्र महिषा त्यच्य महि मद्र सम्।। _ **একাশ বনিত। সহ ভারণ্যে গম্ম**া ভাষার জানকী হরে পাপিও রাবণ।

अवर्गा जेर्भाष कडा संख्या नाहि जात्र ब्राट्स्क श्रेटिकी रूरत त्यांगि दकान हात ॥ কানলে লইয়া গেলে ভোনার পাবনা। रहरू मीकार् दिया पारिक मास्ना। রাজার ছহিতা কন করিয়া জন্দন। र्वारक्क (मधिन नार्ध कामन (कमन ।। মুনিগণে তপোবনে করেন সাধনা গ स्वनिज्ञाहि प्राचि भाई मिथिएउ वामना ।। পথে নারী নিবজিতা এখন যে ভয়। भूटक दक्त नाहि भरत हहेश देवश ।। ভবে কেন স্থাগর সাক্ষাসমা নারী। कि काइट पालिटलम तुविधास माति। সেই ভাব এই ভাব করি অমুভব। অত্যেতে যে ভার ছিল ব্যতার সে**খাব** ৷৷ প্রাতন আনো হলে জার বা কি হরে। चुँ एक इन करत वन मान्कानि कि करवा। এখন অন্তরে এই উপজন ভয় ! णाह करामिन Colon काहि नो किर्हा ।। यमाणि जामात कथा कर्द्र (रूनमा भवाद का जिन जागि कति जनन्त । **बह् मठ** करा कर अनिमीत सुर्ह्य के काश लाग मांज्यक मक महनकद्ये ।।

করেন রাজার স্কৃত করিয়া আক্ষেপ।

যদি কালী কুল নেন ব্যিচিব এ খেপ।।

হরেছি পুরুষ হয়ে নারীর অধীন।

এ নক্ষটে অব্যাহতি পাওয়া স্কৃতিন।।

ছঃখিত হইয়া পরে য়াখার কুলার।

শীকারে নইরা ধেতে হইল খীকরে।

্ এ এথডর জিগীর **মুগ**হা গমন ।: প্রায়ার ।

वानिनादक तास्त्रभूक व्याहिन श्रीकांत ।
लक्ष्मक भगर यान मिश्रोदक भीतात ॥
हिल्लाम यून्तोस भूनिक भरहित ॥
व्यक्तांद उद्ये श्रीक क्रानिक व्यक्ति ॥
विकास मह्मा इस उथान श्रीकांत ॥
भूनिक सद्य करक स्वाकारन यात ॥
भूनिक स्विनी मर्ग नेमा व्यक्ति ॥
मानिया स्था मिरिक क्रिया समा।
वा मानिया स्था मिरिक क्रिया समा।
वार्गिन राजाम मिरिक क्रिया समा।
वार्गिन राजामहान कर्यक मन ॥
वार्गिन राजामहान कर्यक मायन ॥
भानिक देशा संविक हिनक स्था

অভিরম্য স্থান হেরি তরজিণী কন। किছ कित क्या ८६था शाकिएक मनम ॥ মুনির পদ্মীরে করি মাতু সংহাধন। ষভিবাৰ করি যাস এই ভপোবন।! ইহা ভাবি তর্ফিণী যান ধীরে ধীরে। উপনীতঃ হন এক মুনির কৃটিরে।। দরশন্ত্র ভুনিপড়া মুনিবরে। রাজ বালা নত শিরে নমকার করে।। সুনিগত্নী আশীৰ্কাদ করি তাবে কন। निकि ८६१क गत्न धारा करत्र घनन।। অল্ডা কাঁহার বাফা কে পারে বাডিডে i পতিত্রত: দতী ভাছে মুনির বনিছে।। 🦠 ভরক্ষিণী ভানি অঞ্ তুইল স্পাদ্ম। রনণীর পক্ষে যাহা আভ **অলকণ**্যা ख्या टेश्टड छूटे छन क**ब्रिश शबन**ा প্রবেশ করেন ক্রমে নিবিড জানন।। মহিব ভলুক ব্রাণ্ডর গঙার 🎼 পালে পালে কিরে ব্যাত্র শখ্যা করা ভার।। তর্জন গর্ভন করি ডাকে উচ্চন্থরে। গর্ভিণীর গর্ভপাত ভূমি কম্প ভরে।। তাহা হেরি তর্মজনী ভয়ে আশ্চমিস।

নহৰ স্থু ডিভ ক্ষি ক্ইল সূক্তি তথা

বিবর্ণ হইল বর্ণ ভির চকুলার। নিঃশ্বাস রহিত হলো যেন স্বাকার।। त्म मव (इतिशा भव दक्षभिति शन्सम। **१२८लन (यन** मिन भक्तित कातन।। নমুহ বিপদ গ্রন্ত হলেন কৃষার। হেনকালে ঝড় বৃচ্চি হয় গানিবার।। আক্সাং বজ্ল পাত হইতেছে ঘন। 'मक्क कर् इ किया (यस कति दश्य धन ॥ কে কোণায় উত্তে যায় পশু প্রক্রিগণ। क्षमय भूद्रज भिष्ठा खर्फाक त्याकन ॥ খারণ্য ভিতর পথ খুঁজে নাহি গান। रा निर्ध किरिया छान रहोनिश मगान ॥ मिर्क्त निर्मेश नाष्ट्र त्यक्रे मिट्रा यान । मंकिंग लिक्स शुर्ख द्शि गाहि शाहा। যে দিৰে উজৰ দিল ভাবেন নিশ্চয়। त्म मिश दम मिश सम्र विश्व है इस ।। অরণ্য ভিতর ভ্রমি রাজার কুমার। কন কোথা ভরঙ্গিণী রহিলে আমান।। विश्वमान साहि कान कन उक्त शदन । कार्गाम्भक उत्रिक्षि अटमटक क वटन ॥ -मात्र कि দৈখিতে পাব সেই বিধুমুখ। जारांत विरुक्तन (बेटन क्टिंगे यांत्र बुक् if

धम् धम् वरन करतन सम्म। পুর্বিস্থানে রাজকনা পাইয়া চেতন ॥ সম্বে নাহিক ছেরি রাজার কুমারে। वाक्कना। घरण्डम इन वारत वारत ॥ জান খুনো রাজ কনো অতি খুল মন: পড়ি ঘরা বহে ধারা পলিত নয়ন।। कन (काया आवनाय एक्सा एक अपान । इड्न इड्न गाता उन शिवनानी।। ধাহাকার করি কন রাজার নন্দিনী। कि स्मार्य अकिश शिल करत जनकिनी 💢 ত্বঃখেতে পরাণ ফাটে কর কার কাছে। দোসর আমার আর নাহি **আ**র্থ**ী পাছে**।। পাপিনী আমার ভুলা আছে কোন ঋন। রখণী হটয়া কবি পভিৱে নিধন।। देशकाल भगकाल छुदे (बाहारलम। ভাপনি মজিয়া নাথ ভোৱে মজাজেম । ক্রিভান তব বাকা মদাপি আর্ণ। प्रक्रिश कि छोड़ा ६८न छडेड अपन। श्चार्यनाथ त्थम नाहे प्यामि यक्तिवि । ভোমারে কুণলে যেন রাথেন 🕮 হয়।। কপালেতে করাঘাত করে অঞ্চলে। প্রাণ ত্যনিব প্রাণ নাব্যের বিহনে 🕦

প্রসন্ন ভালুক ব্যাঘাহও তথ্পরে 🗀 🦠 প্রভাগিরে স্থান দেও উদর ভিতরে ।। কান্দিতে কান্দিতে ভটুনি । গাঁজোখান। ८यटे निर्देश हकू यात्र ८यडे निर्देश गोस ह व्यक्तिरा भारत कांश्र शांकांत्र मिल्लो । कानरन एएएतन एमन हरम अनाथिनी । একেবারে পড়েছেন ভাতৃল পাপারে। বিলা ভাষা ছংখনরা কেনা ভাবে ভাবে । एक्टिन छत्र सिनी दक्षीम उद्यक्षात् । खराहता च्यमात। अधिसा अखरत ॥ শ্মনে অগ্ৰন্ত আছি হান গাঁৱে ধীৰে। धिभगोछ देएदन रमचे भूमित कृषिदन ।। ानक श्रहिती मिनि नाम छेम।वजी । আতের বিধার চিজে টেব্রানিভা অভি। नकि शिद्राम गर्म भौति मिल कार्म । এখন এলন। কন্যা চান পথ পারে।। হেনকালে ভ্রফিণী করিয়া প্রথাম। क्रम मा (डामांत कामि क्रमा) आईआम । अनक अनक **कृषि अ**नने! गर्यानः निविधास मेशाव्यास (मध्यान मान ।) नगरनटक योतिशाहा नरह क्रिकाम। লক্ষানের শক্তিগেলে যেন্ন শ্রীরাম।। ₹4

म्हेंब्र्ल खत्रिकी हृद्य छ्वान होता। পতिর বিচ্ছেদে খেদে বহে অঞ্ধার।।। কান্দিতে অসক্ত বাকা ক্ষুদ্ধি হওয়া দায় স্বর্ণতা রাজস্তা পতিত ধরার ॥ লেইকরি মুনিপড়ী কোলে করি লন। লইলেন শিরভাণ করিয়া যক্তন। ब्लिटक ज्यक्टल खांत मुख्यत्व तमन। कना जारव कम जोरत करताना रत्कित ।। আ*ীকাদ করি বাছা হবে পুত্রবতী : হুইবেন তব পূত্র পৃথিবীর পতি। শান্তনা করিতে নাহি পারিলেকীডিনি कनक निकारि योग लाख एतकियी।। **उत्रिक्षी अग्रदकत दिम्मिका इत्रा**। করজোজে কন পিতা আছে নিবেদন দ ত্রিভূবন মধ্যে আমি অতি অভাগিনী। আমার সমান আর কে আছে ছখিনী।। कृथिनीत कुःचं दांडी कहिरत व्यवंगे। शांषां विषदंत्र त्यान कांत्र शक्षान ॥ জনক আমার যিনি নির্কাচ্রে পরি। প্রমথ জামাতা তাঁর অভানীর গতি ট বিক্রমকেগরি হন আমার বস্তর। যার ভবে এ শংসারে ফাঁপে স্থরাস্থর।।

সকলের অব্যোচ্তর আসিয়া এখানে विপादक होताई क्षां कह माहि खारम ॥ श्वामीश्वत हरेस वर्ग इरे भागविनौ। রামের পৃহিনী যেন জনক ননিংনী ।৷ ভরক্ষিণী পবিচয় দেন ৠযিবরে। সেং করে দুনিবর কম তত্ত্তরে।। স্থির হইয়া বংসে থাক কিছু দিন। প্रতিষহ सम्बा हृद्य त्रस्या क मिन्।। পিতা সাতা স্বামী আরে সকলের মনে। भारक वरित करव (मधी (क्यांगा मा मारन ॥ চিন্থা ত্যাজি চিন্ত ভিন্ন করগো এখন। व्यक्तिव्यक्त्र मिन गाँखा हहेरत भिनान ॥ রহিলেন রাজকনা। মুনির আশ্রমে। রাজপুত অবিরভ অরণোতে ভ্রমে 🛭 বালিকা জনক প্রতি জনক সমান। লনক ভাবেন তাঁরে কন্যা করি জ্ঞান।। পদ্মাস গভবতী হন তর্জিণী। পঞ্চামৃত দেন তারে জনক গৃহিণী 🕕 त्य भारम त्य मिया तेमस तमनीता आत्म । भूमिण्ड्री दमन छाड़। शतम यखदन।। भग्नमान शर्कतं ही दोक्यकमा। इस । नाम करत सूनिवदत सूनिशत्री कन।।

छूहि छ। दत्र मिन मीथ कत व्यक्ति। ্র্যুনির বনিভাগণে করি আবাহন।। ' सूनि कन नक्त ज्ञा ज्यानित अथन। ীনিমন্ত্রণ করি যবে করাও ভোজন।। বনমধে প্রবেশিয়া সেই তপোধন। কল মূল অধিবলেন করি পর্যাটন।। আনিলেন নামাবিধ ফল মূল কত : ध्य योशः धनन करत्र दमन खारत उठ ।। ग्रज्ञ दमन किर्म फिल्म काहरम। তর্ক্তিশা পরিধান করেন যতনে।। মুনিপত্নী মুনিকন্যা আসি ভঞ্চেবনে। ভে। জন করেন সবে হর্ষিত মনে।। বাছকন্যা ছে**রি সবে ছাউচিত্ত অতি।** আশ্বিদি করি কম হবে পুতাহতী। ন্মানান দশদিন পরিপূর্ণ হয়। 🐃 🤲 वाकात मिम्मी अक श्रुव धानवत्र ।। विन्द्व नारम धाओ ज्योगि नाफ़िल्फ़्न करत । যথাশক্তি দিয়া ভারে পরিতোষ পরে।। বিন্দুর বড়ই আহে চক্ষের শীলতা। যে যা দেয় ভুন্ট ভাষা স্বভাব ধীরতা।। দিনে দিনে বাড়ে পুত্র যেন শশধর। मभर्के अपन शुरुष रहन श्राचित्त ॥

দেখিতে স্থান অভি হুইল নামান। बीर्लाभाम नाम उत्य स्मन धार्यनम् ॥ भागवर्ध दशःका कुमांत यथन। ভগরার্থ দর্শনে মুনির গমন।। আপনার পদ্ধী ভাকি কন ঋষিবর। নীলাচলে বাই চলে নিভান্ত লার ।। মৃনিপত্নী কন প্রভু আমি ছাড়া নয়। মুনি কন ভরজিলী কার কাছে রয় !! त्मरे दानी एत्रिक्नी कतिश व्यत्।। পড়িরা ধরণীপরে করেন কলেন।। অংশতির সমূলে ঘইল উৎপাটন। রোপণ করিলে পুনঃ পার কি জীবন।। বিধাক। আমায় দেখ হলেন বৈমুখ। ্রত ছঃখ পাই তরু তপ্রপরে ছ্থ।। নারায়ণ বিভ্সন হন যারপরে। অন্যের মাহায্য ভার কি সুসার করে।। ভাদারে সাহায্য ঘদি,কোন জন করে। বিধাতার কোপ গ্র ভাহার উপরে ॥ हेकात श्रमान अहे श्राडाक कलिल। कांगारंत काळात्र भिन्ना धननक गिक्ति।। বাহা হউক্ছিল এক পত্রের কুটীর। आंत्रात कावटन छाना हरेल बुनिस्ता

PARK ANDAN

নরন সুদিলে থেই হেরে হ্ননীকেশ।
তাহার বাসনা যেতে তাহিরা এ দেশ।
কর্দমাহাইল পূথী নয়নের কলে।
প্রবেশ করিব আমি ক্রেল্ডলিভানলে।
ভরঙ্গি এ প্রকার করেন রোদন।
ভবোরন তাঁরে কন করিয়া প্রবেশ।
কেন বাছা কান্দ ভূমি চল স্মিভার।
ভোমার রাখিরা বেতে ইচ্ছা কি আমার।
ঝাব্রর পূর্বোপর জানেন অন্তরে।
নীলাচলে যাওয়া মাত্র ভরজিণী ভবে।

জনকন্ধনি দান্তীক ও তর্মাদনী সংহতি দীলাচলে সমস্য

তথনি পঞ্জিকা দেখি দিন ছির করি।
অমনি মনন ধারা ভাবিয়া জীহরি।
অগুভারে থান দুনি মধ্যে তরকিণী।
পশ্চাৎ চলিরা থান মুনির গৃহিণী।।
খীরে ধীরে আগমন স্বে লাকিলিত।
কত দিনে যাজপুরে হন উপনীত।।
মহা মহা পুথাকের নাজিলার স্থান।
সে ভানে গ্রাডে হয় একই সমান।।

নেই ছলে আই আদি করি সমাপন
পার হরে বৈতরণী করেন গমন।।
আঠারো নালায় ক্রনে হন উপস্থিত।
যেই স্থলে ইন্দ্রভাষ কীর্তি বিপরীত।।
সেই স্থান হৈতে ধলা করি দরশন।
স্থাত করে কঃ যোড়ে মহাভগোধন।

बनक कवि कर्जुं क बरणशास्थ्य छ ।

কে জানিতে পারে প্রভু মহিনা ভোমার।
বুদ্ধরণে নীলাচলে হলে অবতার।।
অগতির গতি ভূমি জনাপের নাগ।
স্বলনিধি কুলে আনি হলে জগমাথ।।
বির রয় লয় হয় সকলি ইছায়।
নভুবা বাজারে লোক অন্ন কিনে খায়।।
বর্ণাবর্ণ ভেদ নয় এক বর্ণনয়।
বিধবা আদিলে হেথা উপবাসী নয়।।
দেবতা মানবরূপ করিয়া ধারণ।
উচ্চিত্র একান্ত চিত্তে করেন গ্রহণ।।
জতুর বধির জন্ধ যে যেখানে রয়।
ভোমার ক্ষপার কেহ উপবাসী নয়।।

वाकारतरा वाज जानि विकाइरह नव। এখানে বিমলা প্রীত আপনি ভৈরব।। একবার জীব যদি করে দরশন। আর না আদিরে ভবে ভোষার বচন।। তাহার নাহিক আরি যমের আশক্ষা। বৈকুঠে চলিয়া যায় বাজাইয়া ডকা ॥ স্থব করি ঋষিবর হন অগ্রসর। প্রবেশ করেন ক্রমে পুরীর ভিতর।। শ্রিমন্দির দ্বারে গিরা ছেরিয়া শ্রীপতি। অফাঙ্গ লুটায়ে ভূমে করেন প্রণতি।। শ্বনিপত্নী তরঙ্গিণী হেরি য**ত্তপত্তি।** প্রণাম করিয়া দোঁহে করেন মিনতি।। চক্রতীর্থ ভীরে গিয়া করিলেন বাস। এমন বাসনা মনে বাস চতুর্মাস।।

श्रम्दरन नीलाहास प्रमम

রাজপুত্র ভরক্তিণী করে অসেষণ।
নগর পর্বত গুহাবন উপরন।
উন্নাদ হইরা, ফিরে করে হাব হার।
অবিশ্বামে ফেনে বলে প্রেন্দী কোথার।

षखटत कोटन दत्र थिएत एम विश्वपन। শয়নে স্থপনে ছেরি মুদিলে নয়ন।। শক্তি বিনা শক্তি নাই হয়েছি তুৰ্বল। निनाट्य नाहिक इत्र ग्रुट्य (म्थता क्या। শকলের ভাগ্নে এই করি নিবেদন। ≥ अ कि ना ध्य वल अ अकोत मन।। ক্রীবিয়োগ মনে শোক যত টুকু হয়। তাহার অধিক ক্লেশ কিছুমাত্র নয়।। প্রকারে কান্দিতে নারে ল**ড**ার কারণ। তার সঙ্গে সঞ্চি হয় এই তার মন।। वार्ष्ठिक किरम खित हहेरवक जीव। শক্তির কারণে ফিপ্ত হয়েছেন শিব। মন্ত্রথা করিতে নারে ক্ষেত্ত নিবারণ। वृष्ट्यकारण विदेश करते हैशत कांत्र 🖽 তথাপি পূর্বের কথা হইলে স্মরণ। শোক্ষিক্স বারি হয় চক্ষে আকর্ষণ ।। রাজপুত্র তর্কিণী না পায়ে উদ্দেশ শরীর ভাজিব হির কৈলা অবশেষ। गर्वराम अरम्बन क्रिस विकल। व्यवदेशय (मिथिवादत यान नी लाहका। (मरे सारन छत्रिक्षी यमि नाहि तहा। তথার ত্যজিব প্রাণ প্রতিজ্ঞা নিশ্চম ।।

(35)

নিশ্চয় করিয়। মনে রাজার মন্দ্রন।

হইলেন অগ্রেশর করিয়া ক্রন্দর।।

বনিভা বিচ্ছেদে অভি উচাটন মন।

চলিলেন অভি বেগে নক্ষত্র যেমন।।

একেবারে উপনীত জলনিধি ভীরে।

যেথানে শ্রীপতি হিভি চন শ্রীমন্দিরে।

এবেশ করিয়। পুরী হেরি গদাধরে।

মনের বিবাদে হুদে করাছাত করে।।

এত ভুংথ দিননাথ নিতেছ আমার।

নক্ষ জীবে সমভাব কেবলে ভোমায়।।

দিব: নিশি ভেবে ভেবে হইয়াত ক্ষীবা।

নাঠে যাটে পড়ে থাকি যেন দীনহীন।।

নিকাল বাজার পাতের প্রতি রাজ্য সমর্প।

সে স্থানে নির্কাই রাজা চিস্তাযুক্ত সন।
জাসাত। কন্যার নাহি পান অস্থেয়ণ।।
রাজা রাণী ছই জনে করেন ক্রেন্দন।
কোন মতে প্রবোধিতে নারে কোনজন।
রাজ কর্মানা দেখেন নির্কাইের পতি।
নাহি রব যেন সর্ব সকাতর অতি।।

রাণী কন নিবেদন শুন নরপতি।
নীলাচলে বাই যদি কর অনুমতি।।
হয়েছে আমার ভিত্ত উচাটন অতি।
বারেক করিয়া আমি অথিলের পতি।
এ কথা শুনিয়া রাজা ভাষি আঁগিনীরে।
প্রিয়বক্ষা তত্ত্বর কলেন গণারে।।
অস্ত্রাক হটয়া যার পুরীরে ভিতরে।
দেখির নয়নভরে দেব শ্যোদ্যের ।
বাজারণি অভিপ্রায় বুঝি পরস্পর।
বিভরে উভর কন চলগ্ তর্পর।।
পার মিল ভাকি রাজা রাজা ভার দিয়াল
চলিক্লে নালাচকে রাণী সক্ষে নিয়া।।

-

श्रहाका निर्मात होने हम्मकला मधीनदादि मीलोहरन असम्।

तथ तथी भमाणिक घटन व्यवस्था । त्रांका तानी शक्ष भूटर्स इन व्यादताहन ॥ श्योमा क्षया लग गटम कल खुवाकार । घोलालन ममिखादित गरेश खोखात ॥ জামাতা কন্যার কথা স্বরণ করিলে। অমনি বয়ান ভাগে নয়ন সলিলে।। তুলদী চৌরার কাছে হয়ে উপনীত। গজ হতে রাজা রাণী নামেন ছরিত।। भमखरक हिनात्म नरश रेमनागन। (इनकारन शाहेरलन इक्षा न्त्रभन ॥ मक्तांत्रस्थ भूतीयद्या करत्म शमन। रिष्ट्रे शारन जीयन्तिरत जीमधुरुषन ।! হয়েছেন জনার্দন বুদ্ধ প্রবতার। সমিভ্যার ভদ্রা আর রোহিণীকুমার ।। ताका तारी छूट्टे अटन कति पत्राना धाञ्चनकं आफि करतं शावियमगर ॥ প্লাতে অ্ঠিত হরে করিয়া প্রথাম। বাস করি রহিলেন লইয়া-মোকাম।।



নহারাজা বিক্রমকেন্দ্রীর পাত্রের প্রতি রাজ্য সমর্পন।

বিক্রমকেশ্রী রাজা স্থরক্ষের পতি। একমাত্র প্রাটরাণী নাম চিত্রবভী।।

রাজা রাণী পেদান্বিত প্রমণ কারণে। व्यविधाम दर्श्वाति युशन नत्तरन ॥ সবে মাত্র এক পুত্ত হয়েছে বিবাদী। মহারাজ সক্ষত্যাগ্যা প্রমথের লাগি।। দশরথ রাজা যেন জীরামের শোকে। প্রমায়ু থাকিতেও যাম প্রলোকে।। বিক্রমকেশরী রাজা তেমতি প্রকার। থাকিয়া না থাকা ভুলা গমন আকরে।। দিবং নিশি সমভাব যে**ন অন্ধকার।** রাজ্যধন পুত্র বিনা সকলি অসার।। রাণীকে ডাকিয়া কন লছ রাজাভার। শীলাচলে গমনের বাধনা আমার।। কিছু দিন সেই খানে থাকিবার মন। इंडेटव शम्हारक गांदा ननाएँ नियम। রাণী কন সকরুণে ভূপতির কাছে। মহারাজ আমার কি স্থয় ইচ্ছা আছে !! যদবধি হারামেছি প্রমথ রতন! বাঁচিয়া থাকন রথা জীবভ নরণ।। সুখের আমার আর নাহি প্রয়োজন। शुक्क रहकू द्वःशांनरङ महिएह कीवन।। বেঁচে থেকে রাজাস্থ্যে নাহি স্থালেষ। क्षांकरन व क्षार्य वह रेहन (भव।।

🕍 ব্ৰাক্যধন স্বীয়জন কিছু নাহি কাজ। नैनिजात नत्त हन यांव महातां ।। शमन स्ट्रेरव यथा व्यामि उत् माथि। অবজ্ঞা করিলে অত্যে হব আম্বাভী।। রাজা কন রাণী যদি মাহ দমিভারে। वानित्व वर्थात्व श्रुनः ब्रांका शांवस जात ।। অন্য রাজা আমি রাজ্য করিবে হরণ। পূর্ম্বাপর এই রীভি আছে নিরূপণ।। হীন বল হলে রাজা রাজা নাহি রর। বীরভোপার বস্তুদ্ধর। জানিহ নিশ্চয়।। রাজা লয়ে থাক ভূমি মস অভিলাঘ। किছু पिन अना जानि छै। स्थं कृति वाग ।। মহারাণী অনুম;নি ভূপতি আশয়। किद्र त्यामा नदर जाना हिन त्यां इस ।। ভূপতি নয়ন প্রতি নির্**থিয়**া রাণী। জক্ষি জলে ধরা গলে মুখে নাছি বাণী।। সে ভাব দেখিয়া রাজ। কন বারম্বার। সমিভ্যার ঘাইবার বাসনা তোমার।! ভাত কর্মা অবিলয়ে করা হয় বিধি-। : পশ্চাৎ হইবে যাহা করিবেন বিধি।। বার দিয়া ব**দিলেন বিক্রক কেশ**রী। গগদে সনন যীতা ভাবিয়া 🕮 हति।।

মন্ত্রীকে আনিতে দুভ পাঠান তৎপর। প্রতমাত্র উপ্নীত হন মন্ত্রীবর।। ভূপতি কহেন শুন বচন আমার। কিছু দিন জন্য ভূমি লছ রাজ্য ভার।। দবশ্যে থাব আমি জগতের পতি। মহারাণী যাইবেন আমার সংহতি।। উপদেশ কৃষ্টি এই শুন निश সন। हेश हत्त वारका निम्न ना हर्त कथन।। ি হিংসক বাভীত নহে পর ছিদ্র কয়। নে ছিল কি বল ছিলু জাত জাত নয়।। অধার্ষ্মিক জন প্রতি করিলে বিশ্বাস। বিশ্বাস ঘাতক কর্মা করিবে নিহাস।। भारत्वधी भार निका अनादा य अना। নিশ্চর জামিবে গেই জন অভাজন।। অত্যেতে ভাবিত্রা কর্মা পশ্চাৎ করিবে। ভাহা হলে সৰ দিক বজায় থাকিবে।। বিচক্ষণ অতি সেই রাজ মন্ত্রীবর। নিবেদন করে যোড় করি ছটি কর।। मत्रभम कविवात इहेताएए मन ! আমার অসাধ্য হয় করিতে বারণ ॥ তিবে এক নিবেদন করি রাজ্যেশর। े আগমন পুন: यেন করেন ভৎপর।।

🛸 সমূমতি মত কর্মা করিবে অধীন। व्याख्यात व्यनाथा नाहि इत्त अक निन ॥ হইয়া বিদায় মন্ত্রী করেন রোদন। ুরাণী সহ রাজ্যেশ্বর পুরীতে গমন।। অগনন চলে দৈনা ভূপতি সহিত। গগণমগুল রেণু উড়ে আচ্চাদিত।। রথ রথী পদাতিক অগণ্য কিন্ধর। নহন্দ্র সহস্র অশ্ব ভাযুত কুঞ্জর।। ः किছू मिन भारत इन मश्नाम भारा। আঠার নালায় রথ পৌছিল রাজার।। র্থ হৈতে রাজারাণী নামিরা ক্রমন। পদরজে চলিলেন উভয়ে অবনি।। ত্রীমন্দরে ত্রীকান্তেরে পায়ে দরশন। ভক্তি করি করিলেন চরণ বন্দন।। কানাতে কাণ্ডার পড়ে সমুদ্রের তীর। क्तित्वम वाम ख्ल वीमारस भिवित्।।

মূনিপত্নীর সহিত রাণী চন্দ্রকলা ও প্রমথের কর্মোপকথন।

যোগেতে জনক যোগি আছেন সংযোগ হেনকালে সৈই স্থলে সৰ যোগাযোগ।।

योश जात क्षित्नन गरा जालायम। হইয়াছে মণাকার পুরি আগ্রমন।। ভাবিলেন আঁর কেন নরেছে সময়। विकास भावति विकि इंटलम समग्र ।। व्यात (भी कता नरह कर्डवा जामान। ভরকিশী ছঃখ হতে হলেন উদ্ধার 🕕 আপনার পদ্ধী ভাকি কাহন তথান। अदगाशादन दम्यि दक्त नियह वस्त ॥ **अकरांत** दोनाटकृद्य क्लोटनट्ड कृतिया। জমণ করিয়া জান খাদ্য দ্ব্য দিয়া।। মুনিরপী মুনিবাকা করিয়া প্রবণ । वालादक कारलाएक कवि करतम अग्रम ॥ ধেখালে চন্দ্ৰ গড় উপনীত আদি। रांलक मेरिक नाका कम सामि हामि।। ट्नकोटन **उस्**कन। विकाह ब्रोजन। দরশন করি ফিরে মান নিকেতন।। দেখিলের মুনিপন্নী কোলেতে কুমার। হেরে তারে নরেখনে হয় চমৎকার।। স্থলকণ সর্ব্ধচিত্র আছে এলোপালে। अदर्भव पृके इस त्रांजन ७ छाटन ॥ मंनिপद्मी अगमित्रा महात्राक कन। হৈনার কোলেতে মাতা কাহার अक्त ।। (**२**9)

ं त्रुनिभन्नी कन अपि मिहिन् वामात। তর্ক্সিণী কন্যা সম তনয় তাহার।। তর্জিণী নাম শুনি রাণী চক্রকলা। তাগ্রসর যেন শর তেমতি চঞ্চলা।। বালকের মুখশশী করি নিরীক্ষণ। আপনার কোলে লন্ করিয়া যতৰ।। সুনিপুত্রী প্রতি কন রাজার গৃহিণী। কন্যা কোথা আঁছে মাত। নামে তরঞ্চিণী।। দৌহিত্র হেরিয়া তব ত্রিপ্ত হৈল মন। क्नाटक (हांबरन इंटर वा जानि (कवन।) অনা কেই মাতা কিয়া ভূমিঞ্জীপবিনী। গতা কৰি কৰু মাজা কোথা ভৰ্মিণী।। মুনিপত্নী কন কহ কিসের কারণ। পরিচয় এও লও কোন প্রয়োজন । াজার দহিবী ভূমি অনুসাম হয়। कुः वि करन अयल्टन किया कटलान्य ।। মুনিপুত্রী মনে মনে ভাবেন তথ্যা छत्र जिन्म अमिति इत्य अहे सम्।। টভাকলা ক্ৰ ক্ৰা রাজায় চাহিয়া। नवन निम्हियां समेव जानिया ।। মহারাজ জেছাযুগে জীরাম বনিত।। वानीक पांचारम हिला जनक हेरिया।

कुमी नव श्रुक इन तरिगड़ उनग्र। কিঞ্ছিৎ দিবস অত্তে হয় প্রিচয়।। তোমার কন্যার যদি হয় 'এ ভন্য। তা হইলে সর্ব্যন্থ নিবারণ হয়।। এই বাণী কন রাণা হেরিয়া গোপালে। বিধি কি সন্ম হবে অমিমী কথালে ৷৷ ভুশতি কৰেন এত ভাগ্য কি হইকৌ হারাধন হরি কেন পুনঃ মিলা**ইরে**।। **এপোপা**লে কোলে করি চন্দ্রকণা কন। इक्टा करद नहार यारे निष्क निर्वेजन।। প্রমণ এমভকালে আসি সেই খানে। धक मृत्के ceca व्रमः **कार**ाभाग भारन ।। ক**লে কোলেতে** তব কাহার তন্য। व बन्स (पट्य (कम वाउ (सर् क्सी) পিতা মাতা স্থিতি কোণা কাহার তবয়। শত্যকথা কহি মাতা দেহ পরিচর।। রাণী কন নাহি জানি কোন পরিচয়। ভরঙ্গিণী পুত্র যদি ভবে নাভি হয়।। তর্কাপী নাম শুনি রাজার কুমার 🕽 क्रमस्त जनभात्रा वरङ् व्यक्तियात्र ॥ স্থৃতি প্রমথ পানে করি নিরীক্ষণ। र्यक्रिया विश्वमध्या इहल भारत ।।

লোবেন অবাক হয়ে চিত্রপট প্রায়। অবয়ৰ এই সেই চিত্ৰপট প্ৰায়।। यनिष्ठ लावना वर्ने विवर्ग इराइटह । শীর্ণমাজ সব চিহ্ন প্রভাক্ষ রয়েচে ॥ ক্ষান হয় অভিপ্রায় এই সে প্রমথ। বলা নয় দে না হয় জিজাসি কিমত।। क जारमा भरम गरम छ। द्वम वाक्रम । অন্তরে স্থিরতা হৈল জাগালা এখন।। বিক্রম কেশ্রী রাজ্য চিন্তাবিত অভি। উপনীত সেই স্থলে সহ চিত্ৰৰতী॥ शुक्त विमा छे छत्सत्र मध्य इस 🦏 । मितानिम नग्र कार्य नमा नकक्षा। প্রমণ অসক্ত বেতে রন সেই স্থারেরণ চিতাৰতী বাৰা ভাৱ চীন মুখ পানেঞা यमिए माकां इटला वक मिनास्टर । আপনার প্রক্র দে কি চিনিবারে নারে।। তথাত রমণী লচ্ছাভয়ে করে ভর। নয়নে না ধরে বারি বহে অভিশয়।। डिकः चटत दक्रा वरण ध्रमथ कामात ! অভাগিনী আমি বাছা জননী ভোষার।। কেন্ত্ৰ পাৰে মাৰে ছিলে যাত্ৰধ্য । **्यामात कांत्ररन दर्केटन अस क्रमहत्ता**।

विधि कि मुन्य हरना ७७ निम शद्र । . হারান মাণিক আনি ভুলে দিল করে।। চন্দ্র সূর্য্য একেবারে উদিত হুইল। অরণা হইতে রাম অধোধ্যা আইল।। প্রু হইল অঙ্গ গ্রের নয়ন। विधितत हत्ना कर्न नित्रक्त धन ॥ **इ.स.क्ला** तानी कम निर्काह तालने 🗓 कि कथा श्रमक रश छन मिहा भन ॥ 🔧 🖰 श्रम्थ रहेल अहे भारत स्वांगा यात्र । তবে বল তরঙ্গিণী রহিল কোথায় 🕡 🐣 এক দুটো রন রাজা হয়ে জান হত। কন রাণী সতাবাণী এই দে প্রমথ ।। ভির হও কি প্রয়ান্ত অবংশৰ হয়। এই খানে ভরক্ষিণী আছেন নিশ্চয়।। মনে ° এই অমুমান হতে ছৈ আমারি। মুনিপত্নী কাছে আছে তোমার কুমারী।।। চন্দ্রকলা রাণী আর নির্বাহ রাজন। 🔭 তুই জনে হইতেছে কথোপকথন।। কুটীর মদ্ধেতে যোগে থাকি ভপোধন। कार्यन भागक राज नव विवत्र ।। তরঙ্গিণী ডাকি মুনি মৃত্ স্বরে কন 👬 विद्यालादेश मद्रा भन्नी यान वहकर्म ।।

CANDEST MADE OF

চল বাছা অন্তেষণ করিগে ভারার। মনেতে ভাবেন এই বিদায় ভোমার।



প্রমথ তবঙ্গিণীর মিলন .

তরক্ষিণী সমিভারে লয়ে তপোধন। ভলিলেন যেই খানে হইবে মিলন।। রাজস্ত কন পিতা কিন্তের কারণ। অকস্মাৎ বাম আঁখি হতেছে ম্পান্দন।। मुनि कन खन वर्रम कहि रम क्थन। म्लामन इंखन काँचि सदनक काँत्र।। রমণীর বাম আর মরের দক্ষিণ । -ग्लानन इट्टल इध्य व्यवनान मिन ॥ তর্জিণী কন তাৰ্ড মাবত জীবন। ভাৰত ভুঞ্জির ছংখ কপালে লিখন ।। স্থিত আমার ধাতা ছংখের কার্ণ। ছাড়িয়া আমারে তার নাহি বেতে মন।। ছঃখের নিকটে কছ ধারে বন্ধ আছি। আমি তাঁর সে আমার ছির জানিয়াছি।। डाँशंत निक्षे भन्ने त्वह चाट्ट त्वाथ। তাঁর খণ চির্দিন নাহি হবে শোধ

ঋণের সহিত হলে এ দেহ পতন। তथन जानित छःच हत्ना विदेशाहन ।। আমি ভিন্ন আন্ট্রীনারী প্রতি এবিধান। স্পাদন দক্ষিণ বাম ভামার স্থান II য়নি কন বাছা আরু করনা রোদন। रहेता निक्रीट्ड उव छु:च विटमाइन।। চল শীঘ্র কোন স্থানে গৈছেন বনিতা। শ্রীগোপালে নাছি ছেরে হই ছঃখান্থিতা।। *ि* लिटलन उंद्रिक्षि क्रिनेटकत गरन। যেই খানে ঋযিপত্নী আর নর্বজনে॥ উপনীত হয়ে রম এক দৃষ্টে চেয়ে। हञ्ज्यका दहिंदित्वम आश्वातंत्र (मर्स ।। সা বলিয়া ধরিবের তর্ক্তিনী গলে। 🗥 वमन जिल्हा यात्र नम्दनत जटन ॥ करइम-जननी काथा ছिल এত मिन। र्ভागांत्र ना रमस्थ अक इंहेबार्ट्ड कीए॥ ° ঋষিবর প্রতি চান ঋষির গৃহিণী। প্রমধের মুখ পানে চান তর্ক্তিণী। চন্দ্রকলা প্রতি চান নির্বাহের পতি। বিক্রম কেশরী মুখ চান চিত্রাবতী ॥ अक्वाद्य मर्कावुष्ड रूटेन भिन्न। 🏁 उर्यभी के व्यक्त रवमन मर्नन

मवाकात सर्वाकात घटन अटककात 🖰 🖰 🦠 भूना (मट्ह क्षा) (यन इरेल मुक्कांत ॥ কে ক্ষার প্রলায় ধরি কান্ধে উভরায়। কচিত কাহার ভাগে। এ প্রকার হয়।। হইলেন সকলেতে সম্ভট আৰু তাপিত জীৱনেছিমৰ স্থা ব বিশ্বণ ।। হারাধন প্রাপ্ত হলে কত হথে। দয়। অপেনা আপনি ভেবে দেখ মহাশয়।। চন্দ্রকলা ভরজিণী কোলে করি লয়। 😗 তাহার কোলেজে বৈদে ভাহার তনর।। বিত্রাবভী কোলে বলে রান্ধার কুমার। नवाकात व्यक्त थाता बरह व्यक्तिकात ।। उथिकन त्माकितिक् रूपं निन्ह्रपत्ता ধরা বেন প্রলাবিত প্রকার সময়। तिहें करन नगरितार हरेन धमन। • 🕠 **और्याम्य मर्था नाहे लोक अक अन्।।** শ্বশুর সাস্থাড় কলে হর পরিচয়। रेववर्गाक्यक टकानां कृति छे छ दश छ छ स ताकतानी छुड़े शक चुहिल नियान। **হস্তগত হলো যেন**, আকালের চাদ । শিভামাত। প্রথমিয়া রাজার তনর। খণ্ডর সাস্থাড়ি পদে প্রশাস করম্ব। [ী] **তর্ক্তি**ণী সেইমৃত ধন্দিয়। সংবায়। मखन क्रितिन मुक्तिभन्नी भाषा। হরিদে রোদন তার। সকলেতে করে। বিষাদিত মুনিপত্নী চফো জল করে 🛚। (श्रम कर्त्व कम वाष्ट्र। मम उटलावटम) পাইরাছ কছু ক্ট করেনো মা মনে।। ভরঞ্জিণী স্থাতি বাংকো কহিছেন ভায়। সকল পেলেম মাড় ভোমার কুপাই । **ठस्कला मुनिवदत वन्तिया हतुन।** कत्रतार्ड कम एक जार्ड निरंदनन ॥ তব দয়া অনুসারে হয়েছে বৈভব : সন্থান বিহু**নে প্রভু অ**কারণ সব।। মহারাজ পান তাপ সভানের তরে। তুঃখানল প্রজালিত তুঃখিনী অন্তরে।। প্রসন্ন হইয়। তারে কন তপোধন। जरवद्मव भर्षा फव इष्ट्रेरव मन्द्रम ।। মুনিপত্নী মুনিবর ভাগি আঁথিনীরে। **८थमाश्विक हरत (मँ१८३ हटलम कुकैरित ।** চক্রপাণি কন শুন উছত রাজন। यां भे सक्क हटक स्नामा अभिन्न वहम 🕕 🖰

প্রমুখ ভর্জিনীয় কথোপকথন।

তর্কিণী প্রমথরে কড স্তুতি করে। বলে নাথ এ তুর্গতি অভাগিনী তরে।। যনে মনে ভিন্ন আমি করেছি নিশ্চয়। তৰ বাক্য হেলানৈতে এ বিপাদ হয় !! কাননে হাইতে তব ছিলমাকে। মন। কেবল গ্রমন্যাত্র আমার কারণ।। সতী হয়ে পতিবাকা না শুনে অবৰে 🕫 हर काल क फूफ्ला कि मना मत्रा ॥ এত ক্লেশ পাইলেন দাসীর ব্রথায়। অপরাধ ক্ষম নাথ ধরিলাম পায়। श्रमध कटहन शिष्ट्य भागक गरुल। मुख पुरुष जानमात क्या कनाकन।। তোমার কি দোষ তার ঘটে গ্রহ জনো। ুকোথা হবে রামরাজা সে যার অরণ্যে ॥ क्लात्व या त्वयां चार्ष हरवं चूनिवादत । কার নাখ্য বিধিলিপি খণ্ডিবারে পারে।। ্পতিত্ৰতা সতী ভূমি জানকী সমান। ভোমার সভী হ জন্য পাইলাম ত্রাণ।। এই সভ অবিরত কথোপকখন। **जिल्लानाटन नरस रकाटन गर्ख हुसन** ॥

এক স্থানে বাসা করি রন ছইজন। বিক্রমকেশরী আরু নির্দ্ধীহ রাজন 🛭 রথেতে বামনদেব করি দর্শন। স্বদেশ গমনে হয় উভয়ের মন 🛭 নিৰ্বাহ রাজন কন ব্যাই মহাশয়। -শকীরভে মেতে হবে আমার আলয়।। অনুগ্রহ করি ব্যাই পুরাও বাসন।। ইহার অন্যথা হলে মনের বেদন।।। বিক্রমকেশরী কন ব্যানের কি মন। রাজি তিনি হলে আমি যাব ততক্রণ।। भिक्तीर ताक्त कन वान रम ताकि ! কেবল নারাজ তিনি আপনি না বাজি।। এই মন্ড রসাজাধ কথার কথার। নির্বাহের আকিঞ্নে গমন তথায় ৷৷ বড়ব বড়ই গুণ তার জন্য কয়। (छांगे लारिक हरण (यर्ड अञ्चोकांत इत्र।)



महाबाका निर्वाद नकीवरष्ठ अवारका सम्मन

शंभरत छेखा देनरा वार्ष को नाइन । कुक्ररकरें युर्क रचन गरिन कुक्रमन ।।

नकरमरु जुड़ानिक देश्स रहन भरन। ेशा ७ देमना जुन्छ (यम कटर्गक्र निषदन ॥ নদ নদী পার হয়ে কত দূর যান। প্রমর্থ আপন সেই ঐরাবত পান।। পূর্বের বেই ঐরাবত দেছেন খোঁনারে: (महे रखी (यन व्यक्ति ममूटज़ स्र भारत ।। প্রথমে দেখিয়া গজ হইয়া নিকল। वत्यात थाता त्यम ठ८क वर्ष कल ॥ কহিতে না পারে বাকা পশু করিবর ! সেইখানে ছিল এক বলক ভুধর।। थ्रम्य निकटि कह आति गावकारम । এই হস্তা খোনা রাজা পান কোন ছানে !! ঁ যতন করিয়া রাখে দিন প্রচাহয়। भिक्ल छि जिसे व्यक्ति अहेशादन दश्र।। নিস্রাহার পরিত্যাপ করিয়া বার্শ। शकक्षयं भारन आरह कर्ति नित्रीक्रम्।। এ কথা শুনিয়া অতি তঃখিত জন্তরে। क्षर्म पिर्देशन कर शक्तर भरत।। करीशुर्छ जात्त्राहर इन बुनवास । शमन भारतदान करहा शकताक ।। निकारश्य तामधानी यान करण फर्य। गशाजात मिल पूरु मिलत गमरन ॥

পাত্রমিত্র সকলেজে, হন, সাগুরান।" ।
রাজগৃচ মাজে সবে করেন পয়ান।।

নিৰ্দ্ধাহ রাজ। স্বৰাজ্যে প্রভ্যাগমন।

রা*ক্ষে*র উপনীত বা**জ্যের ভিতর**। লামাতা সহিত কন্যা হরিষ অন্তর।। আসিয়া দেখিয়া যায় কত শত জন। व नक युवक दक्ष जी भूक्षन।। সদেশে আসিয়ে রাজা উলাস অম্বরে। দরিক্ত **ছিলেরে ধ**ন বিভরণ করে।। जक्षनि शृतिका त्रिप्न तन करु मान L কত্পভক্ষ হইলেন কর্নের সমান।। দধি ছব্ব স্থত সধু প্রচুর করিয়া ৷ . অবিরত বিভারণ ডাকিয়া ডাকিয়া।। দিম দশলক লোক করান ভোজন। ক্রমাগত এই মত**্তে করে গণন**া। विकामका कि इति भटत कर्न चत्रांचा श्रम क्या इरेडाट्ट मन ॥ পুৰুৰ্ধু পুৰু আৰু পৌৰা এগোপাল। गरक गाँउ त्रिकारत खन मही भागा।

নির্বাহ রাজন কন সকলি ভোমার। কিছু দিন আর রন মানগ আমার।। বিক্রনকেশরী কন ব্যাই নহাশয়। অধিক বিলম্ব করা উচিত না হয়।। পর্বাপর এপ্রকার রাজার বাভার। ব্রাক্সাখনা শ্রুতমাত্র করে অধিকার।। ना कानि कि शोनस्यान श्रेरवक स्थाप । भ**न्हारल जमा**श्चा हरव गश्चितारत (मरम ।। कथा श्रमित्रा तानी हहेना श्रस्कान । ছিনভক় যেন হেন ভূমেতে বুটান।। गांखुना कतिया क्ने निकाह अभिन। চিন্তা ভাজি চল্লকলা স্থির কর মন।। निमाय क्रम्बर परन स्टम स्त्रांच्छा কন্যা পুত্র যাভারাত পূর্বাপর রীত 🕕 रेववाहिरक कालाकृति अखन मम्म । . विश्वाद विश्वादम कथा वियामिल मन।। ব্দাদাত। ক্ষার দোঁতে করিয়া বিদার। ৰেদিত হইয়া রাণী কাম্পে উভরার।। রা**জপু**রী স্থন্ধা কেনে ব্যাকুলিভ হয়। সকলে অন্তথী স্থা কেহ মাত্ৰ নয়।। ব্দরত দেন কত আলমারি ভরি <u>।</u> হীরা চুণি মতি পালা রাশীরত করি।।

তিনুম্থী কমলিনী স্থাংশুবদনী।

চতুরা নয়নতারা সনা হতে নিদি ।

চারিজনা সেই সথা চলিলেন সনে।

দাস দাসী আর যত কেনা কত গণে।।

রাজা রাণী করিবেনে রথেতে গমন।

প্রামা করার পূর্কে হন আরোহণ।।

আনন্দে গমন রাজা লয়ে দাস দাসী।

ভাপনার রাজ্য মধ্যে উপনীত আসি।।

वाका विकामक्रमची ऋबादका शक्तन।

সরাজ্যে গমন রাজা মহা মহোৎ গব।
দেখিবারে চল্ল-ভ্লাক্ত নক্ষা ক্রছা সূর।।
তাকাতরে ধন দেন ভাণ্ডার ভাণ্ডার।
বিতরণ কত ধন সংখ্যা নাহি তার।।
সর্বাহ্মধে সুখী রাজা আনন্দে মোহিত।
সর্বাহ্মণ সদালাপ পণ্ডিত সহিত।।
কুক বিন মহারাজা আছেন শম্প্রেন।
চিজ্ঞানী কন সহাস্য বদনে।।
বহুমার পিতা যিনি নির্বাহ রাজন।
লেরেছেন আপনাকে করিয়া বতন।।

े जा जन जनत्म करम त्रार्थन मनान। আবাহন কর ভাঁরে তবে থাকে মান।। যত্ন করি লিপি দেহ বিলয় না হয়। वामिन का**रे**टनम वारि म**रा**णसा। আমার বুজিতে এই যুক্তি সিজ হয়। কুটুন্থিতা ঐহিকের পারত্রিক নয়।। সক্ষাই দেওয়া লওর' গভাষাত হয়। তাহা হৈলে কুটুৰিভা বড় স্কুখোদয়।: এক এক শ্রেরী থাকে কুটুয় বালর। क्र्रेट्यत लाक अरम नाक जूल तम ।। রাজাকন মহারাণী ভোমারে সুধাই। रक्तमत्त जुलिस्व माक मात्र नीक नाहे।। মন্ত্রিরে ডাকিছে রাজা দেন অনুস্তি। ভাটেরে প্রামান মান্তলতি নাম্বারে ভাট ভূপে নিরেদিয়া করেন আশীয়। করিলেন যোড়া শাল ভাটেরে বব্দিন।। हाका तारी याइवात करतन मनन। व्रष् वृषी भवाष्ट्रिक चार्य व्यर्गनन ॥ वाक्न हेशक क्षिट्ट स्टब्स व्याटकाहून । श्विष्म ख्रेमाकाटल करतन भ्रम्म ॥

মহারাজা নির্বাহ মহারাণী সহ মহারাজ বিক্রম-কেশরী রাজ্যে গ্রান।

करम कंदम मर एमम क्ति व्यवस्थि। विक्रमरकेमती तारका इरलम थात्म ॥ ममाठात निम हुऊ वानिता नवत। ভূপতি শুনিয়া অত্যে হন অগ্রসর।। সমাদরে লইলেন বাটার ভিতরে। রাজারে বসান রাজা আপনার ঘরে।। রাজ্যর যতনে রাজা থাকি এক মান। যাইতে বাসনা হয় আপনার বাস । व्ययस्य विनम्र वाका अधिया वाकाम । ताका नागी कुरे करन रतान विमान ॥ আপনার রাজ্যে আসি কিছু দিন পরে। নির্বাহের পুজ হয় জনকের বরে।। "নিবিনে করেন রাজ্য ধর্মপথে থেকে। नर्वकः थ प्रदेश राज शूलमूर्य (मृद्य ।।

क्षान्य । इत्रिक्तीय अर्थवाडां।

/# CO

विषात्र कवित्रा तांको निकार तांकन।

কিছু দিন পরে ডাকি পাত্র মিত্রগণ। कटहन योगना योहा शुन गर्काकन ॥ ্প্রসংথ করিব রাজা মনন আমার। কহিছেন পাত মিত্র এই যুক্তি শার।। পানি শুরু পুরোহিত পরীমর্শ করি । क्षमर्थं करतन आक्षा विक्रमरकम्त्री॥ রাজ্যধন পরিজন সকলি অনিত্য। একান্ত চিন্তেতে চিন্ত প্ৰসাৰ্থ নিত্য।। উপাসনা বন্ধতন্ত্র জানি দীপ্রমান্। রাঙ্গা রাণী তপস্থায় অর্নের প্রান।। किছ पिन बाका कवि बाकाव नमन । किरगालान जिल्ला उत्पर्व यथन।। এমধ বদিয়াছেন পূকার আসনে ৮ व्यक्तन्त्रां: रेमववांना खड़ान व्यवदन्न ॥ মহামার। আদ্যা যিনি অনাথের ধন। इशामधी कृषा क्रि देनवदानी कन।। शूखं करेण ছिला वाष्ट्रा शक्कर्य क्रजन। नारभरक मानव (मरु स्रग्नरह थात्रण ।। পুরুষ্ণর অভিশাপে মর্ভো আগমন। विजय नाहिक टेहल भाभ विषयां हम।। कान भून इतन कान जुद्रनि व्यानित ।

দৈববাণী প্রমণর হইয়া জ্ঞাবণ।
বিষয় বিষম চিন্তা সমনি বর্জন।।
পাত্র করে কুমারেরের করি সমর্পণ।
গামন জাহ্রবীভটে নিমাধি করেণ।।
রাজ্য সঁপি জ্ঞানোপালে প্রমার্থে মন।
ভরক্ষিণী প্রমণর স্বর্গ জারোহণ।।

अष् भगाखः।